उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

स्नातक पाठ्यक्रम

(समाज विज्ञान विद्याशाखा)

विश्वविद्यालय परिसर

शान्तिपुरम् (सेक्टर–एफ), फाफामऊ,
इलाहाबाद – 211 013, उ.प्र.
www.uprtouallahabad.org.in

पाठ्यक्रम प्रकाशन समिति

डॉ. एच. सी. जायसवाल	(वरिष्ठ परामर्शदाता)	- संयोजक
श्री अच्छेलाल	(प्रवक्ता - संस्कृत)	- सदस्य
डॉ. ज्ञान प्रकाश यादव	(प्रवक्ता - प्रबन्ध शास्त्र)	- सदस्य
डॉ. राम प्रवेश राय	(प्रवक्ता - पत्रकारिता एवं जनसंचार)	- सदस्य
डॉ. दीपशिखा	(परामर्शदाता - राजनीतिशास्त्र)	- सदस्य
डॉ. स्मिता अग्रवाल	(परामर्शदाता - संस्कृत)	- सदस्य
श्री राजित राम यादव	(प्रवक्ता - कम्प्यूटर विज्ञान)	- सदस्य
श्री जितेन्द्र यादव	(परामर्शदाता - दर्शनशास्त्र)	- सदस्य

प्रस्तुति :

डॉ. उपेन्द्र कनौजिया	(प्रवक्ता - इतिहास)

स्नातक पाठ्यक्रम
समाज विज्ञान विद्याशाखा

वर्तमान समय में समाज विज्ञान विद्याशाखा के अन्तर्गत जो स्नातक पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं वे निम्नवत हैं।

1- यू0जी0एस0वाई0 (समाज शास्त्र)

2- यू0जी0एच0वाई0 (इतिहास)

3- यू0जी0पी0एस0 (राजनीतिशास्त्र)

4- यू0जी0पी0ए0 (लोक प्रशासन)

5- यू0जी0टी0एस0 (पर्यटन)

डॉ0 (एम0 एन0 सिंह)
समाज विज्ञान विद्याशाखा
उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मु0वि0वि0
इलाहाबाद

विषय सूची

कार्यक्रम		पृष्ठ संख्या
1- यू0जी0एस0वाई0 (समाज शास्त्र)	-	1 - 32
2- यू0जी0एच0वाई0 (इतिहास)	-	33 - 83
3- यू0जी0पी0एस0 (राजनीतिशास्त्र)	-	84 – 137
4- यू0जी0पी0ए0 (लोक प्रशासन)	-	138 - 169
5- यू0जी0टी0एस0 (पर्यटन)	-	170 - 198

UGSY-01

समाजशास्त्र की प्रकृति और उसका क्षेत्र

समाजशास्त्र के विभिन्न पहलू, सामाजिक समूह, सामाजिक समूहों के प्रकार, समाजशास्त्र के मुख्य विषय, संस्कृति की संकल्पना, समाजशास्त्र और विज्ञान, समाजशास्त्र के संस्थापक : कुछ का परिचय, अगॅस्ट कॉम्ट, इमाइल दर्खाइम, मैक्स वेबर, कार्ल मार्क्स, हरबर्ट स्पेंसर, समाजशास्त्र तथा अन्य सामाजिक विज्ञान, सामाजिक मनोविज्ञान और समाजशास्त्र, समाजशास्त्र और नृविज्ञान, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र, मूल तथा अनुप्रयुक्त समाजशास्त्र।

समाजशास्त्र की मूल संकल्पनाएँ

मूल समाजशास्त्रीय संकल्पनाएँ, समाज की संकल्पना, समाज के प्रकार, सामाजिक समूह, प्राथमिक समूह, गौण समूह, प्रस्थिति एवं भूमिका, प्रस्थिति के प्रकार, बहुविध परिस्थितियाँ, भूमिका की संकल्पना, सामाजिक संस्था, संस्कृति, संस्कृति एवं मानव व्यवहार, लोकरीतियाँ, लोकाचार, मूल्य, उप-संस्कृतियाँ, सामाजिक परिवर्तन, परिवर्तन के कारक तथा दर, सामाजिक नियंत्रण, समाजशास्त्रीय पद्धतियाँ।

सरल समाज

सरल समाजों में अर्थव्यवस्था, आखेट और संग्रहण (Hunting and Gathering), पशुचारण (Pastoral) झूम कृषि (Shifting Cultivation) स्थायी कृषि (Settled Cultivation) सरल समाजों में विनिमय प्रणाली, दो उदाहरण, बाज़ार, सरल समाजों में सामाजिक संगठन, नातेदारी (Kinshin) वंशक्रम (Descent) विवाह, धर्म, धर्म और जादू, राज्यतंत्र, राजनीतिक व्यवस्था के प्रकार-मुखिया वाली (Cephalous) मुखिया रहित (Acepehalous) सरल समाजों पर औपनिवेशिक प्रभाव, पारंपरिक उत्पादों की आपूर्ति (Traditional Products Supply) नई फसलों का प्रचलन औद्योगिक मजदूर,

उपनिवेशवाद की समस्याएँ।

जटिल समाज

जटिल समाज की परिभाषा, ग्रामीण और शहरी समुदायों में विभाजन, सामुदायिक जीवन के पहलू, शहरीकरण के प्रकार, आधुनिक समाज, जटिल समाज में काम-धंधा, काम-धंधों की संरचनाएँ, उद्योग में संघर्ष, महिलाएँ और रोजगार, उत्तर औद्योगिक (post-industrial) समाज, अन्य अभिलक्षण, कुछ प्रवृत्तियाँ।

परिवार

परिवार की परिभाषा, परिवार के रूपों में भिन्नता, परिवार का लोकव्यापी स्वरूप, परिवार का जैविकीय आधार, सामूहिक आवास और नामावली, परिवार के प्रकार्य, औद्योगिक समाज में परिवार की भूमिका, परिवार का महत्व, औद्योगिक परिवार।

विवाह

विवाह संस्था, विवाह के रूप, एकल विवाह प्रथा, बहु विवाह प्रथा, सजातीय विवाह और गोत्र से बाहर विवाह के नियम, साथी का चयन, अधिमान्य विवाह, विवाह-व्यवस्था, जनजातियों में जीवन साथी का चयन, विवाह प्रथा में परिवर्तन, विवाह के रूपों में परिवर्तन, जीवन साथी के चयन में परिवर्तन, विवाह के समय आयु में परिवर्तन, विवाह के रीति-रिवाजों में परिवर्तन, विवाह के लक्ष्यों में परिवर्तन और वैवाहिक स्थिरता।

नातेदारी

नातेदारी का महत्व, नातेदारी के मूल तत्व, वंशक्रम (descent) के प्रकार, वंशक्रम समूहों के विभिन्न प्रकार्य विरासत के नियम, आवासीय नियम, पितृसत्ता तंत्र (patriarchy) तथा मातृसत्ता तंत्र (matriarchy) वंशक्रम पद्धति पर अधिक जानकारी, पितृवंश परंपराक्रम (patrilineal descent) मातृवंश परंपराक्रम (matrilineal descent) केरल की नायर जाति-एक उदाहरण

मातृवंश परंपरा पालन करने वाले अन्य समाज। भारत में नातेदारी।

समाजीकरण की प्रकृति

समाजीकरण क्या है?, समान अर्थ और मूल्य, शिक्षा और समाजीकरण, समाजीकरण : प्रतिमान (Norms) और मूल्य (Values) ज्ञान का प्रसार अनुरूपता, चेतन और अचेतन समाजीकरण, स्पष्ट और अस्पष्ट दिखाएँ, व्यवहार पद्धतियाँ, भूमिका और समाजीकरण मुख्य और गौण समाजीकरण बालकों तथा वयस्कों का समाजीकरण, पुनर्समाजीकरण, वैवाहिक पुनर्समाजीकरण, मनोवृत्तियों में परिवर्तन, व्यापक और गहन समाजीकरण, प्रत्याशी समाजीकरण (Anticipatory Socialisation)।

समाजीकरण के अभिकरण

समाजीकरण के अभिकरण, विकास का बढ़ना, धर्म और समाजीकरण, समाजीकरण में अंतर, जाति का प्रभाव, जनजातियों में समाजीकरण, अन्य संस्थाएँ, घोतुल, परिवार, सामाजिक वर्ग और समाजीकरण, व्यवहार और परिवार, समाजीकरण और संचार,स्कूल और समाजीकरण, स्त्री-पुरुषों की भूमिका, लिंग संबंधी अध्ययन, यौन संबंधी भेदभाव, संचार माध्यम और समाजीकरण, जनसंचार माध्यमों में संदेश, दूरदर्शन का प्रभाव।

शिक्षा की प्रक्रियाएँ

शिक्षा से अभिप्राय, जीवन भर सीखने की प्रक्रिया और शिक्षा, औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा, भारत में शिक्षा प्रणाली के विकास का इतिहास, शिक्षा और असमानता, शिक्षा का विस्तार, शिक्षा के संबंध में अध्ययन, स्त्री शिक्षा, स्कूली शिक्षा और साक्षरता, निरक्षरता का प्रश्न, शिक्षा और रोजगार।

शिक्षा संस्थाएँ

शिक्षा और असमानता, प्राथमिक विद्यालय, निजी विद्यालय (प्राइवेट स्कूल) शिक्षण व्यवसाय, अध्यापकों के बारे में अध्ययन, शिक्षा और

अध्यापक, शिक्षा और अध्यापक, स्कूल में उपलब्धि, पाठ्य पुस्तकें लिखना, शिक्षा के भेदभाव, विभिन्न पाठ्यक्रमों के विषय, विज्ञान और लिंग, अनुसूचित जातियाँ, और जनजातियाँ, शिक्षा और स्वैच्छिक संगठन।

अर्थव्यवस्था तथा प्रौद्योगिकी

अर्थव्यवस्था तथा प्रौद्योगिकी का संबंध, अर्थव्यवस्था की परिभाषा, प्रौद्योगिकी की परिभाषा, अर्थव्यवस्था और समाज, पूर्व-आधुनिक समाजों में प्रौद्योगिकी का विकास, सरल समाजों में प्रौद्योगिकी, पशु-पालन समाजों में प्रौद्योगिकी, खेतिहर समाजों में प्रौद्योगिकी, कृषि उत्पादनों में अतिरेक (surplus) नई सामाजिक संस्थाओं का प्रादुर्भाव, श्रम विभाजन, शहरों का विकास, आधुनिक समाज में प्रौद्योगिकी का विकास, औद्योगिक क्रांति, विकास के नमूने, प्रौद्योगिक विकास के सामाजिक पहलू, औद्योगिक निगम, कार्ल मार्क्स एवं मैक्स वेबर की धारणाएँ (theses) सम्पन्न मजदूरों का उभरना, आधुनिक युग के मजदूरों का अन्यताभाव या परकीकरण (alienation) आधुनिक प्रौद्योगिकी और काम-काज में संबंध, मशीनें और उत्पादन, रोजगार पैदा करना, प्रौद्योगिकी और संघीकरण।

उत्पादन प्रक्रियाएँ

आर्थिक संगठन, उत्पादन तथा सामाजिक कारक, भूमि अधिकारों का पक्ष, उत्पादन का सामाजिक पक्ष, सेवाएँ और उत्पादन, महिलाएँ और उत्पादन, प्रौद्योगिकी तथा उत्पादन, कार्ल मार्क्स का दृष्टिकोण, उत्पादन की भौतिक शक्तियाँ, आर्थिक संरचना, मैक्स वेबर का दृष्टिकोण, यूरोप में पूँजीवाद, विचार और मूल्य, एमाइल दुर्खाइम का दृष्टिकोण, पुनर्विचार।

वितरण प्रक्रियाएँ

वितरण, विभिन्न विनिमय पद्धतियाँ, पारम्परिक आदान-प्रदान, वस्तु-मूल्य, पुनवितरण पर आधारित विनिमय, पॉटलैच समारोह, बाजार विनिमय, बाजार विनिमय की विशेषताएँ, बैंक और विज्ञापन सेवाएँ।

उपभोग का स्वरूप

कुछ बुनियादी प्रश्न, उपभोग की प्रकृति उपभोग का उत्पादन के साथ संबंध, उपभोग का सामाजिक पक्ष, अवधारणाओं की परिभाषा, उपभोग का क्षेत्र, उपभोग का स्तर, पूर्व-औद्योगिक-समाज में उपभोग का स्वरूप, उपभोग के सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष, खाद्यान्न-उत्पादन और उपभोग में ऋतु के अनुसार रूपांतर औद्योगिक समाजों में उपभोग, औद्योगिक समाजों में उपभोग को प्रभावित करने वाले कारक।

राज्यविहीन समाज

राजनीति और राजनीतिक संगठन, राजनीतिक संगठन और राज्यविहीन समाज, राज्यविहीन समाजों से संबंधित सामग्री-स्त्रोत, राज्यविहीन समाजों के प्रकार, राजनीतिक नियंत्रण का आधार : नातेदारी की व्यवस्था, राज्यविहीन समाज के राजनीतिक सिद्धान्त, टोंगा समुदाय का उदाहरण, लोजी समुदाय का उदाहरण, भारत में राज्यविहीन जनजातियाँ, भारतीय जनजातियों में राजनीतिक संगठन वंश परंपरा की व्यवस्था, संघर्ष को नियंत्रित करना, अपराध और दंड राजनीतिक संस्थाएँ, और समाज का विकास, समाज में सरल प्रकार की सरकार का उदय, सरल समाजों में धर्म का राजनीतिक पक्ष।

परंपरागत समाजों में राज्य की संकल्पना

राजनीतिक व्यवस्थाओं के रूप में परंपरागत समाज, राजनीतिक सत्ता की प्रकृति और क्षेत्र, केन्द्रीय सत्ता, राजनीतिक सत्ता का क्षेत्र, आनुवांशिक सत्ता, सत्ता का प्रत्यायोजन (delegation) और वितरण शक्ति के संतुलन के रूप में सत्ता का प्रत्यायोजन, राजनीतिक सत्ता की वैधता का आधार। प्रारंभिक राज्यों में वैधता, विजित या अधीनस्थ, राज्यों में वैधता, मिथकों से प्राप्त वैधता, लोगों द्वारा सत्ता को स्वीकारने के आधार, सत्ता के दुरूपयोग को रोकने वाली संस्थाएँ।

आधुनिक समाज

आधुनिक समाज, आधुनिक समाज में राजनीतिक प्रणाली, राजनीतिक

प्रणाली के तत्व, विचारधारा, संरचना और अल्पतंत्र, राजनीतिक प्रणाली के कार्य, राजनीतिक समाजीकरण और भर्ती, हित अभिव्यक्ति, संस्थागत लाभकारी समूह, संगठनात्मक लाभकारी समूह, असंगठनात्मक लाभकारी समूह, अनियमित लाभकारी समूह, हित संघनन, राजनीतिक संचार, सरकारी कार्य, राजनीतिक प्रक्रियाएँ, वैधता का आधार, पारंपरिक और प्राधिकार, विधि पूर्ण-तर्क संगत प्राधिकार, आधुनिक राजनीतिक प्रणाली की वैधता।

राज्य तथा अन्य संस्थाएँ

राज्य, जनसंख्या, क्षेत्र, सरकार, प्रभुसत्ता, राज्य और सरकार, राज्य और समाज, राज्य और अन्य संघ, राज्य और राष्ट्र, राजनीतिक व्यवस्था में संस्थाएँ, सरकारी संगठन, विधानपालिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, नौकरशाही, गैर-सरकारी संगठन, राजनीतिक दल, हितबद्ध समूह, प्रेस, व्यक्ति और राज्य, लोकतंत्र और व्यक्ति।

धार्मिक विश्वास और प्रथाएँ

धर्मः सामाजिक संगठन का एक भाग, धर्म और समाज, धर्म और आस्था, आस्था और धार्मिक जीवन के बीच संबंध, धर्म के विभिन्न सांस्कृतिक रूप, धर्म का सरल रूप, धर्म के रूपों के बारे में विभिन्न प्रकार के स्पष्टीकरण, धर्म का जटिल रूप, बौद्धमत का जटिल रूप, बौद्धमत का उदाहरण, धर्म का मिश्रित रूप, हिन्दू धर्म और जाति प्रथा, धर्म, कर्म और मोक्ष की धारणाएँ, धर्म और सामाजिक परिवर्तन, सरल से जटिल रूप, जटिल से सरल रूप, अनेक रूपों का मिश्रण, संप्रदाय तथा उपासना, धर्म परिवर्तन।

संस्कृति-I

संस्कृति की विशेषताएँ, संस्कृति की भूमिका, संस्कृति के अभिलषण, संस्कृति और मानव स्वभाव, मनुष्य और दूसरे प्राणी, मानव की अनन्यता (uniqueness) संस्कृति और जीव-विज्ञान, संस्कृति और भूख मिटाने के तरीके निषिद्ध भोजन और अनुष्ठान, यौन तृष्टि का स्वरूप, स्वस्थ्य और बीमारी के संदर्भ में संस्कृति की भूमिका, संस्कृति और यौन भूमिकाएँ, संस्कृति और प्रजाति (नस्ल)।

संस्कृति- II

संस्कृति और पर्यावरण, संस्कृति और समाज, संस्कृति और भाषा, संस्कृति की संरचना, संस्कृति के नमूने (पैटर्न) सांस्कृतिक विशेषताएँ तथा सांस्कृतिक समूह, सांस्कृतिक प्रतीक सांस्कृतिक लोकाचार, सांस्कृतिक क्षेत्र, संस्कृति के मुख्य घटक, सांस्कृतिक विविधता, भारत में सांस्कृतिक विविधता, सांस्कृतिक विविधता, सांस्कृतिक विविधता एवं मानव-जाति की एकता, भारत में सांस्कृतिक विविधता, सांस्कृतिक विविधता एवं मानव-जाति की एकता, सांस्कृतिक अनुकूलन, भारत में पवित्रता एवं अपवित्रता, सांस्कृतिक सापेक्षवाद, सांस्कृतिक परिवर्तन, सांस्कृतिक संक्रमण एवं प्रसारण, कागज बनाने की तकनीक का प्रसारण, लिपि की कहानी, भाषा का प्रसारण।

मूल्य

समाज विज्ञानों में मूल्य, मूल्यों की परिभाषा, मूल्यों की प्रकृति मूल्यों और प्रतिमानों के बीच अंतर, व्यक्तित्व और समाज-सांस्कृतिक पद्धतियों के संदर्भ में मूल्यों की भूमिका, मनुष्य : मूल्यों के निर्माता और पालक के रूप में, मूल्यों का अनुक्रम, मूल्य : संस्कृति व व्यक्तित्व का केन्द्र, मूल्य और पर्यावरण, भारतीय समाज में मूल्यों की पद्धतियों में परिवर्तन, वैदिक-कालीन मूल्य, उत्तर – वैदिक कालीन मूल्य, बौद्धकालीन मूल्य, मनुस्मृति, इस्लामकालीन मूल्य, आधुनिक मूल्य पद्धति।

प्रतिमान

सामाजिक प्रतिमानों का स्वरूप, सामाजिक प्रतिमानों का बदलता रूप, गेसेलशाफ्ट तथा जेमिन शॉफ्ट प्रतिमान, प्रतिमानों का परस्पर विरोध, प्रतिमानों के विविध आयाम, लोकरीतियाँ, और लोकाचार से जुड़ी हुई अवधारणाएँ, प्रतिमानों के प्रकार, प्रतिमानों में एकीकरण एवं इन्द्र, विभिन्न संस्कृतियों में प्रतिमानों की विविधता, समाजीकरण और सामाजिक नियंत्रण में प्रतिमानों के प्रकार्य, विचलन या विपथगामिता, प्रतिमान हीनता (anomie)।

सामाजिक संरचना की संकल्पनाएँ

सामाजिक संरचना की संकल्पनाएँ, संरचनात्मक प्रकार्यवादी दृष्टिकोण, सामाजिक संरचना और सामाजिक संगठन, सामाजिक संरचना और सामाजिक संरचना और सामाजिक समूह, सामाजिक संरचना और सामाजिक भूमिकाओं की संकल्पना, संरचनावादी दृष्टिकोण, मार्क्सवादी दृष्टिकोण, सामाजिक संरचना और सामाजिक परिवर्तन, समाजों में सामाजिक भेद, विकास और क्रांति, सामाजिक संरचना और प्रतिमानहीनता।

सामाजिक भूमिकाएँ

भूमिका की अवधारणा, भूमिका : प्रस्थिति के गतिशील पहलू के रूप में, भूमिका की अवधारणा का परिष्कार, भूमिकाओं का वर्गीकरण, प्रदत्त तथा अर्जित भूमिकाएँ, गैर संबंधात्मक तथा संबंधात्मक भूमिकाएँ, मूल, सामान्य और स्वतंत्र भूमिकाएँ, भूमिका प्रणालियाँ : सरल और जटिल, सरल समाजों में भूमिकाएँ, जटिल समाजों में भूमिकाएँ, भूमिकाओं के आयाम,बहुविध भूमिकाएँ, एवं भूमिका प्रतिमान, भूमिका-चिह्न, भूमिकाओं में परिवर्तन, भूमिकाओं में टकराव और तनाव, भूमिका के सिद्धान्त का उपयोग।

सामाजिक तंत्र

परिभाषा, सामाजिक तंत्र के बनने और कार्य करने का तरीका, सामाजिक तंत्रों के प्रकार, व्यक्तिगत और समूह आधारित तंत्र, व्यक्तिगत तंत्र की विशेषताएँ, अहं-केन्द्रित व्यक्तिगत तंत्र, अहं-केन्द्रित और गैर-अहं-केन्द्रित व्यक्तिगत तंत्रों की परिभाषाएँ, अहं-केन्द्रित व्यक्तिगत तंत्र की व्याख्या में आने वाली समस्याएँ, व्यक्तिगत तंत्र और सामाजिक ढांचा, व्यक्तिगत तंत्र और औपचारिक संगठन, ''सम्पर्क सूत्र'' की धारणा, साधन तंत्र एवं साधन समूह।

सामाजिक प्रकार्य की संकल्पनाएँ

प्रकार्य की परिभाषा, प्रकार्य और सामूहिक भावना, अपराध का प्रकार्य, प्रकार्य सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, प्रकार्य की संकल्पना और जादू, प्रकार्यः जैविक परिप्रेक्ष्य, संरचना और कार्य, प्रकार्य : पद्धतिमूलक परिप्रेक्ष्य,

प्रकार्य : आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य, धार्मिक प्रकार्य और दुष्कार्य, व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य, प्रकार्यात्मक विश्लेषण के प्रयोग, प्रकार्यात्मक विश्लेषण की सीमाएँ।

सामाजिक स्तरण

सामाजिक स्तरण क्या है?, सामाजिक स्तरण के आधार या आयाम, सामाजिक स्तरण के प्रकार, आयु वर्ग व्यवस्था, दास व्यवस्था, भूमि के स्वामित्व पर आधारित व्यवस्था, जाति व्यवस्था, वर्ग व्यवस्था, नस्ल और नृजातियता, सामाजिक स्तरण के अध्ययन के लिए सैद्धान्तिक दृष्टिकोण, प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण, द्वन्द्वात्मक दृष्टिकोण।

सामाजिक नियंत्रण

अर्थ एवं प्रकृति, परिभाषाएँ, संबंधित संकल्पनाएँ, सामाजिक नियंत्रण के लक्ष्य, सामाजिक नियंत्रण के तरीके, अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण, औपचारिक सामाजिक नियंत्रण, सामाजिक नियंत्रण की क्रिया विधि (Mechanisms) साधन और परिणाम, सामाजिक नियंत्रण की क्रिया विधि के प्रकार, सामाजिक नियंत्रण के साधन, सामाजिक नियंत्रण के परिणाम, सामाजिक नियंत्रण पर सीमाएँ।

सामाजिक विचलन

विचलन का अर्थ एवं प्रकृति, विचलन को परिभाषित करने में कठिनाई, विचलन की परिभाषा में परिवर्तन, विचलन एवं विचलन की बुनियादी किस्में, तीन किस्म के विचलन, पाँच किस्म के विचलक, विचलन की व्याख्या, विचलन की जैविक व्याख्या, विचलन की मनोवैज्ञानिक व्याख्या, विचलन की समाजशास्त्रीय व्याख्या।

सामाजिक संघर्ष की प्रकृति

सामाजिक संघर्ष की समाजशास्त्रीय अवधारणा, आर्थिक नियतिवाद का दृष्टिकोण, सामाजिक संबंधों का दृष्टिकोण, सामाजिक संघर्ष के तत्व, सामाजिक संघर्ष के कार्य, संघर्ष के सकारात्मक परिणाम, संघर्ष की दुष्क्रियाएँ, सामाजिक संघर्ष की किस्मे, वर्ग संघर्ष, राजनीतिक संघर्ष, सांप्रदायिक/जातिय संघर्ष, गुट-संबंधी संघर्ष, सामाजिक परिवर्तन की एक शर्त के रूप में संघर्ष।

सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ तथा उसकी प्रकृति, सामाजिक परिवर्तन के तीन पहलू, कुछ सह धारणाएं, सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त, विकासवादी सिद्धान्त, चक्रीय सिद्धान्त, संरचनात्मक प्रकार्यात्मक सिद्धान्त द्वन्द्व का सिद्धान्त, सामाजिक परिवर्तन के घटक सामाजिक परिवर्तन के तीन मुख्य स्त्रोत, परिवर्तन की उत्पत्ति आंतरिक एवं बाहरी कारण, सामाजिक परिवर्तन के प्रति मान्यता तथा प्रतिरोध, परिवर्तन की दिशा एवं गति को प्रभावित करने वाले कुछ तथ्य, सामाजिक परिवर्तन के विश्लेषण की उपयोगिता।

सामाजिक विकास

सामाजिक विकास की प्रकृति और अर्थ, सामाजिक विकास से संबंधित प्रमुख धारणाएं, विकास के आधार पर तीन दुविधाएँ, विकास के सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम, सामाजिक विकास के विभिन्न तरीके, स्वतंत्रता के बाद भारत में विकास, समाजवादी रास्ता और मिश्रित अर्थव्यवस्था, कार्यक्षेत्र के आधार पर विकास, सामुदायिक विकास और सहकारिता आंदोलन, लक्ष्य-समूह नियोजन।

UGSY-02

एकता और विविधता

एकता और विविधता की अवधारणा, विविधता का अर्थ, एकता का अर्थ, भारत में विविधता के रूप, प्रजातीय विविधता, भाषायी विविधता,धार्मिक विविधता, जातिगत विविधता, भारत में एकता की कड़ी, भू-राजनीतिक एकता, तीर्थाटनों की संस्था, समायोजन की परंपरा, परस्पर निर्भरता की परंपरा।

ग्रामीण सामाजिक संरचना

ग्रामीण सामाजिक संरचना की प्रकृति, सामाजिक संरचना, भारत में ग्रामीण सामाजिक संरचना, परिवार एवं नातेदारी, ग्रामीण भारत में परिवार, परिवार में परिवर्तित, वंशपरंपरा और नातेदारी, जाति-समूह, जाति, उप-जाति, जाति-व्यवस्था में परिवर्तन, कृषि आधारित वर्ग संरचना, गांव, ग्रामीण स्वायत्तता का मुद्दा, यजमानी व्यवस्था, ग्राम स्तर पर शक्ति संरचना और नेतृत्व में परिवर्तन।

गाँव और बाहरी दुनिया

गांव और वृहत्तर आर्थिक व्यवस्था, प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व आर्थिक अंतः-निर्भरता, आधुनिक समय में आर्थिक अंतःक्रिया, गाँव और जाति एवं नातेदारी की वृहत्तर व्यवस्था,गाँवों के अध्ययनों से कुछ उदारण, अंतःजाति संबंधों का स्थानिक विस्तार, गाँव और वृहत्तर धार्मिक व्यवस्था, सार्विकीकरण, स्थानीयकरण, वृहत्त् परंपरा और छोटी लघु परंपरा के बीच अंतः क्रिया के कुछ और उदाहरण, गाँव एवं विस्तृत राजनीतिक व्यवस्था, ब्रिटिश पूर्व भारत में गाँव, ब्रिटिश कालीन भारत में गाँव, समकालीन भारत में गाँव।

शहरीकरण के विन्यास

शहकीरण : परिभाषा, भारत में शहरीकरण : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, पारंपरिक नगरों का वर्गीकरण, प्राचीन और मध्यकालीन भारत में शहरीकरण, की कुछ विशेषताएं, प्रारंभिक औपनिवेशिक अवधि में

शहरीकरण की नई विशेषताएँ, समकालीन भारत में शहरीकरण की पद्धति, नगर या शहर की परिभाषा, जनसांख्यिकीय पहलू, स्थानिक पहलू, आर्थिक पहलू, सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू, शहकीरण की वर्तमान प्रक्रिया से जुड़ी समस्याएँ, ग्रामीण क्षेत्रों में शहरीकरण का प्रभाव।

शहरी सामाजिक संरचना

शहरी मानसिक संरचना का अर्थ और परिभाषा, शहरी जीवन की मुख्य विशेषताएँ, मानव संबंधों की औपचारिकता और निर्वैयक्तिकता, तर्कसंगति, धर्म निरपेक्षता, विशेषज्ञता में वृद्धि श्रम विभाजन, परिवार के प्रकार्यों में ह्रास, भारतीय शहरी समुदायों के संगठनात्मक और सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू, भारत के शहरों में परिवार, विवाह और नातेदारी, जाति व्यवस्था, शहरी राजनीति, शहरी सामाजिक मुद्दे।

परिवार और उसके प्रकार

परिवार : एक संस्था, परिवार के प्रकार, नाभिक या केन्द्रक या मूल और संयुक्त परिवार व्यवस्थाओं की अटूट परम्परा, हिन्दू संयुक्त परिवार, भारत में संयुक्त परिवार का स्वरूप, संयुक्तता क्या है?, संयुक्त परिवार किन लोगों से बनता है? संयुक्त परिवारगत जीवन में पाई जाने वाली भिन्नताएँ और इस संस्था के प्रचलन की व्यापकता, परिवार चक्र, संयुक्त परिवारगत जीवनः एक आदर्श, संयुक्त परिवारगत जीवन के आदर्श की कुछ सामाजिक समूहों के लिए अनुपयोगिता, परिवार में परिवर्तन, संयुक्त परिवार में परिवर्तन और विघटन की प्रक्रिया के कारण, परिवर्तन संबंधी कारण जो संयुक्त परिवार को सुदृढ़ बनाते हैं, पारिवारिक जीवन शैली का उभरता हुआ ढांचा।

विवाह और उसके बदलते विन्यास

भारत में विवाह की व्यापकता, भारत में विवाह के समय आयु, विवाह के समय कम आयु, विवाह के समय आयु में वृद्धि, विवार के प्रकार, एकल विवाह और बहुविवाह, प्रचलित स्वरूप, पति/पत्नी को चुनने की पद्धतियाँ, अंतर्विवाह (Endogamy) तथा अनुलोम विवाह नियम,

बहिर्विवाह, तय किए गए विवाह, आधुनिक प्रवृतियाँ, विवाह की रस्में, विभिन्न समुदायों में प्रचलित विवाह की बुनियादी रस्में, नाममात्र की रस्मों के साथ विवाह, विवाह के साथ सम्पत्ति तथा प्रतिष्ठा का अंतरण, वधू-मूल्य, दहेज, तलाक और विधवा पुनर्विवाह।

नातेदारी-।

नातेदारी की परिभाषा, भारत में नातेदारी, के अध्ययन-संबंधी प्रमुख दृष्टिकोण, प्राचीन ग्रंथों पर आधारित दृष्टिकोण, नृशास्त्रीय दृष्टिकोण : वंशक्रम और विवाह संबंध से उत्पन्न रिश्तेदारी, नातेदारी के आयाम, उत्तर भारत में नातेदारी, नातेदारी समूह, नातेदारी संबंधी शब्दावली, विवाह नियम, नातेदारी के बीच उपहारों का औपचारिक आदान-प्रदान।

नातेदारी-।।

दक्षिण भारत में नातेदारी, नातेदारी समूह, नातेदारी शब्दावली, विवाह नियम, नातेदारों के बीच उपहारों का औपचारिक आदान-प्रदान, उत्तर और दक्षिण भारतीय नातेदारी व्यवस्था की तुलना, असमानताएं, समानताएं, उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम भारत में मातृवंशीय समुदायों में नातेदारी संगठन, मातृवंश परंपरा की व्यवस्था, उत्तर-पूर्व भारत के मातृवंश परंपरा वाले समूह, दक्षिण-पश्चिम भारत के मातृवंशी परंपरा वाले समूह।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ, परंपरागत ग्रामीण अर्थव्यवस्था, प्राचीन काल, मध्य काल, औपनिवेशिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था, औद्योगीकरण में कमी करना, नयी-भू-राजस्व नीति, कृषि का व्यापारीकरण, जजमानी व्यवस्था, स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण अर्थव्यवस्था, भूमि सुधार, हरित क्रान्ति, ग्राम विकास कार्यक्रम।

शहरीकरण अर्थव्यवस्था

शहरी अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ, परंपरागत शहरी अर्थव्यवस्था, प्राचीन काल, मध्य काल, उपनिवेशिक शहरी अर्थव्यवस्था, शहरी

हस्तकला का विनाश, आधुनिक उद्योगों का विकास, नवीन सामाजिक वर्ग स्वतंत्रता के पश्चात् शहरी अर्थव्यवस्था, औद्योगिक नीति और उसका प्रभाव, संगठित और असंगठित क्षेत्र, सामाजिक वर्ग, जाति और व्यवसाय।

ग़रीबी : ग्रामीण और शहरी

ग़रीब की अवधारणा तथा उसके प्रति दृष्टिकोण, ग़रीबी की अवधारणा, ग़रीबी के प्रति दृष्टिकोण, ऐतिहासिक आयाम, प्राचीन काल, मध्य काल, औपनिवेशिक काल, समकालीन भारत में ग़रीबी, ग्रामीण तथा शहरी ग़रीब ग्रामीण और शहरी ग़रीबी का विस्तार, शहरी और ग्रामीण ग़रीबी के बीच संबंध, ग़रीबी और पंचवर्षीय योजनाएं, विकासोन्मुखी दृष्टिकोण, सामाजिक न्याय के साथ विकास, ग़रीबी के कारण, आर्थिक और राजनीतिक पहलू, सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू, ग़रीबी उन्मूलन।

राष्ट्रीय राजनीति

राज़नीतिक प्रभाव-क्षेत्र, राजनीतिक प्रणाली क्या है?, शक्ति की अवधारणा, राज्य, राष्ट्र और समाज, भारतीय राष्ट्रीय राज्य का उदय, सन् 1858 से पूर्व राष्ट्र की अवधारणा का अभाव, भारत में राष्ट्रीयता का विकास, स्वतंत्र भारत में राजनीति का स्वरूप, राजनीतिक स्तर पर कार्यनीति आर्थिक स्तर पर कार्यनीति, राष्ट्र निर्माण के प्रयासों को चुनौती देने वाली शक्तियाँ, राष्ट्रीय एकीकरण।

क्षेत्रीय एवं प्रादेशिक राजनीति

क्षेत्र, क्षेत्रीयतावाद और प्रदेश, क्षेत्र, क्षेत्र की आवश्यकता और भारतीय राजनीती, क्षेत्रीयतावाद, प्रदेश, भारतीय राजनीति में क्षेत्रीयतावाद, क्षेत्रीय और प्रदेशीय राजनीति के आधार भौगोलिक आधार, ऐतिहासिक और सामाजिक आधार, आर्थिक आधार, राजनीतिक-प्रशासनिक आधार, प्रदेशीय और क्षेत्रीय राजनीति के स्वरूप, प्रदेश स्वायत्तता के लिए माँग, बहु-प्रदेश क्षेत्रीयतावाद अन्तर-प्रदेश क्षेत्रीयतावाद, अन्तः प्रदेश क्षेत्रीय राजनीति अथवा उप-क्षेत्रीयतावाद, राष्ट्रीय राजनीति के लिए क्षेत्रीयतावाद का महत्व।

हिन्दू सामाजिक संगठन

धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की संकल्पना कर्म और संसार, हिन्दू सामाजिक संरचना की प्रासंगिकता, भारत में हिन्दु समुदाय की रूपरेखा, हिन्दुओं में विवाह और परिवार, हिन्दू विवाह, हिन्दू विवाह के आठ रूप, अंतर्विवाह, बहिर्विवाह, हिन्दू परिवार, हिन्दू परिवार का स्वरूप, परिवार के सदस्यों में संबंध, वर्ण व्यवस्था, हिन्दुओं के चार वर्ण, जीवन के चार चरण, हिन्दुओं में जाति व्यवस्था, जाति परिषदें एवं जाति सभाएँ, विभिन्न जातियों की एक दूसरे पर निर्भरत, जजमानी व्यवस्था, त्यौहार और तीर्थस्थल, हिन्दुओं के त्यौहार, हिन्दुओं के तीर्थस्थल।

ईसाई सामाजिक संगठन

भारत में ईसाई धर्म का उद्‌भव, ईसाई धर्मः स्थानिक तथा जनसांख्यिकीय पक्ष, केरल तथा गोआ में ईसाई धर्म, पूर्व तथा उत्तर पूर्व में ईसाई धर्म, ईसाई धर्म के सिद्धान्त, ईसा मसीह का जीवन ईसाई धर्म में विश्वास के विभिन्न तत्व, सेंट थॉमस के ईसाई : ईसाई सामाजिक संगठन का एक उदाहरण, ईसाई परिवार, पितृस्थानिक निवास, पितृवंश परंपरा, उत्तराधिकार, गिरजाघर, ईसाई धर्म में पादरी, ईसाई गिरजाघर, क्रिसमस (बड़ा दिन) केरल, में ईसाई धर्म का हिन्दू धर्म में संबंध, पंचांग तथा काल, घरों का निर्माण, ईसाई धार्मिक समुदाय में जाति के तत्व।

सिक्ख सामाजिक संगठन

सिक्ख कौन हैं? सिक्ख धर्म का सैद्धान्तिक आधार, नानक ने सिक्ख धर्म की स्थापना किस प्रकार की, ईश्वर के प्रति नानक की अवधारणा, पवित्र धर्मग्रन्थ, सिक्ख धर्मग्रंथ की अद्वितीयता, ग्रंथ साहिब और गुरू, सिक्खों में धार्मिक आचारों की पुनर्संरंचना : खालसा पंथ और पांच निशान, सिक्ख संस्थाएँ, गुरुद्वारा, साथ संगत, गुरू का लंगर, सिक्खों की विश्व दृष्टि तथा आर्थिक दृष्टिकोण।

पारसी सामाजिक संगठन

भारत में पारसी समुदाय की रूपरेखा, उद्‌भव और भारत में अवस्थिति, जनसंख्या, सामाजिक-आर्थिक जीवन में भूमिका, पारसी धर्म के सिद्धान्त, सामाजिक संगठन के विभिन्न पहलू, शिक्षा-दीक्षा प्रारंभ और मृत्यु संबंधी धार्मिक अनुष्ठान, विवाह और परिवार, वंशानुक्रम और उत्तराधिकार, पारसी पंचायत, त्यौहार।

जाति संरचना एवं क्षेत्रीय विन्यास

जाति संरचना की परिभाषा, वर्ण एवं जाति, जाति व्यवस्था की विशेषताएँ, क्षेत्रीय भिन्नताओं के आयाम, जाति संरचना एवं नातेदारी, जाति संरचना एवं व्यवसाय, जाति संरचना एवं शक्ति।

जाति-निरंतरता एवं परिवर्तन

जाति एवं निरंतरता, जाति एवं सामाजिक गतिशीलता, जाति एवं धार्मिक आनुष्ठानिक क्षेत्र, जाति एवं आर्थिक क्षेत्र, जाति एवं राजनीति, जाति एवं परिवर्तन, बंद व्यवस्था से एक खुली व्यवस्था, आधुनिक राजनैतिक व्यवस्था में जाति, जाति सभाएँ, क्या कल के भारत में जातियों का अस्तित्व रह सकता है।

अनुसूचित जातियाँ

अनुसूचित जातियाँ, अनुसूचित जातियों में कौन-कौन हैं?, विशेषताएँ, असमर्थताएँ, वंचनाएं, स्वतंत्रता पूर्व के काल में सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक गतिशीलता, प्राचीन काल में सामाजिक गतिशीलता, मध्य काल में सामाजिक गतिशीलता, अंग्रेजी शासन के दौरान सामाजिक गतिशीलता, अंग्रेजी शासन के दौरान सामाजिक गतिशीलता, अंग्रेजी शासन का विभेदात्मक प्रभाव, संस्कृतिकर के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता, पश्चिमीकरण के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता, धर्म परिवर्तन के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता, अम्बेडकर एवं गाँधी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में अनुसूचित जातियाँ, संरक्षणात्मक भेदभाव की नीति, अनुलम्ब

सक्रियकरण, क्षैतिज सक्रियकरण, संस्कृतिकरण, शहरीकरण, वर्तमान स्थिति।

भारत में वर्ग

भारत में सामाजिक वर्ग, भारत में वर्ग गठन पर अंग्रेजी शासन का प्रभाव, कृषि में परिवर्तन, व्यापार तथा वाणिज्य, रेल तथा उद्योग का विकास, राज्य एवं प्रशासनिक व्यवस्था, सामाजिक वर्गों की असमान वृद्धि, ग्रामीण भारत में सामाजिक वर्ग, भूपति, कृषक स्वामी, खातेदार, खेतिहर मजदूर, कारीगर, शहरी भारत में सामाजिक वर्ग, वाणिज्यिक एवं औद्योगिक वर्ग, व्यावसायिक वर्ग, लघु व्यापारी, दुकानदार, तथा असंगठित मजदूर, श्रमिक वर्ग।

पिछड़े वर्ग

पिछड़े वर्ग की प्रकृति, पिछड़े वर्गों की परिभाषा, पिछड़े वर्गों की संरचना, अंग्रेजी शासन तथा पिछड़े वर्ग, पिछड़े वर्ग तथा भारतीय संविधान, पिछड़े वर्गों की सामाजिक पृष्ठभूमि, अनुसूचित जनजातियाँ, अनुसूचित जातियाँ, अन्य पिछड़े वर्ग, सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में पिछड़े वर्गों की प्रमुख विशेषताएँ एवं समस्याएँ, सामाजिक परिवर्तन का सन्दर्भ अनुसूचित जनजाति अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़े वर्ग।

जनजातियाँ : सामाजिक संरचना-।

सामाजिक संरचना, भारत में जनजातियाँ, प्राचीन एवं मध्य युग में, ब्रिटिश काल में, स्वतंत्र भारत में, जनजाति की अवधारणा को कुछ विद्वानों के मतों द्वारा समझना, भौगोलिक वितरण, प्रजातीय एवं भाषायी विशेषताएं, प्रजाति के तीन प्रमुख भाग, भाषायी, श्रेणियाँ, जनसांख्यिकीय विशेषताएँ, अन्य समूहों से पृथक्करण एवं अन्तः क्रिया आर्थिक व्यवसाय, खाद्य संग्रहणकर्ता एवं आखेटक, स्थानान्तरित (झूम) कृषक स्थायी कृषि, कारीगर (दस्तकार) पशुपालक लोक कलाकार, वेतनभोगी मज़दूर आधुनिक आर्थिक परिवर्तन।

जनजातियाँ : सामाजिक संरचना-।।

सामाजिक संरचना के आन्तरिक लक्षण, खाद्य वस्तुओं के संकलनकर्ता एवं शिकारीः चौलनाइकन, आवास, समूहीकरण, विवार एवं परिवार, साझेदारी, सत्ताः राजनैतिक एवं आनुष्ठानिक हाल में हुआ परिवर्तन मातृवंश परम्परा मानने वाले एवं स्थानातरित (झूम) कृषकः खासी, संक्षिप्त इतिहास एवं आवास, समूहीकरण, परिवार, नातेदारी एवं विवाह, विवाहोपरान्त आवासीय विन्यास, सत्ताः राजनैतिक एवं आनुष्ठानिक, हाल में हुए परिवर्तन, बहुतपतिविवाही एवं पशुपालकः टोडा, संक्षिप्त इतिहास, आवास एवं अन्य जन समुदायों से संबंध, समूहीकरण, परिवार, नातेदारी एवं विवाह, सत्ताः राजनैतिक एवं आनुष्ठानिक, हाल में हुए परिवर्तन, स्थायी रूप में कृषि कार्य करने वाले : मुल्लुकुरूम्बा, संक्षिप्त इतिहास एवं आवास, समूहीकरण, परिवार, नातेदारी एवं विवाह, सत्ताः राजनैतिक एवं आनुष्ठानिक हाल में हुए परिवर्तन।

जनजातीय समाज में धर्म

जनजातीय समाजों की प्रमुख विशेषताः धर्म का सरल रूप, जनजातीय रहन-सहन, जनजातीय धार्मिक अनुष्ठान प्रणाली, आनुष्ठानिक स्थल, आनुष्ठानिक काल, आनुष्ठानिक भाषा, जनजातीय विश्व दृष्टि, जनजातीय लोगों के सरल विश्वास और उपनिषदों की जटिल विचारधारा, कुछ नृजातीय उदाहरण, जनजातीय धर्म का नृशास्त्रीय अध्ययन, दूसरी धार्मिक विचार प्रणालियों का प्रभाव, हिन्दू धर्म और जनजातीय धर्म, ईसाई धर्म और जनजातीय धर्म, सामाजिक धार्मिक आंदोलन, तना भगत आंदोलन, बिरसा मुंडा आंदोलन।

जनजातीय समाज एवं आधुनिकीकरण

भारत में अनुसूचित जनजातियाँ, जनजातीय समुदायों का अन्य जनजातियों एवं गैर-जनजातीय समुदायों से सम्पर्क, जनजातीय समाज और ब्रिटिश नीती, आधुनिकीकरण के प्रभाव को परखने के लिए कुछ उदाहरणों का अध्ययन, मध्य प्रदेश की बैगा जनजाति, आपातानी तथा

पूर्वोत्तर की अन्य जनजातियाँ, रमाड़ी, टोडा, संथाल जनजाति में परिवर्तन की प्रक्रिया, जनजातीय समुदायों के संदर्भ में आधुनिकीकरण के विभिन्न पहलू, औद्योगीकरण, शिक्षा, आधुनिकता के प्रतिकूल प्रभाव, जनजातीय आंदोलन।

नारी की प्रस्थिति

समाजशास्त्रीय संकल्पनाओं की पुनः जाँच, लिंग, भूमिका तथा प्रस्थिति, पारंपरिक अपेक्षाएँ तथा नारी की भूमिका और प्रस्थिति, समकालीन, भारत में नारी की प्रस्थिति, परिवार तथा नारियों के कार्य, नारी तथा सवेतन रोज़गार, जमी-जमाई धारणाओं का नारी के स्वास्थ्य पर प्रभाव, भोजन में भेदभाव, लिंग निर्धारण परीक्षण तथा यौनाधार पर भेदभाव, नारी की मनोवैज्ञानिक अनुक्रिया, शैक्षिक तथा समाजीकरण प्रक्रिया में स्त्रियों की भूमिकाओं के प्रति जमी-जमाई धारणाएं, अध्ययन पाठ्यक्रमों में यौन के आधार पर भेद, पाठ्य पुस्तकों में पक्षपात, समाजीकरण की प्रक्रिया में विभेदन, प्रसार माध्यम, नारी तथा बदलता परिदृश्य, टेलीविजन पर दिखाया जाने वाला नारी का रूप, सीरियलों तथा सिनेमा में नारी का अल्पप्रतिनिधित्व, बदलता परिदृश्य।

भारत में स्त्री आन्दोलन

स्त्री आंदोलन : सामाजिक आन्दोलन का परिवर्तक, 19वीं और 20वीं, शती के पूर्वार्द्ध में सुधार आन्दोलन और स्त्रियों से संबंधित समस्याएँ, ब्रह्मो समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, मुस्लिम स्त्रियाँ और सामाजिक सुधार, स्वतंत्रता आन्दोलन और स्त्रियों की सहभागिता, महात्मा गाँधी और पंडित नेहरू की भूमिका, महिलाओं के संगठन और समस्याएँ, स्वतंत्रता आन्दोलन में स्त्रियों की सहभागिता के रूप, संस्थागत रूप में लिए गए प्रारंभिक प्रयास और स्वातन्त्रयोत्तर काल में स्त्रियों की समस्याएं संवैधानिक उपबंध और सामाजिक कानून, आयोजित विकास और सामाजिक परिवर्तन, स्त्रियों का राजनैतिक प्रतिनिधित्व, 70 और 80 के दशक में स्त्री आन्दोलन का पुरूत्थान :

समस्याएँ और कार्यक्रम, नए संगठनों का उद्‌भव, नव-कटाई और परिस्थिति का आन्दोलन, 70 और 80 के दशक में विशिष्ट मुद्दे पर आधारित आन्दोलन, उभरती प्रवृत्तियाँ और सरकार की प्रतिक्रिया।

महिलाएँ और उद्यम

महिलाओं के उद्यम का स्वरूप, सीमा, क्षेत्र, ढाँचा, महिलाओं के क्या उद्यम हैं?, घरेलू उत्पादन तथा परिवार के प्रकार पर आधारित अवैतनिक कार्य, बालिका श्रम, वैतनिक कार्य, महिला कामगारों और असंगठित क्षेत्रों का विकास, महिलाओं के उद्यम के निर्धारक तत्व, संरचनात्मक कारक, समाज-सांस्कृतिक कारक, महिलाओं की भूमिका को परिवितर्तित करने वाली प्रक्रियाएँ, शिक्षा और प्रशिक्षण, प्रौद्योगिक परिवर्तन, भूमि पर अधिकार और अन्य उत्पादकीय साधन, महिला उत्पादकों और कामगारों के संगठन दबाव समूहों के रूप में, वृहत-प्रक्रियाएं, और राज्य नीतियाँ।

स्त्री और शिक्षा

शिक्षा और लिंग असमानता : एक दृष्टिकोण, स्त्री नामांकन और अवरोध को प्रभावित करने वाले कारक, पारिवारिक और सामाजिक कारक, संरचना और वितरण प्रणालियों की सीमाएँ, शिक्षा की विषय-वस्तु और विचारधारा, अनौपचारिक शिक्षा और प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम के माध्यम से स्त्री शिक्षा।

महिलाओं के समकालीन मुद्दे : स्वास्थ्य एवं कानूनी पक्ष

महिलाओं के मुद्देः अवधारणा एवं वितरण, महिलाओं के मुद्दों की अवधारणा, स्त्री-पुरूषों के कार्यों के बारे में जमी-जमाई धारणाएं एवं महिलाओं के मुद्दे, महिला अध्ययनों का उदय, महिलाएँ एवं स्वास्थ्य, लिंग अनुपात एवं प्रत्याशाएँ, कम उम्र में विवाह एवं स्त्रियों का स्वास्थ्य, गर्भावस्था और महिलाओं का स्वास्थ्य, महिलाएँ एवं कानून, विवाह, दहेज एवं तलाक, संपत्ति और उत्तराधिकार, कार्य भुगतान एवं गर्भावस्था, में मिलने वाली सुविधा या लाभ, महिलाओं के विरुद्ध अपराध, कानून को लागू करने संबंधी समस्याएँ।

नृजातीय संबंध एवं संघर्ष

नृजातीय संबंधों के साथ जुड़ी हुई संकल्पनाएँ, नृजाती और नृजातीय समूह, नृजातीयता, नृजातीयता अस्थिता, नृजातीय सीमा, बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक समूह, धर्मातरण (धर्म परिवर्तन) नृजातीय संबंधों के अध्ययन में व्यापक रूचि और इसके अध्ययन की आधारभूत पद्धति, व्यापक रूचि के पीछे निहित कारण, अध्ययन की आधारभूत पद्धति, भारत में नृजातीय संबंधों के आयाम, भाषा और क्षेत्र, धर्म, जाति, नृजातीय समूहों के संबंध में ब्रिटिश प्रशासन और भारतीय संविधान की भूमिका, ब्रिटिश प्रशासन। भारत का संविधान, भारत में नृजातीय संघर्ष, भाषायी संघर्ष, धार्मिक संघर्ष, नृजातीय संघर्षों के सामान्य लक्षण, नृजातीय संघर्षों की समस्या का समाधान।

सामाजिक आंदोलन

सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक आंदोलन, सामाजिक आंदोलनों की प्रकृति, परिभाषा, उदाहरण, प्रारूप, प्रकार्य, सामाजिक आंदोलनों का उद्‌भव, सापेक्षिक वचन, संरचनात्मक तनाव, पुनर्जीविकरण, उद्‌भव को समझने का महत्व, सामाजिक आंदोलनों में नेतृत्व एवं विचारधारा की भूमिका, नेतृत्व, विचारधारा, सामाजिक आंदोलनों का जीवन चक्र।

विकास, नियोजन एवं परिवर्तन

विकास, नियोजन एवं परिवर्तन के मध्य सम्बन्ध, विकास एवं परिवर्तन के प्रति सामाजिक चिन्तकों के विचार-बोध, अन्तपरिवर्तन एवं तार्किकी रूप से सम्बन्धित अवधारणाओं के रूप में विकास एवं परिवर्तन, आधुनिकीकरण के रूप में विकास एवं परिवर्तन, आधुनिकीकरण के रूप में विकास एवं परिवर्तन, विकास, नियोजन एवं परिवर्तन का समकालीन दृष्टिकोण, विकास, नियोजन, परिवर्तन, भारतीय सन्दर्भ में विकास, नियोजन एवं परिवर्तन, विकास, मिश्रित, अर्थव्यवस्था एवं ग्रामीण विकास, नियोजनः पंचवर्षीय योजनाएँ, जाति ग्रामीण एवं शहरी जीवन तथा महिलाओं से सम्बन्धित परिवर्तन।

पारिस्थितिकी एवं समाज का भविष्य

पारिस्थितिकी क्या है?, पारिस्थितिकी में उपागम, निर्धारणवाद एवं संभावनावाद, भारतीय समाज में संदर्भ में पारिस्थितिकी, मानवीय समाज की मूलभूत आवश्यकताएँ, भारतीय संदर्भ में स्थिति, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण, भोजन दूषण, जीव-विष का प्रभाव, रासायनिक बहिःस्राव का प्रभाव, कीटनाशक खतरा, वनों का दोहन, निर्वनीकरण, इमारती लकड़ी का व्यवसाय, उत्तर प्रदेश में वृक्ष सघनता, चिपको आंदोलन, वनों का संरक्षण : भविष्य की ओर कदम, भारत के राज्यों में वनों का उपयोग, संरक्षण एवं पुनर्वनीकरण (वृक्षारोपण) आर्थिक सहायता एवं संरक्षण, नये आयाम।

UGSY-03

यूरोप में समाजशास्त्र का उदय

समाजशास्त्र के उदय की पृष्ठभूमि, समाजशास्त्र का उदयः सामाजिक परिस्थितियाँ, वाणिज्यक क्रांति, वैज्ञानिक क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति, औद्योगिक क्रांति, समाजशास्त्र, के उदय पर बौद्धिक प्रभाव, इतिहास का दर्शन, विकास के जीव वैज्ञानिक सिद्धान्त, सामाजिक परिस्थितियों के सर्वेक्षण।

समाजशास्त्र के संस्थापक-I

प्रारंभिक उद्‌भव, ऑगस्ट कॉम्ट (1998-1857), जीवन परिचय, उसका सामाजिक परिवेश, मुख्य विचार, समकालीन समाजशास्त्र पर कॉम्ट के विचारों का प्रभाव, हर्बर्ट स्पेन्सर (1820-1903), जीवन परिचय, उसका सामाजिक परिवेश, मुख्य विचार, समकालीन समाजशास्त्र, पर स्पेंसर के विचारों का प्रभाव।

समाजशास्त्र के संस्थापक-II

जॉर्ज ज़िमेल (1858-1918), जीवन परिचय, सामाजिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, मुख्य विचार, सामाजिक ऐतिहासिक पृष्टभूमि, मुख्य विचार, समकालीन समाजशास्त्र पर ज़िमेल के विचारों का प्रभाव, बिल्फ्रेडो परेटो (1848-1923), जीवन परिचय, सामाजिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, मुख्य विचार, समकालीन समाजशास्त्र पर बेब्लेन के विचारों का प्रभाव।

भारत में समाजशास्त्र का इतिहास और विकास-I

भारत में समाजशास्त्रीय चिंतन की सामाजिक पृष्ठभूमि, अंग्रेजी राज से पूर्व सामाजिक विचारधारा, अंग्रेजी राज का प्रभाव, मध्यवर्ग का उदय, सुधार के लिए सामाजिक-धार्मिक आंदोलन, सुधारवादी आंदोलन, पुनर्जागरण आंदोलन, भारत में स्वाधीनता के लिए राजनैतिक आंदोलन, स्वाधीनता आंदोलन की सामाजिक पृष्ठभूमि, धार्मिक और राजनैतिक आंदोलनों का संपूरक स्वरूप, भारत में समाजशास्त्रीय चिंतन

की वैचारिक पृष्ठभूमि, परंपरा और आधुनिकता के बीच द्विविधा, भारत में शिक्षा की रूपरेखा, भारत में समाजशास्त्र और सामाजिक नृशास्त्र का उदय, समाजशास्त्र और सामाजिक नृशास्त्र के बीच संबंध, समाजशास्त्र और भारतशास्त्र (**Indology**) के बीच संबंध।

भारत में समाजशास्त्र का इतिहास और विकास-II

भारत में समाजशास्त्र के अग्रणी विचारक, राधाकमल मुकर्जी (1889 - 1968), जीवन परिचय, मुख्य विचार, महत्वपूर्ण रचनाएँ, गोविन्द सदाशिव घुर्ये (1893-1984) जीवन परिचय, मुख्य विचार, महत्वपूर्ण रचनाएँ।

ऐतिहासिक भौतिकवाद

ऐतिहासिक भौतिकवाद, पृष्टभूमि, मूल मान्यताएँ, सिद्धान्त, ऐतिहासिक भौतिकवाद आर्थिक निर्धारणवाद नहीं है, समाजशास्त्रीय सिद्धान्त में ऐतिहासिक भौतिकवाद का योगदान।

उत्पादन की शक्तियाँ, संबंध एवं प्रणाली

उत्पादन, उत्पादन की शक्तियाँ, उत्पादन के संबंध, उत्पादन प्रणाली, उत्पादन की प्रणाली के विभिन्न स्वरूप, एशियाटिक उत्पादन प्रणाली, प्राचीन उत्पादन प्रणाली, सामन्तवादी उत्पादन प्रणाली, पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली।

वर्ग एवं वर्ग संघर्ष

वर्ग संरचना, वर्ग निर्धारण के प्रमुख आधार, इतिहास में समाजों, का वर्गीकरण एवं वर्गों का उदय, पूँजीवादी के अन्तर्गत वर्ग संघर्ष की तीव्रता, वर्ग एवं वर्ग संघर्ष, मार्क्स की 'अलगाव' की अवधारणा।

द्वंद्वात्मकता एवं सामाजिक परिवर्तन

द्वंद्वात्मकता की अवधारणा, द्वंद्वात्मकता के नियम, विपरीत की एकता एवं संघर्ष का नियम, निषेध का निषेध नियम, मात्रात्मक के गुणात्मक परिवर्तनों में परिवर्तन का नियम, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के नियमों का प्रयोग, आदिम साम्यवादी समाज, दास प्रथावादी समाज,पूंजीवादी

समाज, सामाजिक परिवर्तन एवं क्रांति।

समाजशास्त्र विज्ञान के रूप में

समाज के विज्ञान की स्थापना के सामान्य प्रतिवंध, समाजशास्त्र ''सामाजिक तथ्यों'' के अध्ययन के रूप में, सामाजिक तथ्य, सामाजिक तथ्यों के प्रकार, सामाजिक तथ्यों के प्रमुख विशेषताएं, बाह्यता एवं बाध्यता, समाजशास्त्रीय पद्धति, सामाजिक तथ्यों के अवलोकन के विषय, सामान्य एवं व्याधिकीय (pathological) में विभेद के नियम, में विभेद के नियम, सामाजिक प्ररूप के वर्गीकरण के नियम, सामाजिक तथ्यों की व्याख्या के नियम।

तुलनात्मक अध्ययन

दैनिक जीवन में तुलनाएं, तीन प्रकार की तुलनाएं, दर्खाइम द्वारा की गयी तुलनाओं के प्रकार, एक ही समाज की विभिन्नताओं की तुलना, विभिन्न समाज-एक समय पर, विभिन्न समाज-विभिन्न समय पर, अप्रत्यक्ष प्रयोग के रूप में तुलनाएँ (Indirect Experiment) एक अध्ययन द्वारा प्रयोग एक अध्ययन द्वारा प्रयोग।

सामूहिक प्रतिनिधान

समाज और वैयक्तिक चेतना, सामूहिक चेतना, सामूहिक प्रतिनिधित्व, सामूहिक प्रतिनिधित्व-परिभाषा, वैयक्तिक प्रतिनिधित्व, सामूहिक प्रतिनिधित्व के बनने की प्रक्रिया, अन्तःबोध और सामूहिक प्रतिनिधित्व, धर्म और सामूहिक प्रतिनिधित्व।

एकात्मकता के प्रकार

यांत्रिक एकता, सामूहिक चेतना, सामूहिक चेतना : प्ररूप के आधार पर, सामूहिक चेतना, तथ्यों के आधार पर, सावयवी एकता, सावयवी एकता में सामूहिक चेतना के नए रूप, प्ररूप के आधार पर, तत्वों के आधार पर।

आदर्श प्ररूप

आदर्श प्ररूप : व्याख्या, संरचना और विशेषताएँ, व्याख्या, संरचना,

विशेषताएँ, आदर्श प्ररूप के उद्देश्य और उपयोग, वेबर द्वारा निर्धारित आदर्श रूप सामाजिक यथार्थ के अमूर्त तत्व, किसी विशिष्ट व्यवहार की पुनर्रचना।

धर्म और आर्थिकी

धर्म और आर्थिकी – अर्थ तथा परस्पर संबंध, धर्म, आर्थिकी, धार्मिक नैतिकता तथा आर्थिकी के बीच परस्पर संबंध, प्रोटेस्टेंट नैतिकता तथा पूँजीवाद की प्रवृत्ति, पूंजीवाद की प्रवृत्ति, प्रोटेस्टेंट नैतिकता : पूंजीवाद के विकास को प्रभावित करने वाली विशेषताएँ, धर्म के संबंध में वेबर का तुलनात्मक अध्ययन, चीन में कन्फ्यूशसवाद, पश्चिम एशिया में यहूदी धर्म भारत में हिन्दू धर्म, वेबर के धर्म तथा आर्थिकी संबंधी अध्ययनों का समालोचनात्मक मूल्यांकन।

शक्ति व सत्ता

शक्ति और सत्ता की अवधारणाएँ, शक्ति, सत्ता, सत्ता के तत्व, सामाजिक क्रिया के प्रकार तथा सत्ता के प्रकार, सामाजिक क्रिया के प्रकार, सत्ता के प्रकार, नौकरशाही नौकरशाही के मुख्य लक्षण, नौकरशाही में अधिकारी वर्ग की विशेषताएँ।

तार्किक दृष्टिकोण

तर्कसंगति अथवा तार्किक दृष्टिकोण और तर्कसंगतिकरण का अभिप्राय, वेबर की रचनाओं में तर्कसंगति की अवधारणा, प्रोटेस्टेंटवाद, पूँजीवाद, नौकरशाही, तर्कसंगत के प्रकारः- स्वैकरैशनलिटैट और वैटररैशनलिटैट, समाजशास्त्रीय, शोध में तर्कसंगति : मूल्य-विमुक्त समाजशास्त्र।

समाजशास्त्रीय, पद्धति : मार्क्स, दर्खाइम और वेबर

विचार पद्धति, व्याख्या और महत्व, विचार पद्धति की व्याख्या, विचार पद्धति का महत्व, कार्ल मार्क्स की विचार पद्धति, इतिहास का भौतिकवादी विश्लेषण, सामाजिक संघर्ष और परिवर्तन, 'प्रेक्सिस'' (praxis) की अवधारणा, एमिल दर्खाइम की विचार पद्धति, व्यक्ति

और समाज, समाजशास्त्र की विषयवस्तु : सामाजिक तथ्य, समाज का प्रकार्यात्मक विश्लेषण, सामाजिक संघर्ष बनाम सामाजिक व्यवस्था, मैक्स वेबर की विचार पद्धति, ''फार्स्टेहन'' या अंतर्दृष्टि, आदर्श प्ररुप, कार्य कारण संबंध (causuality) और ऐतिहासिक तुलना, समाजशास्त्र के मूल्य, समाजशास्त्रियों की भूमिका।

धर्म : दर्खाइम और वेबर

धर्म के समाजशास्त्र में एमिल दर्खाइम का योगदान, धर्म की व्याख्या-मान्यताएँ और अनुष्ठान, टोटमवाद का अध्ययन, धर्म और विज्ञान, मैक्स वेबर का योगदान, भारतीय धर्म, चीना धर्म प्राचीन यहूदी धर्म दर्खाइम और वेबर : तुलना, विश्लेषण की इकाईयाँ, धर्म की भूमिका, देवता, भूत-प्रेत और पैगम्बर, धर्म और विज्ञान।

श्रम विभाजन : दर्खाइम और मार्क्स

सामाजिक-आर्थिक परिवेश और ''श्रम विभाजन'' से तात्पर्य, सामाजिक-आर्थिक परिवेश, श्रम विभाजन से तात्पर्य, श्रम विभाजन पर दर्खाइम के विचार, श्रम विभाजन के कार्य, श्रम विभाजन के कारण, श्रम विभाजन के असमान्य रूप, श्रम विभाजन पर मार्क्स के विचार, सामाजिक श्रम विभाजन और उत्पादन में श्रम विभाजन, उत्पादन में श्रम विभाजन के परिणाम, तुलना, श्रम विभाजन के कारण, श्रम विभाजन के परिणाम, श्रम विभाजन के संबंधित समस्याओं के समाधान, समाज के बारे में दर्खाइम का ''प्रकार्यात्मक'' मॉडल और मार्क्स का ''संघर्ष'' मॉडल।

पूँजीवाद : मार्क्स और वेबर

पूँजीवाद के बारे में कार्ल मार्क्स के विचार, पूंजीवाद-मानव इतिहास का एक चरण, पूँजीवाद की मुख्य विशेषताएँ, पूंजीवाद और वर्ग संघर्ष, पूँजीवाद के बारे में मैक्स वेबर के विचार, तर्कसंगति के बारे में वेबर के विचार, तर्कसंगतिकरण और पाश्चात्य सभ्यता, परंपरागत और तर्कसंगत पूँजीवाद। तर्कसंगत पूंजीवाद की पूर्व-शर्तोंः पूँजीवाद किस तरह के सामाजिक आर्थिक परिवेश में पनप सकता है? तर्कसंगत

पूँजीवाद के कारण, तर्कसंगत पाश्चात्य समाज का भविष्यः ''लोहे का पिंजरा'', मार्क्स और वेबर के विचारों की तुलना, दृष्टिकोण में अंतर, पूँजीवाद का उदय, पूँजीवाद के परिणाम और पूँजीवाद व्यवस्था को बदलने का उपाय।

संस्कृति तथा प्रकार्य की अवधारणा – मलिनॉस्की

मलिनॉस्की के पूर्ववर्ती विचारक, विकासवादी विचारक, प्रसारवादी विचारक, तथ्य एकत्रीकरण में विशिष्ट अभिरुचि, संस्कृति-कार्यशील समग्रता के रूप में, मलिनॉस्की तथा टाइलर की संस्कृति की परिभाषाएं संस्कृति के अध्ययन की विधियाँ, आवश्यकताओं का सिद्धान्त, जैविक आवेग, आवश्यकताओं के प्रकार, मलिनाँस्की द्वारा विकसित प्रकार्य की अवधारणा।

जादू, विज्ञान तथा धर्म की अवधारणा – मलिनॉस्की

जादू-टोना, विज्ञान और धर्म के बारे में वाद-विवाद, धर्म के बारे में टाइलर के विचार, जादू-टोना, विज्ञान और धर्म के बारे में फ्रेजर के विचार, टोटमवाद के बारे में फ्रेज़र और दर्खाइम के विचार, मलिनाँस्की का दृष्टिकोण : विशिष्टता में सार्विकी। लौकिक क्षेत्र, ट्राब्रिएंड द्वीपवासियों में खेती-बाड़ी का प्रचलन, ट्रॉब्रिएंड द्वीपवासियों द्वारा केनो-निर्माण, क्या आदिम ज्ञान के समान था? पवित्र क्षेत्र-धर्म, दीक्षा अनुष्ठान समारोह, मृत्यु से संबंधित अनुष्ठान, धार्मिक आचरण के कुछ अन्य उदाहरण, धर्म के बारे में मालिनॉस्की के विचारों का सारांश, पवित्र क्षेत्र – जादू-टोना, जादू-टोने का परंपरा, 'माना' और जादू-टोना, जादू-टोना और अनुभव, समानताएं और असमानताएं, जादू-टोना और विज्ञान, जादू टोना और धर्म, जादू-टोना, विज्ञान और धर्म का प्रकार्य।

संरचना की अवधारणा – रैडक्लिफ़-ब्राउन

बौद्धिक प्रभाव, क्षेत्रीय शोधकार्य की परम्परा, दर्खाइम ब्राउन में वैचारिक परिवर्तन, रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा विकसित सामाजिक संरचना की अवधारणा, सामाजिक संरचना और सामाजिक संगठन, सामाजिक

संरचना और सामाजिक संस्थाएँ, संरचनात्मक निरंतरता (structural continuity) और संरचनात्मक रूप (Structural form) पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में संरचनात्मक व्यवस्था, क्षेत्रीय आधार, जनजातिय, माइटी, टाटम समूह।

प्रकार्य की अवधारणा – रैडक्लिफ-ब्राउन

प्रकार्य की अवधारणा, संरचना और प्रकार्य प्रकार्यात्मक एकता, ''यूनोमिया'' और ''डिस्नोमिया'', ऐतिहासिक पद्धति तथा प्रकार्यात्मक पद्धति, रैडक्लिफ़-ब्राउन की संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक व्याख्या के कुछ उदाहरण, अण्डमान द्वीप समूह में आनुष्ठानिक विलाप, टोटमवाद का अध्ययन, आदिम समाजों में नातेदारी, आदिम मसाजों के मामा की भूमिका।

मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन के विचारों की समालोचना।

प्रकार्यात्मक पद्धति – मिथक अथवा वास्तविकता, समाज का विज्ञान बनाम समाजशास्त्र, सामाजिक नृशास्त्र का विशिष्ट स्थान, रैडक्लिफ़-ब्राउन का क्षेत्रीय शोधकार्य, रैडक्लिफ़-ब्राउन का सैद्धान्तिक योगदान, मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन के मार्गदर्शन में नृशास्त्रीय, शोधकार्य का विकास, मलिनॉस्की का प्रभाव, रैडक्लिफ़ – ब्राउन, का प्रभाव, बीसवीं सदी के तीसरे-चौथे दशक के बाद नृशास्त्रीय, शोध का विकास।

सामाजिक प्रणाली की अवधारणा – पार्सन्स

टालकट पार्सन्स और सामाजिक प्रणाली की अवधारणा के संबंध में आरंभिक दृष्टिकोण, उपयोगितावादी (utilitarian) प्रत्यक्षवादी (positivist) और आदर्शवादी (idealist) दृष्टिकोण। पार्सन्स का दृष्टिकोण, पार्सन्स का क्रियात्मक दृष्टिकोण, सामाजिक प्रणाली के संगठन की आधारभूत इकाई, अभिप्रेरणात्मक उन्मुखता (motivation orientation), मूल्यपरक उन्मुखता (value orientation), सामाजिक प्रणाली में भूमिकाओं का संस्थागत होना। सामाजिक प्रणाली के रूप में सामूहिकता (collectivity) विन्यास प्रकारान्तर (pattern

variables) भावात्मकता (affectivity) बनाम भावात्मक तटस्था (affective neutrality) आत्म-उन्मुखता (self orientation) बनाम सामूहिक उन्मुखता (collective orientation) सार्वभौमवाद (universalism) बनाम विशिष्टतावाद (particularism) प्रदत्त (ascription) बनाम अर्जित (achievement) विनिर्दिष्टता (spefificity) बनाम प्रसरणता (diffuseness) प्रकार्यात्मक पूर्वापेक्षाएँ (functional preprequisites) अनुकूलन (adaptation) लक्ष्य प्राप्ति (goal attainment) एकीकरण (integration) विन्यास अनुरक्षण (latency) सामाजिक प्रणाली की संरचन के प्रकार, सार्वभौमवादी-अर्जित विन्यास (the universalistic achievement pattern) सार्वभौमवादी-प्रदत्त विन्यास (the universalistic ascriptuive pattern) विशिष्टतावादी – अर्जित विन्यास (the particularistic achievement pattern) विशिष्टवादी – प्रदत्त विन्साय (the particularistic-ascription pattern)।

प्रकार्यवाद और सामाजिक परिवर्तन – पार्सन्स

पार्सन्स की प्रकार्यवाद की अवधारणा, प्रकार्यवाद और सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक प्रणालियों के भीतर परिवर्तन, परिवर्तन के लिए दबाव पैदा करने वाले कारक, सामाजिक आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक प्रणालियों में आमूल परिवर्तन : विकासात्मक सार्विकीय तत्व, आदिम अथवा प्राचीन समाज, मध्यवर्ती समाज, आधुनिक समाज।

व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य-मर्टन

प्रकार्य की अवधारणाएँ, प्रकार्य शब्द के विभिन्न अर्थ, निष्पक्ष परिणाम (objective consequences) और स्वपरक मनोवृत्तियाँ, (subjective consequences) प्रकार्य, दुष्प्रकार्य (dysfunction) व्यक्त प्रकार्य और अव्यक्त प्रकार्य, प्रकार्यात्मक विश्लेषण के आधार तत्व (postulates of functional analysis) प्रकार्यात्मक एकता

का आधार तत्व (postulate of functional unity) सार्विकीय प्रकार्यवाद का आधार तत्व (postulate of universal functionalism), अपरिहार्यता का आधार तत्व (postulate of indispensability) प्रकार्यात्मक विश्लेषण का प्रतिरूप (paradigm) वे तथ्य जिनके प्रकार्य देखे जा सकते हैं, निष्पक्ष परिणामों की अवधारणाएं, जिसका प्रकार्य देखा जा रहा है उस इकाई की अवधारणा, प्रकार्यात्मक विश्लेषण के वैचारिक दृष्टिकोणों में समस्याएँ, व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य - यह विभेद क्यों ? ''तर्कहीव'' लगने वाली बातें सार्थक हो जाती हैं, खोज के नये सवालों का उदय, समाजशास्त्रीय ज्ञान का विस्तार, स्थापित नैतिक मूल्यों को चुनौती मिलती है।

संदर्भ समूह का सिद्धान्त-मर्टन

संदर्भ समूह की अवधारणा, तुलनात्मक वंचन की अवधारणा, समूह और समूह सदस्यता की अवधारणा, गैर-सदस्यता की अवधारणा, प्रत्याशी समाजीकरण, सकारात्मक और नकारात्मक संदर्भ समूह, संदर्भ समूह के निर्धारक तत्व, संदर्भ व्यक्ति, सदस्यता समूहों में से संदर्भ समूहों का चयन, गैर-सदस्यता समूहों का चयन, मूल्यों तथा प्रतिमानों को परिभाषित करने के लिए संदर्भ समूहों की भिन्नता, निरन्तर सक्रिय संपर्क वाले उपसमूहों अथवा प्रस्थिति-श्रेणियों में से संदर्भ समूहों का चयन, संदर्भ समूहों के संरचनात्मक तत्व, प्रेक्षणीयता और दृश्यमानता : प्रतिमानों, मूल्यों और भूमिका-निर्वाहन की जानकारी के अनुकृत माध्यम, अननुरूपता : संदर्भ समूह का आचरण का एक प्रकार, भूमिका पट, प्रस्थिति पट और प्रस्थिति क्रम।

पार्सन्स और मर्टन के विचारों की समालोचना

पार्सन्स और मर्टन : एक समालोचना, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण, सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक संरचना, समाजशास्त्रीय सिद्धान्त और सामाजिक परिवर्तन।

UGSY-04

सामाजिक स्तरीकरण - I

सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, टालकोट, पारसन्स, किंग्स्ले डेविस, और विल्वर्ट ई. मूर के कार्यात्मक सिद्धान्त, टालकोट, पारसन्स का दृष्टिकोण किंग्स्ले डेविस और विल्बर्ट ई.मूर के दृष्टिकोण, डेविस-मूर के सिद्धान्त की मेल्विन ट्यूमि द्वारा आलोचना, बहस के अन्य मुद्दे, कार्यात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग।

सामाजिक स्तरीकरण - II

संघर्षात्मक सिद्धान्त के आधारभूत तत्व और कार्यात्मक सिद्धान्त, स्तरीकरण के संघर्षात्मक सिद्धान्त के प्रवर्तक, कार्ल मार्क्स, आर. डैहरेन्डीफ, सी. राइट मिल्स, जी, लेंस्की, भारतीय समाज के अध्ययन में संघर्षात्मक सिद्धान्त की उपयोगिता।

प्रास्थिति तथा वर्ग की संकल्पनाएँ

''प्रास्थिति'' और ''वर्ग'' की अवधारणाएं, प्रस्थिति का अर्थ

UGHY-01

साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद : सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

उपनिवेशवाद : विभिन्न दृष्टिकोण, उपनिवेशवाद की प्रकृति, उपनिवेश पर प्रभाव, उपनिवेशवाद की अवस्थाएँ – प्रथम अवस्था, द्वितीय अवस्था, तृतीय अवस्था।

साम्राज्यवाद और उसके सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रभाव

उपनिवेशवाद के सिद्धान्त – यूरोपीय दृष्टिकोण, भारतीय राष्ट्रवादी दृष्टिकोण। उपनिवेशवाद के प्रभाव – अनौद्योगीकरण, औपनिवेशिक भारत में अकाल, कृषि का व्यवसायीकरण, व्यावसायीकरण का ग्रामीण समाज पर प्रभाव। आधुनिक उद्योग और भारतीय पूँजीपति वर्ग, औपनिवेशिक शासन ।

उन्नीसवीं शताब्दी में राष्ट्रीय चेतना का उद्‌भव और विकास

भारतीय अर्थव्यवस्था का विनाश – कृषि, उद्योग, राष्ट्रीय चेतना के उद्‌भव के कारण – प्रशासन का संगठित स्वरूप, संचार व्यवस्था, छापाखाना, नवीन शिक्षा प्रणाली, अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति, बौद्धिक जागरण, रंगभेद नीति। भारतीय प्रतिक्रिया – किसान और जनजातीय आन्दोलन, मध्यम वर्गीय चेतना।

सन् 1857 का विद्रोह

कारण– कृषकों का शोषण, मध्य तथा उच्च वर्गभारतीयों का अलगाव, रियासतों का विलय, अंग्रेजी शासन का विदेशी होना, सिपाहियों पर प्रभाव, धर्म को खतरा, तात्कालिक कारण। संगठन, विद्रोह, नेतृत्व, पराजय, विफलता के कारण– एकरूप आदर्श का अभाव, भारतीयों में एकता का अभाव, शिक्षित भारतीयों के सहयोग का अभाव, नेताओं में फूट, अंग्रेजों की सैनिक श्रेष्ठता। प्रभाव– सत्ता का हस्तांतरण, सैनिक संचालन में परिवर्तन, फूट डालो और शासन करो, रियासतों के प्रति नई नीति, नये मित्रों की खोज। मूल्यांकन।

उपनिवेशवाद तथा प्रशासनिक व्यवस्था का विकासः 1857 के पूर्व और पश्चात्

ब्रिटिश सर्वोच्चता की स्थापना, 1857 से पूर्व प्रशासनिक व्यवस्था,– ईस्ट इण्डिया कम्पनी और ब्रिटिश संसद की तुलना, आर्थिक नीति, भू–राजस्व नीति, न्याय व्यवस्था, ब्रिटिश प्रशासन का प्रभाव। 1857 के बाद प्रशासनिक व्यवस्था– नई प्रशासनिक व्यवस्था, प्रशासन का विकेन्द्रीकरण, आर्थिक नीति, सैन्य संगठन, प्रशासनिक सेवाएं, रजवाड़ों के साथ संबंध, विद्वेषपूर्ण प्रशासन, भारत में स्वायत्त शासन का प्रश्न।

भारत में अंग्रेजी राज का सुदृढ़ होना : सीमान्त और विदेश नीति

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति – भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटेन को सर्वोच्चता, चीन का पतन, रूस से खतरा, अफगानिस्तान, द्वितीय अफगान युद्ध, उत्तर पश्चिमी सीमान्त नीति, ईरान तथा ईरान की खाड़ी, तिब्बत, नेपाल, सिक्किम, भूटान, उत्तरपूर्वी सीमान्त (नेफा) ।

जन विद्रोह : उन्नीसवीं सदी का उत्तरार्द्ध

औपनिवेशिक प्रभाव, कृषक आदिवासी और शिल्पकार, 1857 के जन आन्दोलन, उड़ीसा, संथल विद्रोह, 1857 के बाद जन आन्दोलन, नील विद्रोह, मोपला विद्रोह, पाबना, दक्कन के दंगे, कोय विद्रोह, बिरसा मुंडा विद्रोह। जन आन्दोलन का स्वरूप, श्रमिक वर्ग के आन्दोलन। शिक्षित वर्ग का प्रयास, हड़ताल, विशेषताएं।

उन्नीसवीं सदी के भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन

सुधार की आवश्यकता, सुधार आन्दोलन, सुधारों का विस्तार क्षेत्र, सुधारों की प्रणाली– आंतरिक सुधार, कानून द्वारा सुधार, प्रतीकात्मक बदलाव द्वारा सुधार, सामाजिक कार्यों द्वारा सुधार। विचार – तर्कवाद, विश्व व्यापकतावाद। महत्व, कमजोरियॉ और सीमाएं।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना –

वातावरण– नए नेतागण, कला एवं साहित्य, अखबार एवं पत्रिकाएं। 1985 के पूर्व की राजनैतिक संस्थाएं – सामाजिक प्रतिक्रिया– लिट्न, रिपन । शिक्षित भारतीयों की भूमिका, कांग्रेस की स्थापना– पहली

बैठक, अध्यक्षीय भाषण, उपस्थिति, कार्यवाही और प्रस्ताव। कांग्रेस की उत्पत्ति से संबंधित विवाद – सरकारी षडयंत्र सिद्धान्त, विशिष्ट वर्ग की प्रतिद्वन्द्विता और महत्वाकांक्षाएं, अखिल भारतीय संस्था की आवश्यकता।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस : नरम दल और गरम दल

कांग्रेस का संयोजन,–मध्यवर्गीय संगठन, कार्य प्रणाली, नरम दल (उदारवादी) मांगे तथा कार्यक्रम, कार्य का मूल्यांकन, गरम दल– गरमदल का सैद्धान्तिक आधार, गरम दल की कार्रवाई, नरमदल तथा गरम दलः एक विश्लेषण – मतभेद, व्यक्तित्वों की टकराहट, खुली लड़ाई और फूट,फूट के परिणाम।

मार्क्सवाद और समाजवादी विचारधारा

समाजवाद की परिभाषा, समाजवादी विचारधारा की उत्पत्ति, समाजवादी विचारधारा का पूर्व इतिहास– सेंत साइमन, चार्ल्स फुरियर, राबर्ट ओवेन। मार्क्सवादः आर्थिक व सामाजिक विश्लेषण, मार्क्सवाद : राजनैतिक सिद्धान्त, मार्क्सवादः क्रान्ति का सिद्धान्त।

प्रथम विश्व युद्ध : कारण एवं परिणाम

प्रथम विश्व युद्ध के कारण–गुप्त संधि प्रणाली, सैन्यवाद, राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद की अपनी आवश्यकताएं, समाचार पत्र प्रेस एवं जनमत, तत्कालिक कारण, युद्ध के परिणाम– मानव जीवन की क्षति, सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन, जनतांत्रिक आदर्श, 1919 का पेरिस सम्मेलन, शक्ति संतुलन का समाचार, नवीन अन्तर्राष्ट्रीय साधन, विश्व युद्ध और भारत।

रूसी क्रान्तिः कारण, अवस्थाएँ, महत्व

रूसी क्रान्ति के बारे में पढ़ने की आवश्यकता क्यों है, रूसी क्रान्ति के कारण, कृषि सम्बन्धी स्थिति तथा किसान वर्ग, मजदूर, उद्योगीकरण और क्रान्ति। राष्ट्रीयता का प्रश्न, राजनैतिक दलः नेतृत्व, क्रान्ति के

चरण,क्रान्ति की प्रकृति और महत्व– आर्थिक पक्ष, सामाजिक पक्ष, राजनैतिक पक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय पक्ष, भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर प्रभाव ।

क्रान्तिकारी प्रवृत्तियाँ, गदर पार्टी और होम रूल लीग

क्रान्तिकारी प्रवृत्तियाँ– क्रान्तिकारी आतंकवाद के कारण, आरम्भिक गतिविधियाँ, गदर आन्दोलन – आंदोलन की पृष्ठभूमि, आरम्भिक गतिविधियाँ, संगठन की ओर, योजना एवं कार्यवाही, गदर आन्दोलनः मुख्य घटनाएं– आंदोलन की आखिरी स्थिति, दमन, असफलता तथा उपलब्धियां, होम रूल लीग – प्रमुख घटनाएं जिनसे लीगों का निर्माण हुआ, दो अलग अलग लीग, तिलक की होम रूल लीग, एनी बिसेंट की होम रूल लीग, ब्रिटिश रवैये में परिवर्तन, होम रूल लीग का पतन।

भारत की राजनीति में महात्मा गॉधी जी का आगमन और उनकी विचारधारा

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी का संधर्ष – भारतीयों की स्थिति, अभियान–1, अभियान–2, भारत में गांधीजी का आगमन, भारतीय राजनीति में प्रादुर्भाव, चंपारन, खेड़ा, अहमदाबाद, रौलट सत्याग्रह– रौलट एक्ट, आंदोलन, महत्ता, गांधीजी की विचारधारा– सत्याग्रह, अहिंसा, धर्म, हिन्द स्वराज, स्वदेशी।

संवैधानिक विकास एवं सुधार 1892–1920 ई.

पृष्ठभूमि, सन 1892 का इण्डियन काउंसिल्स अधिनियम– संवैधानिक परिवर्तनों की आवश्यकता, अधिनियम की मुख्य धाराएं। मोर्ले मिन्टो ''सुधार'' – संवैधानिक परिवर्तनों की आवश्यकता, वैधानिक संस्थाओं के संगठन में परिवर्तन,कार्यों में परिवर्तन। मोन्टेग्यू–चेम्सफोर्ड ''सुधार''– मान्टेग्यू चेम्सपफोर्ड सुधार की ओर ले जाने वाली परिस्थितियॉ, केन्द्रीय सरकार में परिवर्तन, प्रांतीय सरकार में परिवर्तन, मोन्टेफार्ड सुधारों का अवलोकन।

असहयोग और खिलाफत आंदोलन, 1919–1922 ई.

पृष्ठभूमि, खिलाफत की समस्या, असहयोग की ओर : कलकत्ता से नागपुर, असहयोग आन्दोलन के प्रमुख पक्ष, आंदोलन पर जनता की प्रतिक्रिया, आन्दोलन का फैलाव, क्षेत्रीय विभिन्नताएँ, अंतिम चरण, आंदोलन वापिस लेने के कारण, प्रभाव।

अकाली आन्दोलन

सिख समाज में कुरीतियां और प्रारंभिक सुधार, निरंकारी आन्दोलन, नामधारी आन्दोलन, सिंह सभा आन्दोलन, अकाली आन्दोलन– गुरूद्वारों के धन का दुरूपयोग, स्वर्ण मंदिर और अकाल तख्त पर नियंत्रण के लिए संघर्ष, ननकाना दुर्घटना, तोशाखाना कुंजी समस्या, गुरू का बाग मोर्चा, नाभा में अकाली आंदोलन, गुरूद्वारा बिल का पारित होना और अकाली आंदोलन की समाप्ति।

पश्चिम और दक्षिण भारत में गैर ब्राह्मण आंदोलन

महाराष्ट्र में सांस्कृतिक संघर्ष, जोतिराव गोविंदराव फुले (1827–1890) प्रारम्भिक बीसवीं सदी में गैर ब्राह्मण आन्दोलन, आन्दोलन का स्वरूप, दक्षिण भारत में गैर ब्राह्मण आंदोलन– तमिलनाडु में आत्म–सम्मान आंदोलन, जस्टिस पार्टी और गैर ब्राह्मण आन्दोलन, ई.वी. रामास्वामी नायकर (1879–1973) और आत्मसम्मान आन्दोलन, आंध्र में आत्मसम्मान आन्दोलन, कर्नाटक में गैर ब्राह्मण आंदोलन, आंदोलनों का तुलनात्मक विश्लेषण।

स्वराजवादी और रचनात्मक कार्य

पृष्ठभूमि, स्वराज पाटी : गठन, स्वराजवादी और गांधी, उद्देश्य एवं लक्ष्य, कार्यक्रम, कार्य पद्धतियॉ, स्वराजवादी एवं चुनाव। विधान मण्डलों एवं परिषदों में कार्य। रचनात्मक कार्य – खादी, अस्पृश्यता, अन्य सामाजिक समस्याएं, हतोत्साहन और पतन– सहयोग की ओर, विलय, विघटन, पतन के कारण, सांप्रदायिकता का उत्थान, पदों की लालसा,

वर्ग चरित्र।

सांप्रदायिकता का विकास : दूसरे विश्व युद्ध तक

सांप्रदायिकता : अर्थ एवं अंगभूत– सांप्रदायिकता का अर्थ, अंगभूत, सांप्रदायिकता के प्रति मिथकें, उत्पत्ति एवं विकास– सामाजिक एवं आर्थिक कारण, अंग्रेजी नीति की भूमिका, उन्नीसवीं शताब्दी में पुनरूत्थानवाद, उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के राजनैतिक रवैये, सांप्रदायिक संगठनों की भूमिका, राष्ट्रीय आन्दोलन की कमजोरियॉं, बीसवीं शताब्दी में सांप्रदायिकता – बंगाल का विभाजन और मुस्लिम लीग का गठन, पृथक निर्वाचन मण्डल, लखनऊ समझौता, खिलाफत, भिन्न रास्ते, जन आधार की ओर।

स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रवादी साहित्य

उन्नीसवीं शताब्दी का साहित्य, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, बीसवीं शताब्दी का साहित्य,

क्रान्तिकारी आतंकवादी आंदोलन : भगतसिंह और चिटगाँव शस्त्रागार पर छापा

पृष्ठभूमि, उत्तर भारत में क्रान्तिकारी,हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एच.एस.आर.ए.), उत्तर भारत में क्रान्तिकारियों का वैचारिक विकास, हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन, भगत सिंह और एच.एस.आर.ए., बंगाल में क्रान्तिकारी आतंकवादी, चिटगॉव शस्त्रागार पर छापा, क्रान्तिकारी आतंकवादी आंदोलन का पतन।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन 1930–1934 ई.

पृष्ठभूमि, सविनय अवज्ञा मार्च 1930–1934, गांधीजी के प्रयास, आंदोलन की शुरूआत, आंदोलन का प्रसार, विभिन्न समुदायों की प्रतिक्रिया, क्षेत्रीय विभिन्नताएं, समझौते के माह,मार्च–दिसम्बर 1931, 1932–34 : सविनय अवज्ञा आन्दोलन की द्वारा शुरूआत, आन्दोलन के बाद की स्थिति,

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेंस – समाजवादी विचारधारा नेहरू एवं बोस की

भूमिका

समाजवादी विचार और कांग्रेस के प्रारम्भिक दौर के नेता, नया वातावरण, असहयोग आन्दोलन, जवाहरलाल नेहरू और समाजवाद, नेहरू का समाजवाद से सम्पर्क, नेहरू के दृष्टिकोण में परिवर्तन, आन्तरिक राजनीति पर प्रभाव, सुभाष चन्द्र बोस और समाजवाद, सिद्धान्त और व्यवहार में समाजवाद को प्रोत्साहन, कांग्रेस नीति पर प्रभाव।

वामपंथी दलों का उदय–भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी तथा कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी

भारत में वामपंथी आंदोलन कैसे बढा, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना। एम.एन.राय, एम.एन.राय–लेनिन विवाद, एम.एन.राय ताशकंद में, आरम्भिक कम्युनिस्ट ग्रुप, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना, मजदूर और किसान पार्टियों की स्थापना, ट्रेड यूनियनों पर कम्युनिस्ट प्रभाव, मेरठ षडयंत्र केस और 1934 का प्रतिबंध, कांग्रेस सोशलिस्ट पाटी की स्थापना, आरम्भिक समाजवादी नेता, आरंम्भिक समाजवादियों का संक्षिप्त परिचय, अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी पार्टी की ओर, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का कार्यक्रम, राष्ट्रीय राजनीति पर कांग्रेस समाजवादियों के कार्यक्रम का प्रभाव।

ट्रेंड यूनियन और किसान आंदोलन : 1920 और 1930 के दशक

श्रमिकों की दशा, ट्रेड यूनियनवाद का उदय, ट्रेड यूनियनवाद का अर्थ, आरंभिक इतिहास, ऑल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना। ट्रेड युनियनों का विकास, ऑल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस में विभाजन, नया चरण, किसानों की कठिनाइयॉ, 1920 के दशक के दौरान किसान आन्दोलन, 1930 के दशक में किसान आन्दोलन, ऑल इण्डिया किसान सभा की स्थापना। कांग्रेस और किसान वर्ग।

संवैधानिक सुधार : 1921–1935 ई.

1919 के संवैधानिक सुधारों का प्रभाव, द्वैध शासन की असफलता, 1920–1927 के बीच प्रस्तुत प्रस्ताव, साइमन कमीशन– नियुक्ति, बहिष्कार। सर्व दलीय कान्फ्रेंस और नेहरू रिपोर्ट, पहली गोलमेज कांफ्रेंस, गांधी और दूसरी गोलमेज कांफ्रेंस, साम्प्रदायिक पंचाट और पूना समझौता, गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया ऐक्ट 1935 ।

1937 के चुनाव तथा कांग्रेस मंत्रिमंडल

संवैधानिकता की ओर, चुनाव, स्थानीय निकायों के चुनाव, कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन, चुनाव घोषणा पत्र, फैजपुर अधिवेशन, 1937 के चुनाव– उम्मीदवारों का चयन, चुनाव अभियान, चुनाव परिणाम, पद स्वीकरण। कांग्रेस मंत्रिमण्डलों का कामकाज–राजनीतिक कैदी और नागरिक स्वतंत्रताएं, किसानों का सवाल, मजदूर वर्ग, रचनात्मक कार्यक्रम, कांग्रेस के सामने आई कुछ समस्याएं।

भारतीय पूँजीवाद का उदय, स्वतंत्रता–संग्राम में उसकी भूमिका

भारतीय अर्थव्यवस्था और भारतीय पूंजीपति वर्ग का विकास, वर्ग संगठन का उदय– आर्थिक क्षेत्र में भूमिका, राजनीतिक क्षेत्र में भूमिका, साम्राज्यवाद विरोध का स्वरूपः संवैधानिक मार्ग, कांग्रेस और पूंजीपति, कांग्रेस के प्रति पूँजीपतियों का दृष्टिकोण – कांग्रेस से सम्पर्क, वामपंथी प्रवृत्ति को रोकने के लिए पूजीपतियों की नीति।

देशी रियासतों में जन संघर्ष

राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव, आरम्भिक राजनीतिक संगठन, कांग्रेस की नीति, संघीय योजना, कांग्रेस मंत्रिमंडल, नया चरण– कांग्रेस की नीति में परिवर्तन, रियासतों में भारत छोड़ो आंदोलन, एकीकरण की प्रक्रिया, राजकोट में जनआन्दोलन– लखाजीराज का शासन, निरंकुशता की वापसी, विरोध की शुरूआत, सत्याग्रह, गांधी जी द्वारा हस्तक्षेप, राजकोट सत्याग्रह के सबक, हैदराबाद में जन आंदोलन– निजाम का

शासन, जागृति की शुरूआत, सत्याग्रह, द्वितीय विश्व युद्ध, किसान आन्दोलन, अंतिम चरण, सशस्त्र प्रतिरोध तथा भारतीय सेना द्वारा हस्तक्षेप।

द्वितीय विश्व युद्ध : कारण, विस्तार तथा परिणाम

कारण – वर्साय संधि और सतत राजनीतिक अव्यवस्था, आर्थिक मंदी का प्रभाव, जर्मनी में नात्सीवाद का उदय, मुसोलिनी और इटली का फासीवाद, जापान में सैन्यवाद का उदय, ब्रिटेन और फ्रांस की तुष्टीकरण की नीति। युद्ध की शुरूआत के कारण– जापान और पूर्वी एशिया में संकट की स्थिति, इटली द्वारा अबीसीनिया/इथोपिया पर आक्रमण (1935–1936), स्पेन का गृह युद्ध (1936–1939) विश्व युद्ध की ओर अग्रसर जर्मनी (1933–39)। द्वितीय विश्व युद्ध– आरंम्भिक स्थिति : जर्मनी की विजय, ठहराव की स्थिति : सोवियत रूस और अमेरिका का युद्ध में प्रवेश, रक्षात्मक स्थितिः धुरी राष्ट्रों की पराजय, धुरी राष्ट्रों का पीछे हटना और उनकी पराजय। द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम– भारतीय राजनीति पर प्रभाव, संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना, यूरोप और आर्थिक प्रभाव, शीत युद्ध की शुरूआत : नया विचारधारात्मक संघर्ष

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीय राष्ट्रवादः भारत छोड़ो आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज

1939 से 1941 तक – युद्ध के प्रति दृष्टिकोण, व्यक्तिगत सत्याग्रह, भारत छोड़ो आन्दोलन की ओर – क्रिप्स के प्रस्ताव, भारत छोड़ो आन्दोलन की पृष्ठभूमि, आंदोलन – आंदोलन का प्रसार, प्रतिक्रियाएं और प्रवृत्तियां, दमन, आजाद हिन्द फौज (इंडियन नेशनल आर्मी) – आजाद हिन्द फौज का निर्माण, आजाद हिंद फौज की कार्रवाइयाँ, प्रभाव।

स्वतंत्रता की ओर, 1945–1947 ई.

पृष्ठभूमि : भारत एवं राज– द्वितीय विश्व युद्ध, भारतीयों पर इसका

प्रभाव, द्वितीय विश्व युद्ध – अंग्रेज सरकार पर इसका प्रभाव, युद्ध का अंतः ब्रिटिश नीति, कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग, समझौते के प्रयास– शिमला कांफ्रेंस, लेबर पार्टी द्वारा सत्ता ग्रहण, चुनाव और केबिनेट मिशन, सांम्प्रदायिकता का ज्वार और अंतरिम सरकार, जन आंदोलन– प्रत्यक्ष टकराव, अप्रत्यक्ष टकराव,

साम्प्रदायिकता और भारत का विभाजन

पाकिस्तान बनने की पृष्ठभूमि–मुस्लिम लीग के स्वरूप में परिवर्तन, हिन्दू साम्प्रदायिकता का उग्रवादी चरण, अंग्रेजो की नीति। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की स्थितियॉ– शिमला कांफ्रेंस और चुनाव, कैबिनेट मिशन, अंतरिम सरकार की स्थापना, अंग्रेजों के वापस लौटने की समय सीमा का निर्धारण, तीन जून की योजना और इसका परिणाम। कांग्रेस और विभाजन। साम्प्रदायिक समस्या के प्रति कांग्रेस का रवैया– समझौते की नीति, बुनियादी असफलता।

लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की स्थापना

लोकतंत्र की अवधारणा : इतिहास – प्रारम्भिक उदारवादी, उदार लोकतंत्र की सीमाएं, भारत में लोकतांत्रिक विचारों और संस्थाओं का विकास– ब्रिटिशा शासन का प्रभाव, संविधान सभा की स्थापना, मूल अधिकारों और नीति निदेशक सिद्धान्तों का प्रश्न। लोकतांत्रिक राज्य की ओर– केन्द्र में संसदीय व्यवस्था, राज्य, निर्वाचन व्यवस्था, लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व की ओर, सीमाएं। संघीय राज्य व्यवस्था बनाम केन्द्रवाद : लोकतंत्रीय राज्य के विकल्प– संघवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विभाजन और संघवाद, प्रशासनिक और वित्तीय ढांचे की बाध्यताएं।

भारत में नियोजन और औद्योगीकरण

स्वतंत्रता के समय औद्योगिक संरचना–औपनिवेशिक शासन के तीन चरण, सीमान्त वृद्धि, दुर्बलताएं और बाधाएं। नियोजन की भूमिका से संबंधित प्रारम्भिक विचार, औद्योगिक विकास में घरेलू बाजार की

भूमिका– घरेलू बाजार की सीमाएं, बम्बई योजना। स्वातंत्र्योत्तर प्रारम्भिक प्रयास – औद्योगिक नीति प्रस्ताव 1948, औद्योगिक नीति प्रस्ताव 1956, प्रारम्भिक प्रयासों का मूल्यांकन। औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन। नियोजन और क्रियान्वयन के उद्देश्य – नियंत्रण और विनियमन की भूमिका, दूसरी योजना का प्रारूप। औद्योगिक संरचना, वृद्धि और नीति में परिवर्तन– वृद्धि दर में गिरावट, गिरावट के कारण, नीतिगत बाधाएं, संरचनागत बाधाएं, उद्योग का स्वामित्व और नियंत्रण – प्रारम्भिक एकाधिकार, एकाधिकार पर नियंत्रण के प्रयास, विदेशी पूंजी पर प्रतिबन्ध के प्रयास, लघु उद्योगों का विकास। उद्योग और नियोजनः एक मूल्यांकन।

नियोजन और भूमि सुधार

कृषि नीति और स्वतंत्रता आंदोलन, स्वतंत्रता एवं भूमि व्यवस्था, भूमि सुधारों का नियोजन– बिचौलियों का उन्मूलन, भूमि हदबन्दी, अन्य उपाय। भूमि सुधारों के सामाजिक परिणाम।

विदेश नीति– 1947–1964 ई.

भारतीय विदेश नीति के सिद्धान्त, भारतीय विदेश नीति का विकास, गुट निरपेक्ष आन्दोलन, निरस्त्रीकरण, पाकिस्तान– कश्मीर, सिंधु नदी जल विवाद, पाकिस्तान को सैन्य सहायता। चीन– तिब्बत विवाद, भारत चीन सीमा पर तनाव, 1962 का चीनी आक्रमण। दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया। पश्चिमी एशिया, बड़ी शक्तियॉ और अन्य प्रमुख शक्तियॉ– संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, आस्ट्रेलिया, अफ्रीकी देश।

धर्मनिरपेक्षताः सिद्धान्त और व्यवहार

धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा, धर्मनिरपेक्षता का उदय, धर्मनिरपेक्षता का स्वरूप, धर्मनिरपेक्ष राज्य और धर्मनिरपेक्ष विचारधारा की आवश्यकता। धर्मनिरपेक्षता का अर्थ और परिभाषा, भारतीय धर्मनिरपेक्षता का विकास– पारम्परिक समाज की बाधाएं, राष्ट्रवाद और धर्मनिरपेक्षताएं,

प्रारम्भिक संघटन की सीमाएं, गांधीवादी आदर्श, आमूल परिवर्तनकारी धर्मनिरपेक्षतावाद। स्वातंत्र्योत्तर भारत के लिए धर्मनिरपेक्षता का विकल्प (1947–1964), साम्प्रदायिकता की सम्पदा, धर्मनिरपेक्षता का भारतीय पक्ष, राजनीति में धर्म की निरन्तरताः एक बड़ी बाधा। भारतीय धर्मनिरपेक्षता का वैदिक आहार। धार्मिक स्वतंत्रताः एक मौखिक अधिकार, राज्य का दर्जा धर्म से ऊपर।

UGHY-03

कृषि अर्थव्यवस्था

कृषि विस्तार – भौगोलिक व कालानुक्रमिक प्रतिरूप, वैचारिक पृष्ठभूमि, कृषि संगठन– विभिन्न प्रकार की कृषि बस्तियों का स्वरूप तथा भूमिका, भूमि अधिकार। तकनीकी सुधार, ग्रामीण तनाव, विनिमय व्यवस्था में कृषकों की भूमिका, प्रारम्भिक कृषि अर्थव्यवस्था का स्वरूप।

शहरी बस्तियाँ

शहरी केन्द्रों का तात्पर्य और ढांचा, सामान्य प्रतिरूप, क्षेत्रीय विभिन्नता और प्रकार– ग्रामीण केन्द्रों का शहरी केन्द्रों में रूपांतरण, बाजार केन्द्र व्यापार तंत्र और चलता फिरता व्यापार, पवित्र/ तीर्थ स्थल, राजसी केन्द्र या राजधानियाँ।

वाणिज्य और व्यापार

व्यापारःपरिभाषा और चरण, पहला चरण (ईसवी 700–900) – विनिमय के माध्यम, व्यापार का सापेक्ष ह्रास, शहरी बस्तियों का ह्रास। दूसरा चरण (ईसवी 900–1300) – शिल्प और उद्योग, सिक्के तथा विनिमय के दूसरे माध्यम, व्यापार के पहलू– अंतर्देशीय व्यापार, समुद्री व्यापार, नगरों का पुनरूत्थान। सारांश।

व्यापारिक समुदाय और संगठन

व्यापारी एक कड़ी के रूप में, पहले दौर (ईसवी 700 से 900) में व्यापारियों की स्थिति। दूसरे दौर (ईसवी 900 से 1300) में व्यापारियों की स्थिति। व्यापारियों की सामाजिक भूमिका। व्यापारियों का संगठन– श्रेणियॉं, परिभाषा और कार्य, दक्षिण भारत में व्यापारिक श्रेणियों के संगठन, व्यापारी और कारीगरों के बीच संबंध।

सामाजिक संगठन

समाज के पुनर्निर्धारण के लिए स्रोत। ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण : बढ़ती

सामाजिक कट्टरता, असंतोष की अभिव्यक्ति। भौतिक आधार में परिवर्तन और नवीन सामाजिक व्यवस्था। नया सामाजिक वातावरण– कृषकों के रूप में शूद्रों का उदय, बंगाल तथा दक्षिण भारत में मध्यम वर्णों का अभाव, नव शिक्षित वर्ग का उदय, नई मिश्रित जातियों के उदय में अभूतपूर्व वृद्धि–ब्राह्मणों में, क्षत्रियों में, वैश्य एवं सूद्रों में। भूमि वितरण, सामंतीय पद तथा वर्ण विभेद, सामाजिक तनावों में वृद्धि।

विचारधारा

विचारधारा विविध दृष्टिकोण–विचारधारा ज्ञान की एक प्रणाली के रूप में, समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, मनो सांस्कृतिक दृष्टिकोण, धर्म, विचारधारा और समाज। विचारधारा : प्रारंभिक भारतीय परिवेश, विचारधारा – उत्तर गुप्त शताब्दियों में इसकी प्रकृति एवं भूमिका– भूमि अनुदानों का दर्शन, भक्ति एवं तीर्थयात्रा, तंत्रवाद, वीर स्तम्भ, धर्म विचारधारा के रूप में किसके लिए?

क्षेत्रीय सांस्कृतिक परम्पराओं का विकास

मंदिर स्थापत्य–प्रमुख शैलियां, देवी देवता, मंदिरों के आकार, योजना और शब्दावली, पारिस्थितिकी निर्माण सामग्री और क्षेत्रीयता, अलंकरण के स्वरूपों की भूमिका। भवन योजना और निर्माण, कालक्रमानुसार और भौगोलिक आधार पर मंदिरों का विस्तार, मंदिर और भारतीय सांस्कृतिक लोकाचार, मूर्तिकला, पत्थर और धातु की मूर्तियां, चित्रकला, मिट्टी की मूर्तियां और 'मध्यकालीन प्रभाव' शिक्षा दीक्षा, स्थानीय ऐतिहासिक अभिलेख और कालक्रम, नई धार्मिक प्रवृत्तियां।

क्षेत्रीय राजनीति की प्रकृति

प्रमख राजनीतिक घटनाक्रम– उत्तरी तथा पूर्वी भारत, पश्चिमी तथा मध्य भारत, दक्खन, दक्षिणी भारत, सन् 800–1300 ई. तक के राजनीतिक संगठन का पुनर्गठन – सामंतीय राजनीतिक संगठन, खण्डात्मक राज्य, एकीकृत राजनीति संगठन,

उत्तरी और पूर्वी भारत

क्षेत्र की परिभाषा, शक्तियों का विभाजनः राजा का नवीन स्वरूप, प्रशासनिक इकाइयों का विकास, प्रशासनिक एवं वित्तीय अधिकारों का हस्तांतरण, राजा बनाने में भू पतियों की भूमिका, रूपांतरित नौकरशाही–अधिकारी, भू पति एवं भूमि, सामन्तों का पदानक्रम, नौकरशाही का सामंतीकरण, भू स्वामित्व एवं वंश का महत्व, सामंतों का कार्य, सामंतों के आंतरिक संबंध, भूमि अनुदान एंवं उनकी वैधता।

पश्चिमी तथा मध्य भारत

राजपूत वंशों का उदय, उत्पत्ति की कथायें, उनके राजनीतिक परिणाम, राजनीतिक सत्ता का वितरण– राजपूत वंशों की वृद्धि, वंशीय शक्ति का निर्माण, सामाजिक स्तर में उत्थान की प्रक्रिया, वंशीय शक्ति का सुदृढ़ीकरण, राजनीतिक संगठन की प्रकृति एवं ढांचा–राजनैतिक अस्थिरता, नौकरशाही का ढांचा, वंशीय राज्य एवं सामंतीय राजनीति।

दक्खन

क्षेत्र का निर्धारण, राजनीतिक सत्ता का निर्माणःऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शासक परिवारों का उद्‌भव एवं प्रसार, राजवंश और उनके क्षेत्र, शासक वंशों के उद्‌भव के प्रतिमान, वंशावली की काल्पनिक संरचना, सत्ता के प्रतीक, अंतर वंशीय तंत्र, भूमि और सत्ता के विसर्जित केन्द्रों एवं स्तरों का एकीकरण, नौकरशाही का ढांचा, राज्य के संसाधनों का आधार, दक्खन की राजनीति में राजनैतिक अस्थिरता।

दक्षिण भारत

क्षेत्र, राजनीतिक शक्तियों का उदय, दक्षिण भारतीय राजनीतिक संगठन पर विभिन्न दृष्टिकोण, उप क्षेत्रीय राजनीति, कृषि व्यवस्था एवं राजनीतिक संगठन, नाडू, ब्रह्मदेव, वालानाडू, मंदिर, नगरमः बाजार केन्द्र, कर व्यवस्था, नौकरशाही, सैन्य संगठन, नियंत्रण की व्यवस्थाएं, दक्षिण भारतीय राजनीति के वैचारिक आधार,

मध्य एशिया और तुर्कों एवं मंगोलों का उदय

मध्य एशिया– मध्य एशियाःविस्तृत विवरण, मध्य एशियाःलधु क्षेत्रों का जमाव, चरागाही खानाबदोश, सभ्यता और तुर्की खानाबदोशः प्रारम्भिक संपर्क, तिउकिउ साम्राज्य, दो प्रकार के संपर्क, तुर्की आक्रमण, मंगोल, चंगेज खॉ और स्टेप्स के (घास स्थलीय) कुलीन तंत्र, विजयें और विस्तार।

दिल्ली सल्तनत की स्थापना

भारत : 7वीं सदी ई. से 12वीं सदी ई. तक– एक रूपरेखा, प्रारम्भिक विजयेंःलगभग 1190 ई0 तक, गौरी के आक्रमणः सन 1192 ई. – 1206 ई. तक, तुर्कों की सफलता के कारण, संघर्ष एवं सुदृढ़ीकरणः सन 1206 से 1290 ई. तक, मंगोल समस्या, भारत में तुर्की विजय के राजनीतिक परिणाम।

क्षेत्रीय प्रसार

खलजी शासन का प्रसार, पश्चिम तथा मध्य भारत, उत्तर पश्चिम तथा उत्तर भारत, दक्खन एवं दक्षिण की ओर प्रसार, तुगलक शासन का प्रसार, दक्षिण भारत, पूर्वी भारत, उत्तर पश्चिम तथा उत्तर।

सल्तनत कालीन प्रशासन

दिल्ली सल्तनत और खिलाफत, दिल्ली सल्तनत की प्रकृति, केन्द्रीय प्रशासन – सुल्तान, विजारत (वित्त) दीवान–ए–अर्ज, अन्य विभाग, दास और कारखाने, राजस्व प्रशासन, इक्ता व्यवस्था और प्रांतीय प्रशासन, इक्ता व्यवस्था, प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन।

सल्तनत कालीन शासक वर्ग का संघटन

गौरी के आक्रमण के समय का शासक वर्ग, शासक वर्ग की संरचना, इलबरी, खलजी, तुगलक, इक्ता और शासक वर्ग में संसाधनों का वितरण, उलेमा।

समस्या, संकट और ह्रास

राजाओं का संकट, सुल्तान के कार्यो का ह्रास और संकट, राजस्व प्रशासन का संकट, समग्र राज्य का ह्रास।

राज्य और अर्थव्यवस्था

राजस्व साधनों का विवरण, इक्ता और खालिसा, इक्ता व्यवस्था का संचालन, भूमि अनुदान, भू राजस्व एवं उसकी वसूली, अलाउद्दीन खलजी की कृषि नीति, मोहम्मद तुगलक की कृषि नीति। अलाउद्दीन खलजी का बाजार निंयंत्रण, मुद्रा प्रणाली, दास प्रथा और दास व्यापार।

कृषि व्यवस्था

कृषि उत्पादन, फसलें तथा अन्य कृषि उत्पादन, नहर सिंचाई व्यवस्था और इसका प्रभाव, कृषि संबंध, कृषक, ग्रामीण मध्यम वर्ग।

नगरीय अर्थव्यवस्था का उदय तथा व्यापार और वाणिज्य

नगरों का विकास, नगरीय उत्पादन, व्यापार तथा वाणिज्य, आंतरिक व्यापार, विदेशी व्यापार : समुद्री व स्थल, व्यापार से संबंधित वर्ग। परिवहन।

तकनीकी और दस्तकारी

कृषि तकनीकी, हल, बोआई, फसल कटाई, गुहाई और ओसाई, सिंचाई के साधन, वस्त्री तकनीकी, ओटाई, धुनाई और कताई, बुनाई, रंगाई और छपाई, भवन निर्माण, चूना गारा, मेहराब और गुंबद मेहरावी छत, कागज निर्माण और जिल्दसाजी, सैन्य तकनीकी, रकाब, नाल, बारूद और अग्नि शस्त्र, कलई, कॉच निर्माण, जहाज निर्माण, आसवन।

मध्य एवं पूर्वी भारत

मालवा, जौनपर, बंगाल, आसाम, कमाटा कामरूप, अहोम, उड़ीसा।

उत्तरी एवं पश्चिमी भारत

कश्मीर, उत्तर पश्चिम, राजपूताना, गुहिल एवं सिसोदिया, बागड़ के गहलौत, मारवाड़ के राठौर, छोटे राजपूत राज्य, गुजरात, मालवा के साथ संबंध, राजपूताना के साथ संबंध, बहमनी तथा खानदेश के साथ संबंध, सिन्ध।

उत्तर भारत में राज्य, प्रशासन और अर्थव्यवस्था

उत्तर भारत में क्षेत्रीय राज्यों की चरित्रगत विशेषताएं, उत्तराधिकारी राज्यों के रूप में उत्तर भारतीय राज्य, उत्तराधिकार का प्रश्न, वैधता का मामला, प्रशासनिक ढांचा, राजस्व प्रशासन, सामंत और भूमिधर कुलीन वर्ग, अर्थव्यवस्था।

दक्खन और दक्षिणभारत में क्षेत्रीय शक्तियॉ

चार प्रमख राज्य, यादव और काकतीय, पांडय और होयसल, चार राज्यों के मध्य संघर्ष, दक्षिणी राज्य और दिल्ली सल्तनत, प्रथम चरणः अलाउद्दीन खलजी का दक्षिण आक्रमण, द्वितीय चरण, प्रशासन और अर्थव्यवस्था, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, स्वतंत्र राज्यों का उदय।

विजयनगर साम्राज्य

स्थापना और दृढ़ीकरण, प्रारम्भिक काल 1336–1509 कृष्ण देव राय 1509–29, अस्थिरता का युग 1529–42, पुर्तगाली, सुदूर दक्षिण के साथ विजयनगर के संबंध, दक्खन के मुस्लिम राज्य, धर्म और राजनीति, प्रतीकात्मक राजत्व, ब्राह्मणों की राजनीतिक भूमिका, राजाओं, संप्रदायों और मंदिरों के मध्य संबंध, स्थानीय प्रशासन, नायनकार व्यवस्था, आयगार व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, भूमि एवं आय संबंधी अधिकार, मंदिरों की आर्थिक भूमिका, विदेशी व्यापार, आंतरिक व्यापार और नगरीय जीवन, सामाजिक व्यवस्था।

बहमनी राज्य

बहमनी शक्ति का उदय, विजय तथा सुदृढ़ीकरण, प्रथम चरण 1347–1422, द्वितीय चरण 1422–1538, अफाकियों और दक्खनियों के

मध्य संघर्ष एवं सम्राट के साथ उनके संबंध, केन्द्रीय एवं प्रान्तीय प्रशासन, सैन्य संगठन, अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था और संस्कृति।

सामाजिक – धार्मिक आंदोलन : भक्ति आन्दोलन

दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि, उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन, भक्ति आंदोलन का उदय, भक्ति आंदोलन के उदय के राजनीतिक कारण, सामाजिक आर्थिक कारण, प्रमुख लोकप्रिय आंदोलन और उनकी विशेषताएं, उत्तर भारत का एकेश्वरवादी आंदोलन, समान स्वरूपगत विशेषताएं, उत्तर भारत में वैष्णव भक्ति आंदोलन, बंगाल में वैष्णव भक्ति आंदोलन, महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन, अन्य प्रदेशों में भक्ति आन्दोलन, अन्य परम्पराओं और आन्दोलनों का प्रभाव, लोकप्रिय एकेश्वरवादी संत और रामानंद, एकेश्वरवादी संतों पर नाथपंथी आंदोलन का प्रभाव, इस्लामी मत का प्रभाव और सूफी मत की भूमिका, हिन्दूवाद को इस्लाम की चुनौती का सिद्धान्त ।

सामाजिक–धार्मिक आंदोलन : सूफी आंदोलन

सूफी मत की विशेषताएँ, मुस्लिम देशों में सूफी आंदोलन का विकास, आरंम्भिक चरण (10वीं शताब्दी तक), संगठित सूफी आंदोलन का विकास (10वीं–12वीं शताब्दी), सूफी संप्रदायों या सिलसिलों की स्थापना (12वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और तेरहवीं शताब्दी), भारत में सूफी मत का विकास, भारत में सल्तनत काल के सूफी सिलसिले, सुहरावर्दी सिलसिला, चिश्ती सिलसिला, अन्य सूफी सिलसिले, चिश्ती सिलसिले की लोकप्रियता के कारण, सूफियों की सामाजिक भूमिका, सूफी और राज्य, सूफी और उलेमा, सूफी और धर्म परिवर्तन, खानकाहों में भौतिक जीवन, भारतीय सूफी मत पर समकालीन मुस्लिम देशों के रहस्यवादी विचारों का प्रभाव, सूफी और भक्ति आंदोलन और सांस्कृतिक समन्वय।

दिल्ली सल्तनत की कला एवं वास्तुकला

वास्तुकला, नए संरचनात्मक रूप, शैलीगत विकास, सार्वजनिक भवन

एवं सार्वजनिक कार्य, चित्रकला, भित्ति चित्रों के साहित्यिक प्रमाण, कुरान लिखने की सुलेखन कला, पांडुलिपि चित्रण।

क्षेत्रीय राज्यों में कला एवं वास्तुकला

वास्तुकला, पूर्वी भारत, पश्चिमी भारत, मध्य भारत, दक्खन, विजयनगर, चित्रकला, पश्चिम भारतीय शैली, चौरपंचशिका शैली, प्रांतीय राजवंश, दक्खनी चित्रकला।

भाषा और साहित्य

संस्कृत साहित्य, अरबी साहित्य, फारसी साहित्य, प्रारंभिक काल, अमीर खुसरो का योगदान, अन्य फारसी कवि, फारसी में ऐतिहासिक लेखन, फारसी में सूफी साहित्य, संस्कृत कृतियों का फारसी अनुवाद, क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य, क्षेत्रीय भाषाओं के विकास की सामाजिक पृष्ठभूमि, उत्तर भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य, हिन्दी साहित्य का विकास, उर्दू भाषा की उत्पत्ति और विकास, पंजाबी साहित्य, बंगाली साहित्य, असमी साहित्य, उड़िया साहित्य, मराठी साहित्य, गुजराती साहित्य, दक्षिण भारतीय भाषाओं में साहित्य, तमिल साहित्य, तेलुगु साहित्य, कन्नड़ साहित्य, मलयालम साहित्य।

जीवन शैली और संस्कृति

1200 ई. के पूर्व जीवन, नया शासक वर्ग, नए शासक वर्ग की सैद्धान्तिक बनावट, उपभोग का राजसी तरीका, धार्मिक अभिजात वर्ग, राजनीतिक अभिजात वर्ग, जनता की जीवन शैली, महिलाओं की दशा, गुलाम और अन्य सेवक, शहरी जीवन, ग्रामीण जीवन, किसान, किसानों के घर, खेल और मनोरंजन।

UGHY-04

मध्य और पश्चिम एशिया में राजनैतिक संघटन

तूरान और ईरान की भौगोलिक सीमा, उजवेगों और गफदियों का पूर्ववर्ती इतिहास, मध्य एशिया में राजनैतिक संघटन के समय का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, ट्रांसआक्सियाना में उजबेग सत्ता की स्थापना, उजबेगो, फ्रांसीसियों और तैमूरों के बीच विपक्षीय संघर्ष, उजबेग सत्ता का पुनः उदय, उजबेग साम्राज्य, सफवियों का उद्‌भव : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, अक क्युयूनलू और कण क्युयूनलू, तुर्कमान और सफवी, शियावाद और सफवी, सफवी और उजबेग आन्दोलन।

उत्तर भारत में राजनीति और अर्थव्यवस्था

लोदी साम्राज्य, सिकन्दर लोदी, इब्राहीम लोदी, मुगल सत्ता की स्थापना, दूसरा अफगान साम्राज्य, प्रशासनिक ढांचा, राजत्व की प्रकृति, प्रशासन व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, कृषीय ढांचा, इक्ता व्यवस्था, नगरीकरण।

दक्खन तथा दक्षिण भारत में राजनीति और अर्थव्यवस्था

भौगोलिक विन्यास, दक्खन में राजनैतिक संरचनाएं, दक्षिण भारत में राजनैतिक संरचनाएं, नायक राज्यों का उदय, मालाबार में स्थित राज्य, राज्य व्यवस्था की प्रकृतिः विभिन्न दृष्टिकोण, प्रतिष्ठित शासक वर्ग, अर्थव्यवस्था।

एशिया की व्यापारिक गतिविधियाँ और पुर्तगालियों का आगमन

कारखाने, किले और वाणिज्यिक व्यवस्थाएं, निर्यात और आयात की वस्तुएँ, मालाबार और कोंकण तट, उत्तर पश्चिमी भारत, पूर्वी तट, दक्षिण पूर्व एशिया, पुर्तगाली व्यापार के लिए पूँजी निवेश, यूरोपीय पूंजी निवेशक, भारतीय व्यापारी और शासक, भारत के साथ पुर्तगाली व्यापार की प्रकृति, एकाधिकार व्यापार, भारतीय शासकों और व्यापारियों द्वारा व्यापार, व्यापार और उत्पादन।

मुगल साम्राज्य का विकास : 1526

बाबर के आक्रमण की पूर्व संध्या पर राजनैतिक स्थिति, मध्य एशिया तथा बाबर, भारत में मुगल शासन की स्थापना, बाबर तथा राजपूत राज्य, बाबर तथा अफगान सरदार, हुमायूँ– बहादुर शाह तथा हुमायूँ, पूर्वी अफगान तथा हुमायूँ, हुमायूँ एवं उसके भाई। भारत में द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापनाः 1540–1555 भारत में मुगल शासन की पुनः स्थापना।

विस्तार और सुदृढीकरण : 1556–1707 ई.

सत्ता की राजनीति और बैरम खाँ का संरक्षण : 1556–1560 ई., अकबर के अधीन क्षेत्रीय प्रसार, उत्तर भारत तथा मध्य भारत, पश्चिम भारत, पूर्वी भारत, 1581 ई. के विद्रोह, उत्तर पश्चिम में विजय, दक्खन तथा दक्षिण। प्रशासनिक पुनर्गठन, अकबर के उत्तराधिकारियों के अधीन क्षेत्रीय प्रसार, स्वायत्त सरदारों के प्रति नीतियां।

मध्य एशिया और ईरान के साथ संबंध

विश्व एवं क्षेत्रीय अवधारणा, उजबेगों के साथ संबंध, बाबर और हुमांयू, अकबर, जहॉगीर, शाहजहॉ, ईरान के साथ संबंध, बाबर तथा हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहॉ, दक्खनी राज्य एवं ईरानी मुगल दुविधा, औरंगजेब तथा उत्तर पश्चिमी सीमा।

अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा

अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, बाह्य संबंध, आपसी संबंध, विजयनगर से संबंध, मराठों से संबंध, यूरोपवासियों से संबंध। प्रशासनिक संरचना, शासक वर्ग, केन्द्रीय प्रशासन, प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन।

दक्खनी राज्य और मुगल

अकबर और दक्खन राज्य, जहांगीर और दक्खन राज्य, शाहजहॉ और

दक्खन राज्य, औरंगजेब और दक्खन राज्य, मुगलों की दक्खनी नीति का मूल्यांकन।

सत्रहवीं शताब्दी में मराठा राज्य का उदय

स्रोत और भूगोल, मराठा शक्ति का उदयः सैद्धान्तिक ढॉचा, मराठा शक्ति का उदय : राजनैतिक व्यवस्था, शाहजी, शिवाजीः आरम्भिक जीवन, मुगल–मराठा संबंध : एक विश्लेषण, प्रथम चरण 1615–1664, द्वितीय चरण 1664–1667, तृतीय चरण 1667–1680, चतुर्थ चरण 1680–1707, मराठा और जजीरा के सिद्दी, मराठा, अंग्रेज और पुर्तगाली, मराठों की प्रशासनिक संरचना– केन्द्रीय प्रशासन, प्रान्तीय प्रशासन, सैनिक प्रशासन, नौ सेना, न्याय प्रणाली।

राजपूत राज्य

पृष्ठभूमिः बाबर, हुमायूँ और राजपूत, राजपूतों के साथ अकबर का संबंध। प्रथम चरण, द्वितीय चरण, तृतीय चरण। राजपूत राज्य (राजस्थान) – अजमेर(जयपुर), मारवाड़ (जोधपुर),बीकानेर, मेवाड़, जैसलमेर, बूंदी और कोटा। मध्य भारत में राजपूत राज्य, अन्य राजपूत राज्य, बगलाना और इदार, पहाड़ी राजपूत राज्य। सत्रहवीं शताब्दी में मुगल राजपूत संबंध।

मुगल संप्रभुता की संकल्पना

पुष्ठभूमि,मध्य एशियाई राज्य व्यवस्था की प्रकृति : तुर्क मंगोल प्रभाव। तुरा का प्रभाव, संप्रभुता संबंधी तुर्क मंगोल अवधारणा, राजनैतिक ढांचे की प्रकृति, उत्तराधिकार नियम, केन्द्र राज्य संबंध, कुलीन वर्ग। राज्य संबंधी मुगल सिद्धान्तः विकास– बाबर और हुमांयूँ, अकबर ।

मुगल शासक वर्ग

बाबर और हुमायूँ के अधीन शासक वर्ग, अकबर के अधीन विकास, मुगल शासक वर्ग का संघटन– प्रजातीय और धार्मिक समुदाय, विदेशी तत्व–तुरानी और ईरानी, अफगान, भारतीय मुसलमान, राजपूत और

अन्य हिन्दू, मराठे और अन्य दक्खनी। शासक वर्ग का संगठन, शासक वर्ग के बीच राजस्व स्रोतों का बटवारा, शासक वर्ग की जीवन पद्धति।

मुगल प्रशासनः केन्द्रीय, प्रांतीय और स्थानीय

शेरशाह के अधीन प्रशासन, केन्द्रीय प्रशासन का विकास, सम्राट, वकील और वजीर, दीवाने कुल, मीर बख्शी, मीर सामां या खान सामाँ, सद्रउस सुदूर। प्रांतीय प्रशासन– प्रांतीय गर्वनर, दीवान, बख्शी, दरोगा–ए डाक और गुप्तचर सेवा। स्थानीय प्रशासन– सरकार, परगना प्रशासन, थानेदार। नगर, किला और बन्दरगाह प्रशासन– कोतवाल, किलेदार, बन्दरगाह प्रशासन। मुगल प्रशासन की प्रकृति ।

मुगल प्रशासनः मनसब और जागीर

मनसब व्यवस्था, दोहरा पदः जात और सवार, मनसबदारों की तीन श्रेणियॉ, मनसबदारों की नियुक्ति और पदोन्नति, सेना का रखरखाव और भुगतान। अधिग्रहण व्यवस्था। मनसबदारों का संघटन– जागीर व्यवस्था– आरंम्भिक चरण, जागीर व्यवस्था का संगठन, जागीरों के विभिन्न प्रकार, जागीरों का प्रबंधन।

मुगल भू–राजस्व व्यवस्था

भू–राजस्व निर्धारण प्रणाली, भूराजस्व माँग का परिमाण, भुगतान का माध्यम, भू राजस्व वसूली, राजस्व में रियायतें, भू राजस्व प्रशासन।

कृषि सम्बन्ध : मुगलकालीन

राजस्व अधिन्यासी और अनुदान प्राप्तकर्ता, जमीदार–जमीदारों के अधिकार, जमीदारों की सैन्य शक्ति, चौधरी, अन्य मध्यस्थ। कृषक वर्ग– कृषक वर्ग के भूमि संबंधी अधिकार, कृषक वर्ग का स्तरीकरण, ग्रामीण समुदाय। कृषक वर्गों के अन्तर्सम्बन्ध।

भू–राजस्व व्यवस्था : मराठा, दक्खन और दक्षिण भारत

भू–राजस्व व्यवस्था : मराठा और दक्खनी राज्य, कर निर्धारण विधि,

भूराजस्व मांग निर्धारण, भू राजस्व वसूली के तरीके, राजस्व की ठेकेदारी,स्वायत्त शासक, राज्य और किसान, भूराजस्व के अतिरिक्त अन्य कर, दक्षिण भारत में भू राजस्व व्यवस्था, नायक राज्य, मालाबार राज्य, भूराजस्व के अतिरिक्त अन्य कर।

कृषि संबंध : दक्खन और दक्षिणी भारत

मध्यकालीन दक्खनी गांव : विशेषताएं, भू स्वामित्व, भूमि सम्बन्धी अधिकारों के प्रकार, मिरासी अधिकार, इनाम अधिकार, राज्य की भूमि (राजा की भूमि), बंजर भूमि या लुप्त परिवारों की भूमि। ग्रामीण समुदाय– सिद्धांत, किसान, गोत सभा या मजलिस, वतन व्यवस्था– बलूतेदार, सामंतवाद, दक्षिण भारतःकृषि संरचना, भूमि सम्बन्धी अधिकारों की प्रकृति।

वित्तीय और मौद्रिक प्रणाली

वित्तीय व्यवस्था, भूराजस्व के अतिरिक्त अन्य कर, वसूली का तरीका, मौद्रिक व्यवस्था, मुद्रा प्रणाली, ढलाई व्यवस्था। कीमतें।

कृषि उत्पादन

खेती का विस्तार, खेती और सिंचाई के साधन, खेती के साधन और तरीके, सिंचाई के साधन, कृषि उत्पाद– खाद्यान्न उत्पादन, नगदी फसल, फल सब्जी और मसाले, उत्पादकता और उपज, पशु और पशुधन।

गैर–कृषि उत्पादन

कृषि आधारित उत्पादन, वस्त्र उद्योग, नील, चीनी, तेल आदि, खनिज खनन और धातु– खनिज उत्पादन, धातु, काष्ट आधारित शिल्प, अन्य शिल्प। उत्पादन का संगठन।

आंतरिक और विदेशी व्यापार

आंतरिक व्यापार, स्थानीय और प्रांतीय व्यापार, अंतरप्रांतीय व्यापार,

तटीय व्यापार, विदेशी व्यापार, व्यापार मार्ग और यातायात के साधन, प्रशासन और व्यापार।

व्यापार के कार्मिक, और वाणिज्यिक गतिविधियॉं

व्यापार के कार्मिक– व्यापारी, महाजन और सर्राफ, दलाल, वाणिज्यिक गतिविधियां–हुंडी, बैंकिंग, सूदखोरी और ब्याज की दर, भागीदारी, बीमा। व्यापारी, व्यापारिक प्रतिष्ठान और राज्य।

यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियां

यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियां और भारत : 1600–1750– डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी, इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी, फ्रांसीसी ईस्ट इंण्डिया कम्पनी, अन्य यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियां। कारखाने और उनका संगठन– डच, इंग्लिश, फ्रांसीसी। यूरोपीय कम्पनियों का अपने पैतृक देश से सम्पर्क और उनका नियंत्रण– डच, इंग्लिश, फ्रांसीसी। भारतीय शासन और यूरोपीय कम्पनियां – डच, इग्लिश, फ्रांसीसी।

मुगलकालीन भारत की जनसंख्या

मुगलकालीन भारत की जनसंख्या का आकलन, कृषि के अधीन भूमि के आधार पर, नागरिकः सैनिक अनुपात के आधार पर, कुल और प्रति व्यक्ति भू–राजस्व के आधार पर, जनसंख्या वृद्धि की औसत दर, समकालीन यूरोप से तुलना, वृद्धि दर के प्रभाव,ग्रामीण और शहरी जनसंख्या का संघटन।

ग्रामीण वर्ग तथा जीवन शैली

ग्रामीण समाज की संरचना, जीवन स्तर, वस्त्र, रहन सहन और आवास, खान पान। सामाजिक जीवन– पारिवारिक जीवन, सामाजिक संस्थाएं एवं रीति रिवाज, त्योहार और मनोरंजन।

शहरीकरण, शहरी वर्ग तथा जीवन शैली

परिप्रेक्ष्य, शहरी परिदृश्य, भौतिक विन्यास, शहरी जनसंख्या की

संरचना, शहरी जनसांख्यिकी, शहरी जीवन, जीवन स्तर, सामाजिक जीवन, मनोरंजन और आमोद प्रमोद।

धार्मिक विचार और आंदोलन

भक्ति आंदोलन का प्रभाव, विचारधारा, प्रमुख मत, भक्ति आन्दोलन का प्रभाव, रहस्यवाद, सूफी दर्शन, सैद्धान्तिक ग्रन्थ, प्रमुख सिलसिले, महदवी आन्दोलन, 18वीं शताब्दी में पुनर्रूत्थानवादी इस्लामी आन्दोलन।

राज्य और धर्म

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, समकालीन इतिहास लेखन, आधुनिक इतिहास लेखन, धर्म के प्रति मुगल शासकों का दृष्टिकोण, अकबर, जहांगीर, शाहजहॉ, औरंगजेब।

भारतीय भाषाएँ और साहित्य

अरबी और फारसी, संस्कृत, उत्तर भारत, हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, पश्चिमी भारत– गुजराती, मराठी, पूर्वी भारत– बंगला, असमी, उड़िया। दक्षिणी भारतीय भाषाएं– तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम।

विज्ञान और तकनीकी

विज्ञान, कृषि तकनीकी, वस्त्र उद्योग तकनीकी, सैन्य तकनीकी, जहाज निर्माण, धातुशोधन तकनीकी, कॉच निर्माण तकनीकी, मुद्रणालय, समय मापन पद्धतियाँ, विविधा।

स्थापत्य

मगल स्थापत्य की शुरूआत, बाबर की इमारतें, हुमायूँ की इमारतें, शासनांतराल : सूर स्थापत्य, अकबरकालीन स्थापत्य, संरचनात्मक स्वरूप, भवन परियोजनाएं, जहांगीर और शाहजहांकालीन स्थापत्य, प्रमुख विशेषताएं, प्रमुख इमारतें, अंतिम चरण– औरंगजेब की इमारतें, सफदर जंग का मकबरा।

चित्रकला और ललित कलाएं

पृष्ठभूमि–पन्द्रहवीं शताब्दी में चित्रकला, आरंम्भिक मुगलकालीन चित्रकला, अकबर के शासनकाल में मुगल शैली का विकास, राजकीय चित्रशाला की स्थापना, शैली और तकनीक, मूलभूत विशेषताएं, जहांगीर और शाहजहां के शासनकाल में विकास, नयी शैलियों का उदय, विषयगत भिन्नताएं, अंतिम चरण, मुगल चित्रकला पर यूरोप का प्रभाव, दक्खन में चित्रकला, दरबारी संरक्षण, शैली और विषय, राजपूत चित्रकला, शैली और विषय, मुख्य केन्द्र। मुगलकालीन ललित कलाएं, संगीत, नृत्य और नाटक।

मुगल साम्राज्य का पतन

साम्राज्य केन्द्रित दृष्टिकोण, जागीरदारी संकट, कृषि व्यवस्था का संकट, ''संकट''का पुर्नपरीक्षण, क्षेत्र केन्द्रित दृष्टिकोण, केन्द्र क्षेत्र संबंध, क्षेत्रीय राजनीति का स्वरूप, अवलोकन ।

क्षेत्रीय शक्तियों का उदय

क्षेत्रीय शक्तियों के उदय संबंधी ऐतिहासिक दृष्टिकोण, उत्तराधिकारी राज्य, अवध, बंगाल, हैदराबाद, नये राज्य– मराठा, पंजाब, जाट राज्य। स्वतंत्र राज्य – मैसूर, राजपूत राज्य , केरल। क्षेत्रीय शक्तियों की प्रकृति।

UGHY-05

18वीं शताब्दी के मध्य की भारतीय राजनीति

अठारहवीं सदी : एक अंधकारमय युग? मुगल साम्राज्य का पतन– आंतरिक कमजोरियॉ, सत्ता के लिए संघर्ष, बाह्य चुनौतियॉ, पतन– कुछ व्याख्यायें, मुगल परम्पराओं की निरन्तरता, क्षेत्रीय राजनैतिक व्यवस्थाओं का उदय, उत्तराधिकारी राज्य, नवीन राज्य, स्वतंत्र राज्य, क्षेत्रीय राजनीति की कमजोरियॉ, ब्रिटिश शक्ति का उदय, व्यापारिक कम्पनी से राजनैतिक शक्ति तक, दक्षिण भारत में आंग्ल फ्रांसीसी संघर्ष, बंगाल की विजयः प्लासी से बक्सर तक, राजनैतिक व्यवस्था का पुनर्गठन।

बंगाल और अवध

मुगलों के अधीन बंगाल और अवध, बंगालःस्वायत्तता की ओर, मुर्शिद कुली खॉ और बंगाल, शुजाउद्दीन और बंगाल, अलीवर्दीखॉ और बंगाल, बंगालःपराधीनता की ओर, प्लासी और उसके बाद, बक्सर और उसके बाद, अवधः स्वायत्तता की ओर, सआदत खॉ और अवध, सफदर जंग और अवध, शुजाउद्दौला और अवध, अवध पराधीनता की ओर, अवध : 1764–1775, अवधः 1775–1797, अवध : 1797–1856, क्षेत्रीय राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप।

मराठा राज्य व्यवस्था

मराठा राजनीतिक व्यवस्था के स्वरूप पर इतिहासकारों का मत, मराठा राज्य संघ, राजा और पेशवा, नागपुर के भोंसले, बड़ौदा के गाायकवाड़, इंदौर के होल्कर, ग्वालियर के सिंधिया। संस्थागत विकास– प्रशासनिक संरचना, दीर्घकालिक प्रवृत्तियॉ, समाज और अर्थ व्यवस्था, खेतिहर समाज, नगदी व्यवस्था, अन्य राज्यों के साथ मराठों के संबंध। बंगाल, हैदराबाद, मैसूर, राजस्थान, मुगल शासक, ईस्ट इण्डिया कम्पनी।

मैसूर और हैदराबाद

युद्ध और सैन्यीकरण, स्थानीय सरदार, 18वीं शताब्दी के प्रयास, प्रशासन, वित्त, भूमि से प्राप्त राजस्व, व्यापार से प्राप्त राजस्व, हैदराबाद, भू राजस्व प्रणाली, संरक्षक और उनके आश्रित, स्थानीय सरदार, वित्तीय और सैनिक समूह, प्रशासनिक प्रणाली।

पंजाब

स्वायत्तता से पूर्व पंजाब की राजनीति, सिक्ख धर्मः धार्मिकता से राजनैतिक पहचान तक, सिक्ख राज्य का उदय, सिक्ख राज्य और अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी, राज्य का संगठन, क्षेत्रीय प्रशासन, राजस्व प्रशासन, सिक्ख राजनीति का चरित्र।

वाणिज्यिक से औद्योगिक पूंजीवाद की ओर बढ़ता यूरोप

सामंतवादी यूरोप, नये विचार : पुर्नजागरण और सुधार, भौगोलिक खोजें और पारसमुद्रीय उपनिवेशीकरण, सोलहवीं शताब्दी का इंग्लैण्डः परिवर्तन के दौर, व्यापारिक पूंजी के दौरान उत्पादन, व्यापार के तरीके और संगठन, वाणिज्यवाद, मूल्य वृद्धि और संकट, इंग्लैण्डःऔद्योगीकरण की ओर, औद्योगिक क्रान्ति, औद्योगिक पूंजीवाद की ओर।

यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियाँ

पृष्ठभूमि। अफ्रीका और अमेरिका की ओर, एशिया की ओर, पुर्तगाली आक्रमण, पुर्तगाली साम्राज्य का पतन, डचों का उदय, अंग्रेजों की सफलता, पुर्तगालियों और डचों के साथ अंग्रेजों की दुश्मनी, फ्रांसीसी औपनिवेशिक महत्वकांक्षा, यूरोपीय व्यापार कीसंरचना और तरीके। भारत पर कब्जा जमाने का प्रयत्न। औद्योगिक पूंजीवाद और साम्राज्यवाद।

बक्सर के युद्ध तक पूर्वी भारत में ब्रिटिश

ब्रिटिश विजय से पूर्व का बंगाल, बंगाल की ब्रिटिश विजयः 1757–65,

सिराजुद्दौला और ब्रिटिश, मीर जाफर और अंग्रेज, मीर कासिम और अंग्रेज, मीर कासिम के पश्चात, राजनीतिक रूपान्तरण की व्याख्या, अंग्रेजों की सफलता का महत्व।

दक्षिण भारत में संघर्ष और विस्तार

भारत में अंग्रेज और फ्रांसीसियों की शक्ति और कमजोरियां, प्रथम कर्नाटक युद्ध– 1740–48, कर्नाटक के नवाब की भूमिका, फ्रांसीसी एडमिरल द्वारा डुप्ले को चुनौती, प्रथम कर्नाटक युद्ध में फ्रांस की बेहतर स्थिति, द्वितीय कर्नाटक युद्ध– 1751–55, कर्नाटक और हैदराबाद में गद्दी के लिए संघर्ष, डूप्ले का हस्तक्षेप, अंग्रेजों का प्रवेश, डूप्ले की वापसी, फ्रांसीसी प्रभाव हैदराबाद तक सीमित, तृतीय कर्नाटक युद्ध– 1758–63, कर्नाटक में फ्रांसीसी आक्रमण, फ्रांसीसी सेना के समस्याएं, नौसेना पराजय, वाडीवाश का युद्ध, फ्रांसीसी असफलता के कारण, बाद की स्थिति।

आंग्ल–मराठा और मैसूर युद्ध

भारतीय राज्यों और ब्रिटिश शक्ति के बीच सर्वोच्चता के लिए संघर्ष, मैसूर युद्ध, मराठा युद्ध, भारतीय राज्यों की असफलता के कारण,

उत्तर भारत में ब्रिटिश विस्तार

मुगल साम्राज्य का पतन और उत्तर भारत में विभिन्न राज्यों का उदय, अवधः सहायक सन्धि से विलय तक, ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सहायक संधि से लाभ, कंपनी द्वारा कब्जा और अवध राज्य का प्रतिरोध : 1765–1775 ई. अवध प्रतिरक्षा का दुर्बल होनाः 1775–1801, की सन्धि, अवध राज्य की अवनति और पतनः 1801–1856, उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों में विस्तार, पंजाब पर अंग्रेजों की निगाह, पंजाब पर कब्जा करने का तरीका।

भारतीय सीमाओं के बाहर ब्रिटिश प्रसार

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापार, भारत के साथ व्यापार, चीन के साथ

व्यापार, प्रसार के सामान्य कारण, **जलडमरूमध्य औपनिवेशिक बस्तियाँ,** पैनंग, सुमात्रा, सिंगापुर, जलडमरूमध्य की औपनिवेशिक बस्तियाँ : सम्राट के उपनिवेश, बर्मा, प्रथम एंग्लो बर्मा युद्ध, द्वितीय एंग्लो बर्मा युद्ध, छोटे क्षेत्रों का उपनिवेशीकरण– बोरनियो और फिलीपीन्स, अण्डमान तथा निकोबार प्रायद्वीप, श्रीलंका, मॉरीशस, नेपाल, अफगानिस्तान।

साम्राज्यवादी विचारधाराः ओरियंटलिस्ट तथा उपयोगितावाद

आरंभिक धारणा, वारेन हेस्टिंग्स और भारत संबंधी ब्रिटिश धारणा, विलियम जोन्स, हेस्टिंग्स की नीतिः व्यवहार में, संस्थानीकरण, इवैंजिलिकलिज्म और अन्य नयी प्रवृत्तियॉ, सुधार के प्रयत्न, संरक्षण और मुनरो, उपयोगितावादी, कानून का प्रश्न, भू–राजस्व का प्रश्न, साम्राज्य का उभरता दृष्टिकोण।

कंपनी की वाणिज्यिक नीतियॉ और भारतीय व्यापार

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का ढॉचा, ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एकाधिकार, एकाधिकार बनाम उन्मुक्त व्यापार, कंपनी के व्यापार की प्रकृति, वाणिज्य व्यवसाय और राजनीतिक शक्ति, औद्योगिक पूँजीवाद का उदय एवं कम्पनी की वाणिज्यिक नीतियॉ।

नयी भू–व्यवस्थाएँ

भू–राजस्व प्रबंध के आरंभिक प्रयोग, बंगाल में स्थायी बन्दोबस्त, जमीदारों के साथ बन्दोबस्त, खेतिहरों की स्थिति, स्थाई बन्दोबस्त का प्रभाव, स्थाई बन्दोबस्त से मोह भंग, वैकल्पिक व्यवस्थाओं का उदय, रैयतवाड़ी के तहत कर निर्धारण, मद्रास में रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू करना, रैयतवाड़ी सिद्धान्त और व्यवहार, मद्रास में रैयतवाड़ी व्यवस्था का प्रभाव, बंबई में रैयतवाड़ी बंदोबस्त, मद्रास और बंबई में रैयतवाड़ी व्यवस्था के प्रभाव, अन्य वैकल्पिक बंदोबस्तः महलबाड़ी व्यवस्था, महलबाड़ी : सिद्धान्त और व्यवहार, महलबाड़ी बंदोबस्त के प्रभाव।

कृषि का व्यवसायीकरण

व्यवसायीकरण का क्षेत्र, अंग्रेजों से पूर्व व्यवसायीकरण, अंग्रेजों के अधीन व्यवसायीकरण, कंपनी के उद्देश्य, इन उद्देश्यों के परिणाम, कृषि पर निर्यात व्यापार के प्रभाव, व्यावसायिक फसलों का चुनाव, व्यवसायिक फसलें, कच्ची रेशम, अफीम, नील, रूई, काली मिर्च, चीनी, चाय, व्यवसायीकरण के प्रभाव, दरिद्रता, अस्थायित्व, बहुत से बाजार, सामाजिक संरचना।

भारत में अनौद्योगीकरण

अनौद्योगीकरण का अर्थ, ब्रिटिश पूर्व अर्थव्यवस्था, यूरोप के साथ आरम्भिक व्यापार का स्वरूप, यूरोप के साथ आरम्भिक व्यापार का परिणाम, प्लासी के युद्ध के बाद व्यापार, यूरोपीय व्यापार का प्रभाव, अनौद्योगीकरण, कुछ निष्कर्ष।

औपनिवेशिक शासन का आर्थिक प्रभाव

देशी पूँजी की अधीनता, प्रभुत्व बाजार और उत्पादक, शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र, धन का हस्तांतरण, विदेशी व्यापार, भारतीय रेल और अंग्रेजी पूँजी।

आधुनिक भारत की भाषाएँ

मुगलसत्ता से ब्रिटिश वर्चस्व की ओर संक्रमण के प्रभाव, समरूप मद्रण लिपि और प्रामाणिक भाषारूप की स्वीकृति, गद्य साहित्य का विकास, नये साहित्य स्वरूपों की स्वीकृति, भाषिक विकास और वर्ग संबंध, बंगाली, गुजराती, तमिल, भाषा के अन्तर्गत सामुदायिक ध्रुवीकरण, उर्दू और हिन्दी का ध्रुवीकरण, उर्दू भाषा का उद्भव और विकास, प्रामाणिक हिन्दी का विकास, पंजाब पर प्रभाव, विविधता में एकता, गद्य रूपों का विकास, आरंभिक गद्य रूपों के उदाहरण, पाश्चात्य प्रभावों का आरम्भ, परिणाम।

भारतीय भाषाओं का साहित्य

प्राचीन भारत की काव्य परम्परा, प्राचीन कविता का अंत, उर्दू कविता, अन्य भाषाएं, नई कविता, नाट्य कला का विकास, पाश्चात्य प्रभाव, परिपक्वता, उपन्यास की उत्पत्ति। नए वृत्तांत, बंकिम युग।

अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार

औपनिवेशिक शिक्षा, स्वदेशी शिक्षा, शिक्षा नीति संबंधी विवाद, अंग्रेजी शिक्षा का विकास, एक परिकलन।

सांविधानिक विकास, 1757–1857

पृष्ठभूमि, नियामक अधिनियम, 1773, पिट का भारत, अधिनियम, 1784, 1793 का चार्टर अधिनियम, 1813 का चार्टर अधिनियम, 1833 का चार्टर अधिनियम, 1853 का चार्टर अधिनियम, भारत सरकार अधिनियम 1858।

प्रशासन और विधि

पृष्ठभूमि, प्रशासन संबंधी ब्रिटिश विचार, अंग्रेजों के स्वार्थ, संस्थागत संरचना, न्यायिक व्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था, भारतीय भागीदारी।

सामाजिक नीति और भारतीय प्रतिक्रिया

औपनिवेशिक नीति निर्माण का इतिहास लेखन, अंग्रेजों की आरम्भिक सामाजिक नीति, औपनिवेशिक सामाजिक हस्तक्षेप में बदलाव, बाल हत्या, सती प्रथा, दास प्रथा, अंग्रेजों की नीति और भारतीय प्रतिक्रिया : एक मूल्यांकन।

सुधार आंदोलन–1

पूर्वी भारत, राममोहन राय के विचार, यंग बंगाल, देवेन्द्रनाथ और केशवचन्द्र, विद्यासागर और विवेकानन्द, पश्चिमी भारत, उन्नीसवीं शताब्दी का प्रारम्भिक समय, उन्नीसवीं शताब्दी का बाद का समय। उत्तरी भारत, दक्षिणी भारत।

सुधार आन्दोलन–।।

भविष्य दृष्टि, सुधार आंदोलनों की विधि, आंदोलन की प्रकृति,

सामाजिक प्रश्न, धार्मिक विचार, धर्मग्रन्थों का उपयोग, अतीत से संबंध, सीमाएं, राष्ट्रवाद की ओर।

सामाजिक भेदभाव और प्रवंचित समूह

उपनिवेश पूर्व सामाजिक भेदभाव और औपनिवेशिक प्रभाव, क्षेत्रीय विभिन्नताएं : दक्षिणी भारत, पश्चिमी भारत, उत्तरी तथा पूर्वी भारत, औपनिवेशकालीन भारत में निरंतरता एवं परिवर्तन, नव संचेतनाः क्षेत्रीय उदाहरण।

किसान और आदिवासी विद्रोह

किसान और आदिवासी विद्रोह का उदभव, कुछ महत्वपूर्ण विद्रोह, सन्यासी विद्रोह, 1763–1800, रंगपर (बंगाल) का किसान विद्रोह, 1783, भील विद्रोह, 1818–31, मैसूर का विद्रोह, 1830–31, कोल विद्रोह, 1831–32, फराइजी विद्रोह, 1838–51, मोपला विद्रोह, 1836–54, संथाल विद्रोह, 1855–56, 1857 के पूर्व के लोकप्रिय विद्रोहों का स्वरूप, नेतृत्व, भागीदारी और संगठन।

1857 का विद्रोह– कारण और स्वरूप

विद्रोह की पृष्ठभूमि, सेना, औपनिवेशिक परिदृश्य, भू राजस्व बन्दोबस्त, अधिग्रहण, धर्म और संस्कृति,विद्रोह का स्वरूपः एक बहस, सिपाही बगावत, राष्ट्रीय संघर्ष या सामंती प्रतिक्रिया, निहित स्वार्थ, सामान्यीकरण सही दृष्टिकोण नहीं, समृद्धों का जन आन्दोलन या जन विरोध?

1857 के विद्रोह की घटनाएं और बाद के हालात

विद्रोह की प्रमुख घटनाएं, सैन्य विद्रोह, जन विद्रोह, बगावती संस्थाएं, दमन, बाद के हालात, भूमिपति, राजे–महाराजे, सेना, ब्रिटिश नीति।

UGHY-06

देश और लोग (पूर्वी एशिया)

पूर्वी एशिया स्थान और काल के संदर्भ में, व्यापक क्षेत्रीय संदर्भ में पूर्वी एशिया की स्थिति, क्षेत्र की विशिष्टता, प्रदेश और पर्यावरण, लोग और पारिस्थितिकी, आदतें, समाज और संस्कृति, पूर्वी एशिया और उसके पड़ोसी क्षेत्र।

समाज एवं राजनीतिः चीन

विकसित कृषि समाज, सम्भ्रांत वर्ग, कृषक, व्यापारी वर्ग,, कन्फ्यूसियसवादी राज्य, सम्राट, नौकरशाही, 19वीं सदी के प्रारम्भ में पतन एवं संकट, चिंग के अधीन राज्य एवं समाज, जनसंख्या का दबाव, प्रशासनिक पतन, आर्थिक संकट, सैन्य कमजोरियां, 19वीं सदी के मध्य का संकट।

समाज और राजनीति : जापान

तोकूगावा के आधिपत्य की स्थापना की पृष्ठभूमि, तोकूगावा राज्य, राजनीतिक नियंत्रण का रचनातंत्र, दाइम्यो, तोकूगावा राज्य की प्रकृति, तोकूगावा का सामाजिक ढांचा, सम्राट और अभिजाततंत्र, सामुराई, किसान, दस्तकार और व्यापारी, तोकूगावा काल : एक मूल्यांकन।

पारंपरिक अर्थव्यवस्था : चीन और जापान

चीन की परंपरागत अर्थव्यवस्था के घटक, कृषि, हस्तशिल्प उद्योग, यातायात के साधन, व्यापार और वाणिज्य, पूंजीवादी विकास में बाधाएं, जापानी अर्थव्यवस्था – चीनी प्रभाव, शोदन और योद्धाओं का उद्‌भव, देश युद्ध के दौर में, तोकूगावा काल की अर्थव्यवस्था।

धर्म एवं संस्कृति : चीन और जापान

प्राचीन चीन में धर्म, विभिन्न विचारधाराएं, कन्फ्यूसियसवाद, ताओवाद तथा अन्य सम्प्रदाय, बौद्ध मत, मध्यकाल– नव कन्फ्यूसियस मत,

मंगोलों के अधीन धर्म। मिंग–चिंग काल, धर्म एवं विद्रोह, जापान का प्राचीन धर्म एवं संस्कृति, स्वदेशी आधार, बौद्ध धर्म, कुलीन संस्कृति, मध्यकालीन धर्म एवं संस्कृति, धर्मों का विकास, योद्धा संस्कृति का निर्माण, तोकूगावा काल में धर्म एवं संस्कृति, विचारों के प्रतिमान, शहरी संस्कृति का उदय।

चीन में अफीम युद्ध

पृष्ठभूमि, पारंपरिक चीन के विदेशों में संबंध की कुछ विशेषताएं, चीन और पश्चिमी देशों के बीच शुरूआती संपर्क और कैंटन व्यवस्था, अफीम का व्यापार, पहला अफीम युद्ध और नानकिंग की सौंध, पश्चिमी ताकतों की उपस्थिति पर चीन की प्रतिक्रिया, ढुलमुल सरकारी नीति, चीनी जनता का प्रतिरोध, दूसरा अफीम युद्ध और त्येनसिन की संधि, अफीम युद्धों की परस्पर विरोधी विवेचनाएं।

असमान संधि प्रणाली – चीन

सहयोग का दौर 1860–1870, संधिगत बंदरगाह, विदेशी सीमाशुल्क निरीक्षणालय, चीन में आधुनिक कूटनीति की शुरूआत, बढ़ते विदेशी अतिक्रमण : मन–मुटाव और टकराव, 1870–1900, मिशनरी गतिविधि और आम लोगों का शत्रुताभाव, चीन की सीमारेखा पर विदेशी दबाव, रियासतों के लिए भगदड़।

जापान और पश्चिम (मेइजी पुनः स्थापन तक)

प्रारम्भिक सम्पर्क, बाहरी दबाव और आन्तरिक बहस, पेरी का आगमन, परिणाम, जापान में आंग्ल फ्रांसीसी प्रतिद्वन्द्विता।

सामंतवाद का पतन और मेइजी पुर्नस्थापना

तोकूगावा का पतन, सामंतवाद, आर्थिक बदलाव, तनाव और द्वन्द्व, शिक्षा, विद्वान और विचार, बाहरी संकट का दौर, 1853–1858 का दौर, 1860–1864 का दौर, 1865–1868 का दौर, मेइजी पुर्नस्थापना, बहस, मार्क्सवादी दृष्टिकोण, युद्धोत्तर बहस।

जापान में आधुनिकीकरण–।

शाही सरकार की स्थापना, विशेषाधिकारों की समाप्ति, राष्ट्रीय सेना, भूमिकर और पेन्शन, संविधान की ओर, मेजी का संविधान, बहस, मेजी राज्य के विरूद्ध विरोध और विद्रोह, विशेषाधिकारों की समाप्ति के विरूद्ध, स्वतंत्रता और जनाधिकार आन्दोलन, मेजी की राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति, सम्राट, नौकरशाही।

जापान में आधुनिकीकरण –।।

जापान और पश्चिमी दुनिया, तोकूगावा काल, मेइजी काल, बुद्धिजीवियों की भूमिका, शिक्षा और विकास, प्रारम्भिक प्रयास, मंत्रीमंडल के अधीन सुधार, रूढ़िवादी और शैक्षिक सुधार, शाही राजाज्ञा, रूढ़िवादी तर्क, रूढ़िवादियों का प्रभाव, समाजवादी दृष्टिकोण। अखिल एशियावाद।

जापान में आधुनिकीकरण –।।।

मेइजी पुनर्स्थापना एवं अर्थव्यवस्था, आर्थिक विकास का प्रारम्भिक दौर, मूलभूत संरचना का निर्माण, मजदूर संघों का विकास, ग्रामीण क्षेत्र, मूल्यांकन।

ताइपिंग विद्रोह

हंगश्य चुआन और ईश्वर पूजक संघ, ताइपिंग विद्रोह का स्वर्ण काल, ताइपिंग संगठन और कार्यक्रम, भू व्यवस्था, स्त्रियों की स्थिति, हस्तशिल्प और व्यापार, ताइपिंगों का पतन, जेंग क्यो–फान और चिंग सरकार द्वारा ताइपिंगों को दबाने का प्रयास, पश्चिमी ताकतों का रवैया, ताइपिंग आन्दोलन की आंतरिक समस्याएं, ताइपिंगों की पराजय, ताइपिंग विद्रोह की प्रकृति और प्रभाव, विद्रोह अथवा सामाजिक क्रान्ति, परिणाम।

बॉक्सर विद्रोह

चीन की आर्थिक–सामाजिक स्थितियॉ, साम्राज्यवाद, यी हो तुआन,

शांतुग क्यो? विद्रोह, साम्राज्यवादियों का हस्तक्षेप, बॉक्सर प्रोटोकाल, विद्वानों की बहस।

स्वयं सुदृढ़ीकरण आंदोलन और सौ दिनों के सुधार

स्वयं सुदृढ़ीकरण आंदोलन : प्रथम चरण, पुर्नस्थापन तथा सुदृढ़ीकरण के निर्माता, कृषि अर्थव्यवस्था का पुर्नस्थापन, राज्य एंव नागरिक प्रभुत्व का पुर्नस्थापन, पश्चिम की ओर नई कूटनीति, स्वयं सुदृढ़ीकरण, दूसरा चरण – आधुनिक शिक्षा की प्रारम्भ, नवीनीकरण का विरोध, पुर्नस्थापन तथा सुदृढ़ीकरण आंदोलन के परिणाम, 1898 का सुधार आन्दोलन, सुधार आन्दोलन के मुख्य विचारक, सुधार आन्दोलन का प्रभाव, सौ दिनों के सुधार, सुधार का क्षेत्र, प्रतिक्रिया।

जापान में राजनीतिक सुधार

बाकू–हान व्यवस्था के उपरान्त का राजनीतिक तंत्र, हान की समाप्ति, स्थानीय सरकार, जनप्रिय अधिकारों के लिए आन्दोलन, राष्ट्रीय सभा की स्थापना, संविधान, सम्राट, डायट, जनता के अधिकार, कार्यपालिका, सेना, न्यायपालिका, संविधान का कार्य,

1911 की चीनी क्रान्ति

चिंग सुधार– शैक्षिक सुधार, सैन्य सुधार, प्रशासनिक एवं संस्थात्मक सुधार, अर्थव्यवस्था की स्थिति और विदेशी स्वार्थ, विरोधी शक्तियां, चीनी राष्ट्रवाद का विकास, सुधारवादी तथा क्रान्तिकारी, सुधारवादी, क्रान्तिकारी, तोंग मोंग हुई का निर्माण और इसकी विचारधारा, 1911 की क्रान्ति, सिच्वान रेलवे की रक्षा, वू चंग विद्रोह, प्रांतों द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा, चिंग द्वारा जवाबी कार्यवाही, चीनी गणतंत्र।

मेइजी जापान –।

क्षेत्रीय मुद्दे– कूरिल द्वीप समूह, रयूक्यू द्वीप समूह, बोनिन द्वीप समूह,(ओगासावारा), कोरिया का मसला, असमान संधियों में संशोधन,

मेइजी जापान–।।

चीन–जापान युद्ध, सन् 1884 के बाद चीन में जापान की गतिविधियाँ, खुला द्वार नीति, रियायतों की मांग, आंग्ल जापानी गठबंधन, रूस जापान युद्ध, रूस–जापान युद्ध के परिणाम, कोरिया का समामेलन, मंचूरिया में जापान का प्रभाव क्षेत्र ।

जापान और प्रथम विश्व युद्ध

पृष्ठभूमि, प्रथम विश्व युद्ध, युद्धोत्तर स्थिति, अर्थव्यवस्था की स्थिति, अर्थव्यवस्था की स्थिति, उदारवादी मत।

चीन और प्रथम विश्व युद्ध

प्रथम विश्व युद्ध के ठीक पहले चीन की स्थिति, युआन की महत्वाकांक्षाओं का विरोध, युआन की मृत्यु के परिणाम, बदलता आर्थिक परिदृश्य, विश्व युद्ध और चीन, इक्कीस मांगें, इक्कीस मांगें क्या थी? चीनी अैर पश्चिमी प्रतिक्रियाएं, युद्ध में भाग लेने का निर्णय, शान्ति सन्धि, चीनी प्रतिक्रियाएं, मई 4, 1919 ।

राजनीतिक दलों का उदय

मेजी शासकों के अधीन संवैधानिक सरकार, राजनीतिक दलों की स्थापना, समान स्वार्थ वाले समूह एवं राजनीतिक दल, कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना। दल मन्त्रि परिषद की व्यवस्था, राजनीतिक दलों का पतन। बाह्य एवं आन्तरिक कारण, राष्ट्रीय रक्षा राज्य (नेशनल डिफेंस स्टेट)।

सैन्यवाद का उदय

शासन का चरित्र, सेना एवं सरकार, राजनीतिक दलों के साथ सेना की नाराजगी, शिक्षा एवं राष्ट्रवाद। विचारों एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर कुठाराघात, सेना का विरोध, 1930 के बाद के अधिनियम, सेना के अन्दर विभाजन, सेना की तानाशाही, युद्ध एवं आर्थिक नीतियॉ, युद्ध एवं सेना का व्यवहार।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद की अर्थव्यवस्था

युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था का उत्थान, अंतयुद्ध काल में औद्योगिक विकास, विद्युत उद्योग, भारी एवं रसायन उद्योग, सूती कपड़ा उद्योग, अंतर्युद्ध काल में कृषि– पृष्ठभूमि, रेशम उत्पादन। दोहरे ढॉचे का निर्माण, औद्योगिक केन्द्रण तथा जैवात्सु, अंतर्युद्ध समय में विदेश व्यापार,

दूसरे विश्व युद्ध तक जापानी साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद : परिभाषा एवं बहस, जापानी प्रसार का ढांचा, प्रारम्भिक दौर, जापान का औपचारिक साम्राज्य, औपनिवेशिक प्रशासन, उपनिवेशों से आर्थिक संबंध, प्रसार की विचारधारा, औपनिवेशिक नीतिः मान्यताएं एवं आमूख, 1931 के बाद की प्रसारवादी नीति, मंचेको की स्थापना, चीन में आक्रमण का जारी रहना। जापान का धुरी शक्तियों के साथ शामिल होना, दूसरा विश्व युद्ध।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् का जापान

पृष्ट भूमि, मित्र राष्ट्रों का कब्जा, राजनीतिक निहितार्थ, आर्थिक निहितार्थ, कब्जे पर जापान की प्रतिक्रियायें, उच्च वृद्धि का काल (1552–73) राजनीतिक घटनाक्रम, आर्थिक वृद्धि, तेल आघात और उसके पश्चात की स्थितियां।

क्रान्ति के पश्चात् के घटनाक्रम, 1911–1919

राजनीतिक अस्थिरता, युआन काल के पश्चात् की घटनाएं, युद्ध सामंत और युद्ध सामंतवाद, सेनाएं, गुट और राज्यतंत्र, युद्ध, युद्ध सामंत और विदेशी ताकतें, पीकिंग का दृष्टिकोण, युद्ध सामंतवाद और चीनी समाज, क्वामितांग का उदय, चार मई की घटना।

सांस्कृतिक आंदोलन

कन्फ्यूशियसवाद और परम्परागत चीनी समाज, 1911 की क्रान्ति और

''नयी संस्कृति'', दार्शनिक और उनके विचार, छात्र समुदाय, न्यू यूथ,परम्परा पर आक्रमण : बुद्धिजीवियों के प्रयास, चार मई की घटना के परिणाम।

विदेशी पूंजी निवेश और नव वर्ग का उदय

कुछ टिप्पणियां, चीन में विदेशी पूंजी, चीनी बुर्जुवा वर्ग का उदय, चीन बुर्जुवा वर्ग और 1911 की क्रान्ति, युआन शिकाइ के काल में बुर्जुआ वर्ग, बुर्जुआ वर्ग : 1916–1919, शहरी समाज का उदय।

राष्ट्रवाद का उदय

राष्ट्रवाद का उत्थान, साम्राज्यवाद का प्रतिरोध, राष्ट्रवाद और राष्ट्र निर्माण, मांचू विरोधी भावनाएँ, राष्ट्रवाद : क्रान्ति के उपरान्त के प्रारम्भिक वर्ष, शांतुंग समस्या और चार मई का आंदोलन, बौद्धिक प्रतिक्रिया और जन विरोध, युद्ध सामंतवाद और चीन की एकता को खतरा, चीनी राष्ट्रवाद के अतिरिक्त प्रभाव।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.सी.) का निर्माण

चीन में मार्क्सवाद का उदय, अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि, राजनीतिक वातावरण, सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ, कम्युनिस्ट पार्टी: 1921, प्रारम्भिक विचार, प्रारम्भिक गतिविधियॉ।

संयुक्त मोर्चा

संयुक्त मोर्चे का गठन, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी क्योमितांग, वार्ताएं, संयुक्त मोर्चे की प्रकृति, उपलब्धियॉ सफलताएं, जन आन्दोलन और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, विघटन और दमन, विघटन के कारण।

क्यांगसी सोवियत अनुभव

पृष्ठभूमि, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा एक नयी रणनीति का विकास, उनके प्रारंम्भिक उपाय और क्रान्तिकारी कार्य, क्यांगसी सोवियत गणतंत्र, क्यांगसी अड्डे में नया राजनीतिक संगठन, लाल सेना की भूमिका, राजनीतिक चेतना और सामाजिक प्रगति। शहरी वातावरण।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और जापान के साथ युद्ध

महान अभियान (लॉंग मार्च) की पृष्ठभूमि, येयान की सामरिक नीति, जापानी आक्रमण, अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति, आर्थिक कारण, जापान का सामाजिक एवं राजनीतिक विरोध। व्यवहार में संयुक्त मोर्चा, येयान क्षेत्र : विरोध करने के स्वरूप, लाल क्षेत्रः नये प्रकार का समाज,अन्तिम चरण।

चीन की क्रान्ति

कुछ टिप्पणियॉं, युद्धोपरांत स्थिति और राजनीतिक शक्तियाँ, गृह युद्ध का प्रारम्भ, क्योमिंनटांग के आक्रमण और उसकी पराजय : 1946–47, साम्यवादी विजय (1948–49), नयी सत्ता की कठिनाइयां, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ढांचा, भूमि सुधार, उद्योग, सामाजिक परिवर्तन, चीन की क्रान्ति की महत्ता।

UGHY-07

आधुनिक राज्य और राजनीति

प्रत्यक्ष शासन एवं नौकरशाही, राष्ट्रवाद एवं राष्ट्र राज्य, लोकतांत्रिक राज्यतंत्र।

ब्रिटेन में राजनीतिक संक्रमण : 1780–1850

ब्रिटिश राज्यतंत्र की प्रकृति, राजनीतिक संस्थाओं की प्रकृति, स्वतंत्रता की धारणा, सुधार की मांग, राज्य द्वारा उठाए गये कदम, सुधार अधिनियम 1832, आधुनिकीकरण की ओर राज्य, संवैधानिक सुधार, प्रशासनिक पुर्नसंरचना, बाजार सुधार, कल्याण राज्य की ओर, श्रमिक आंदोलन, चार्टिस्ट आंदोलन।

अमरीकी क्रान्ति

एक नया समाज होने की विशिष्टता, क्रान्ति की ओर, आर्थिक समस्याएं, मंदी, विचारधारा तथा वर्ग, क्रान्ति तथा इसके परिणाम, संविधान का निर्माण, दासता पर आधारित लोकतंत्र, जन राजनीति तथा जैक्सनी लोकतंत्र का विकास।

जनता की क्रान्तिकारी कार्रवाई

प्राचीन शासन का क्रान्तिकारी तख्ता पलट तथा लोकतांत्रिक कार्रवाई, आर्थिक संकट और जन असंतोष, राज्य के वित्तीय ढांचे का टूटना और राजनीतिक संकट, संसद तथा विशिष्ट जनों का विद्रोह, इस्टेट जेनरल का आहवान और क्रान्ति की शुरूआत, दार्शनिकों की भूमिका, प्राचीन शासन के क्रान्तिकारी तख्ता पलट में जनता की भूमिका, वैधीकरण के सिद्धान्त, जैकबिन गणतंत्र और आतंक (1792–94), थर्मोडोरियन गणतंत्र (1795–99), दलील राजनीति के वैचारिक विभाजन तथा विभिन्न पहलू, संविधानवादी बनाम गणतंत्रवादी, जीरॉदी दल के अनुयायियों तथा मानतनवादों के बीच राजनीतिक संघर्ष।

आधुनिक फ्रांसीसी राज्य का जन्म

निरंकुश राज्य और सामंती ढांचे का उन्मूलन, फ्रांस का पनर्निमाण, प्रशासनिक एवं वैधानिक, धार्मिक विभाजन एवं धर्म संधि, आतंक काल तथा नेपोलियन युद्धों के दौरान नागरिकों की लामबंदी, नई नौकरशाही तथा शैक्षिक संस्थाएं।

यूरोपीय राजनीतिक लामबंदियां

कांग्रेस प्रणाली और उसके परिणाम, गुप्त संगठन आंदोलन, उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे तथा चौथे दशक के क्रान्तिकारी आंदोलन, राष्ट्रवादी आंदोलन, वर्ष 1848 की क्रान्तिकारी घटनाएं, क्रान्तिकारी आंदोलनों के परिणाम।

नई राजनीतिक व्यवस्थाएं

प्राधिकार का लोकतांत्रिक वैधीकरण, बोनापार्ट, बिस्मार्कवाद।

औद्योगिक पूंजीवाद

औद्योगिक क्रान्ति और औद्योगिक पूंजीवाद, औद्योगिक पूंजीवाद के महत्वपूर्ण पक्ष, औद्योगिक पूंजीवाद के अध्ययन संबंधी दृष्टिकोण, राजनैतिक अर्थव्यवस्था के आरंभिक लेखक, औद्योगिक पूंजीवाद के इतिहास पर कुछ विचार–।, रोस्टो, गेरशेनकोन, औद्योगिक पूंजीवाद के इतिहास पर कुछ विचारि–।।, औद्योगिक पूंजीवाद के इतिहास पर कुछ विचार–।।।

इंग्लैण्ड में औद्योगिक पूंजीवाद

अठारहवीं और आरंम्भिक उन्नीसवीं शताब्दियों की औद्योगिक क्रान्ति का महत्व। औद्योगिक पूंजीवाद के उदय की पृष्ठभूमि, वाणिज्यिक उत्पादन की प्रकृति, जनसंख्या वृद्धि, पूंजी की आपूर्ति, रेलवे का महत्व, अभिनव परिवर्तन, पूंजी, प्रतियोगिता और औपनिवेशिक बाजार ।

फ्रांस और जर्मनी में औद्योगिक पूंजीवाद

फ्रांस, अठारहवीं शताब्दी की पृष्ठभूमि, कृषि, व्यापार उद्योग और निर्माण, क्रान्तिकारी और नेपोलियन युग, विशेषाधिकारों पर आक्रमण, युद्ध का प्रभाव और क्षेत्रीय विस्तार, पुनर्स्थापित (बोर्बन) और औरलिएन, राजतंत्रों (1815–48) द्वारा संरक्षणवाद और इसके परिणाम,औद्योगिक पूंजीवाद 1848–70, औद्योगिक पूंजीवाद का विकास 1871–1914, जर्मनी, अठारहवीं शताब्दी में कृषि, अठारहवीं शताब्दी में उद्योग और व्यापार, परिवर्तन के स्रोत, क्रान्तिकारी और नेपोलियन युग के विधान, जोल्वेरिन, रेलवे, ज्वाइंट स्टाक बैंकों का विकास, 1871 के बाद विकास।

रूस में औद्योगिक पूंजीवाद

रूस के पिछड़ेपन के पर्यावरण संबंधी कारक, कृषि परम्परा, संस्थागत कारक : कृषि दास व्यवस्था, संस्थागत कारक : कम्यून, औद्योगीकरण पर मुक्ति का प्रभाव, रूसी औद्योगीकरण में राज्य की भूमिका, गेरशेनकोन प्रारूप, कृषि दासों की मुक्ति के पहले औद्योगीकरण , रेलवे, औद्योगिक प्रवृत्तियां : 1860 से 1880 तक, 1890 के दशक के औद्योगिक उछाल की पृष्ठभूमि। विट व्यवस्था– तीव्र वृद्धि, राजस्व और कराधान, विदेशी पूंजी की भूमिका, 1890 के दशक से औद्योगिक विकास का मूल्यांकन, 1901 से 1914 तक औद्योगिक पूंजीवाद – संकट, एकाधिकार स्थापित करने के तरीके, 1908–13 में हुआ विकास, 1914 में रूस।

जनसांख्यिकी

विभिन्न दृष्टिकोण, प्रमुख श्रोत, 1750 से 1850 तक जनसंख्या प्रवृत्ति,देशांतरण, जनन क्षमता और विवाह प्रथा, विवाह व्यवस्था में परिवर्तन, मृत्युदर, जनसंख्या और संसाधन–।, जनसंख्या और संससाधन–।।, 19वीं शताब्दी का अंत और उसके बाद, मृत्यु दर, आयु संरचना, युद्ध और देशान्तरण, शहरीकरण

परिवार

यूरोपीय परिवार को समझना सदस्यता पारिवारिक ढांचा, ऐतिहासिक परिवर्तन – नैरंतर्य, विभिन्न समय और स्थान के परिवारों की तुलना, आर्थिक बदलाव और परिवार, वैवाहिक व्यवस्थाओं को समझने के तरीके, परिवार और औद्योगिक क्रान्ति।

यूरोप में सामाजिक वर्ग

भूमिपतियों और किसानों का पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में विलयन – इंगलैण्ड में भूमिपति वर्ग, फ्रांस में भूमिपति वर्ग, पूर्वी यूरोप में भूमिपति वर्ग, मध्य यूरोप में भूमिपति वर्ग, यूरोप में कृषक वर्ग, बुर्जुआ वर्ग, निम्न मध्य वर्ग, मजदूर वर्ग, राजनैतिक चेतना,

वर्ग समाज की ओर

वर्ग समाज की परिभाषा, संक्रमण, प्राचीन अवशेष के तत्वः सम्पदा और नैगमिक निकाय, वर्गीय पहचान, समुदाय, भूमिधर अभिजात वर्ग, बुर्जुआ और मजदूर वर्ग, प्रतिस्पर्धी पहचानः राष्ट्र, अन्य प्रतिस्पर्धी।

राष्ट्रवाद और राष्ट्र–राज्य

राष्ट्रवाद का अर्थ, राष्ट्रवाद का विचार और राष्ट्र–राज्य, राष्ट्रवाद के विकास के चरण, 1789 के पहले राष्ट्रवादः प्रारम्भिक राष्ट्रवाद, आधुनिक राष्ट्रवाद : 19वीं शताब्दी, राष्ट्रवाद और आधुनिक राज्य द्वारा राष्ट्र राज्य का निर्माण– निरंकुशता और आधुनिक राज्य, आधुनिक राज्य और राज्यों की व्यवस्थाएं, राष्ट्र और राष्ट्र–राज्य, जनतांन्त्रिक और राष्ट्रवादी लामबंदी के बीच संबंध, उदारवादी जनतंत्र और राष्ट्रवाद, राष्ट्रवादी लामबंदी और जनतंत्रीकरण को प्रभावित करने वाले कारक, 19वीं शताब्दी के अंत में राष्ट्रवाद का जातीय भाषाई आधार, राष्ट्रीय आंदोलन और जनतंत्र, राष्ट्रवाद और सामाजिक वर्ग : जर्मनी और ब्रिटेन, इतालवी राष्ट्रवाद और जन संगठन, राष्ट्रीय अस्मिता के विकास के चरणः पूर्वी यूरोप, सांस्कृतिक राष्ट्रवादः चरण क और ख, राष्ट्रवादी विकासों का प्रचार और राष्ट्रवाद।

राष्ट्र राज्यों का निर्माण–। : ब्रिटिश और फ्रांसीसी

ब्रिटिश राष्ट्र राज्य का निर्माण, एकीकरण की प्रक्रिया, राष्ट्रीय पहचान का विकास, राज्य हस्तक्षेप के क्षेत्र, फ्रांसीसी राष्ट्रराज्य का निर्माण, केन्द्रीकृत राज्य तंत्र का जन्म, प्रतिद्वन्द्वी अस्मिताएं, क्रान्ति और राष्ट्र राज्य। वर्ग अस्मिताओं का निर्माण, राज्य और राष्ट्रीय एकीकरण।

राष्ट्र–राज्यों का निर्माण–2 : जर्मनी और इटली

जर्मन राष्ट्रवाद– जर्मन राष्ट्रीय विचार, राजनैतिक पृष्ठभूमि,, आर्थिक पृष्ठभूमि,राष्ट्रवाद और प्रजातंत्र, एकीकरण : आरोपित क्रान्ति, इतावली राष्ट्रवाद की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, राष्ट्रवाद का विचार, इतावली भाषा, मानवतावाद, इतावली राष्ट्रवाद की राजनैतिक पृष्ठभूमि– आधुनिक इतालवी राजनैतिक राष्ट्रवाद, युवा इटली, पिडमौंट सार्डिनिया, कैथोलिक चर्च, इतालवी राष्ट्रवाद की आर्थिक पृष्ठभूमि– उत्तर और दक्षिण की विभिन्नता, राज्य और अर्थव्यवस्था। एकीकरण की प्रक्रिया – जन आंदोलन, युद्ध और एकीकरण।

साम्राज्य और राष्ट्र–राज्य–। : औटोमन और हैब्सबर्ग साम्राज्य

राष्ट्रवाद और साम्राज्य, ओटोमन साम्राज्य, ग्रीस, सर्बिया, रोमानिया, बुल्गारिया, हैब्सबर्ग राजतंत्र – साम्राज्य के भीतर अन्तरविरोध, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया और युगोस्लाविया– नए बहु राष्ट्रीय राज्य।

साम्राज्य और राष्ट्र–राज्य –2 : रूसी साम्राज्य और सोवियत संघ

अन्य साम्राज्यों सें अन्तर, राष्ट्रीय जागरण, पोलिश संस्कृति का रूसीकरण, बाल्टिक का रूसीकरण, यूक्रेन का रूसीकरण, फिनलैण्ड का रूसीकरण, सोवियत पुर्नएकीकरण, बेलोरूस, यूक्रेन, अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं, 1930 के दशक का स्टालिन युग।

उपनिवेशवाद

उपनिवेशवाद क्या है? उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद : उत्पादन की एक विधि या एक सामाजिक संघटन, उपनिवेशवाद की आधारभूत विशेषताएं, औपनिवेशिक राज्य, उपनिवेशवाद के चरण– पहला चरण, दूसरा चरण, तीसरा चरण।

औपनिवेशिक आधिपत्य की पद्धतियां–1 : प्रत्यक्ष शासन

पहला चरण, द्वितीय चरण, तृतीय चरण, भारत में ब्रिटिश शासन का प्रभाव – कृषि, व्यापार, उद्योग, अफ्रीका– औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था, औपनिवेशिक प्रभाव, अफ्रीका में ब्रिटिश उपनिवेशवादः मिस्र, विजय अभियान, मिस्र में ब्रिटिश आर्थिक नीति, स्वेज नहर, राज्य संरचना, अफ्रीका में फ्रांसीसी उपनिवेशवाद, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, दक्षिण पूर्व एशिया, इंडोनेशिया, फ्रांसीसी हिंद चीन (इंडो–चीन)।

औपनिवेशिक आधिपत्य की पद्धतियां–।। : अप्रत्यक्ष शासन

अर्ध उपनिवेशवाद–मुक्त व्यापार, जटिल परिस्थितियों में अप्रत्यक्ष शासन को प्राथमिकता, परस्पर विरोधी साम्राज्यवादी हितों के बीच सामंजस्य। अप्रत्यक्ष शासन के कुछ उदाहरण– चीन, लैटिन अमेरिका, ओटोमन साम्राज्य, इरान।

साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता

साम्राज्यवाद की सिद्धान्त, भूमंडल पर आधिपत्य की होड़, प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि बनाने वाले शक्ति समीकरण।

उदारवादी जनतंत्र

पृष्ठभूमि। वर्साय और उसके बाद, वाईमार गणतंत्र और उदारवादी जनतंत्र, सामाजिक संघर्ष और स्थायित्व की खोजः ब्रिटेन और फ्रांस। ब्रिटेन, फ्रांस, कूटनीति का संकट, आर्थिक संकट, 1920 के दशक को समझना।

प्रतिक्रान्ति –। : फासीवाद से अनुदार तानाशाही तक

फासीवाद के सामान्य लक्षण, फासीवाद की राजनैतिक पृष्ठभूमि, इटली में फासीवादी राज्य की आधारभूमि – फासीवादी आन्दोलन का उदय और सत्ता पर नियंत्रण, शासन व्यवस्था का दृढ़ीकरण, फासीवादी जनसंगठनों के प्रमुख प्रकार, फासीवादी राज्य की प्रकृति, पतन और सैलो गणतंत्र, स्पेन में दक्षिणपंथी तानाशाही और आंदोलन, फ्रांसीसी दक्षिणपंथी और वीशी सरकार, दक्षिणपंथी आंदोलन और तानाशाही : पूर्वी मध्य यूरोप और बाल्टिक राज्य – पोलैंड, हंगरी, चेकास्लोवाक, बाल्टिक राज्य।

प्रतिक्रान्ति –।। : जर्मनी में राष्ट्रीय समाजवाद

पृष्ठभूमि, युद्ध के बाद जर्मन राजनीति, नाजी पार्टी का गठन और आरम्भिक वर्ष, संसदीय गणतंत्र का संकट, नाजियों का राजनैतिक दृढ़ीकरण, तीसरे राईख में राज्य और समाज – न्यायपालिका की अधीनस्थता, गस्टैंपो, मजदूर और किसान, महिलाएं, कला और साहित्य पर प्रतिबंध, प्रेस, शिक्षा नीति, धार्मिक असहिष्णुता। यहूदियों का नरसंहार।

समाजवादी विश्व–।

पहली समाजवादी क्रान्ति रूस में ही क्यों हुई? राजनैतिक ढांचा, किसान और मजदूर वर्ग, राष्ट्रीय आत्म संकल्प, विचार और संगठन। क्रान्ति के चरण और बालशेविक विजय, समाजवाद का निर्माण, परिवर्तन की प्रकृति आरंभिक विधान, परिवर्तन की प्रकृति लोकप्रिय पहल, युद्ध साम्यवाद– आर्थिक पहल और नीतिगत निर्णय, युद्ध समाजवाद के राजनैतिक पक्ष, नई आर्थिक नीति, समाजवाद की ओर प्रयाण की रणनीति के रूप में नई आर्थिक नीति । समाजवाद के सांस्कृतिक आयाम, कामिन्टर्न।

समाजवादी विश्व–।।

पृष्ठभूमि, नियोजन और औद्योगीकरण– प्रथम पंचवर्षीय योजना 1929–33, द्वितीय पंचवर्षीय योजना 1933–37, नियोजित औद्योगीकरण के परिणाम, तृतीय पंचवर्षीय योजना, 1938–41, सामूहिक खेती– नई

आर्थिक नीति में कृषि की कमजोरियां, अनाज का उत्पादन और विपणन, 1927–28 का वसूली संकट, किसानों द्वारा सामूहिक खेती का विरोध, सामूहिकता की प्रकृति, आतंक और परिशोधन – चार मुकदमें, परिशोधन और साम्यवादी दल, परिशोधन और सेना, परिशोधन और सोवियत समाज।

दो विश्व युद्ध

युद्धों के कारक– राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाएं और राजनैतिक प्रतिद्वन्द्विता, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध और खेमों की स्थापना, विश्व युद्धों में हिस्सा लेने वाले राष्ट्र, आपसी टकराव वाली विचारधाराओं के रूप में युद्ध। दो विश्व युद्धों के दौरान विचारधाराओं द्वारा सृजित सशस्त्र खेम। युद्ध की शुरूआत के समय यूरोप का राजनैतिक परिदृश्य, शीत युद्ध की शुरूआत।

युद्धों के स्वरूप

पूर्ण युद्ध की धारणा और इसके प्रभाव, लंबे समय तक युद्ध करने की सामर्थ्य पाने के लिये अपनाई गयी खंदक युद्ध प्रणाली, नौसेना नाकाबंदी और पनडुब्बी युद्ध। द्वितीय विश्व युद्ध में लामबंदी की प्रकृति। जन हत्या के लिए अपनाई गई परिष्कृत प्रौद्योगिकी– तोप तथा टैंकों का प्रयोग करने वाला सशस्त्र सेना का एक अंग, पैदल चलने वाला सशस्त्र सेना का अंग, मशीनी युद्ध के अन्तर्गत उभरे नए पहलू, सैन्य वैमानिकी पूर्ण युद्ध के काल में, रासायनिक युद्ध। परमाणु हथियार :पूरी दुनिया को नष्ट करने के लिए तकनीकी सामर्थ्य की प्राप्ति । सैनिक संस्थाओं और प्रशासनिक तंत्र में बदलाव। पूर्ण युद्ध के परिणाम, व्यापक विध्वंस, नर संहार, बेघर होना।

युद्धोत्तर विश्व की झलक

युद्धोत्तर परिदृश्य– तात्कालिक प्राथमिकताएं, युगोस्लाविया, पोलैंड, ग्रीस, जर्मनी का विभाजन, युद्धोत्तर यूरोप में आर्थिक पुनर्निर्माण, पूंजीवादी यूरोप में अर्थव्यवस्था : पुनरूत्थान और उत्कर्ष, समाजवादी यूरोप में अर्थव्यवस्था, युद्धोत्तर यूरोप में राजनीति, पूंजीवादी यूरोप, समाजवादी यूरोप।

UGPS-01

राजनीति विज्ञान की परिभाषा और क्षेत्र

राजनीति विज्ञान की मानक नामावली की समस्याएँ, 'राजनीति शब्द का व्याख्या, राजनीतिक दर्शन, राज्य के सिद्धान्त, राजनीति विज्ञान, परिभाषा और क्षेत्र : वैकल्पिक संकल्पनाएं, यूरोपीय अथवा पाश्चात्य संकल्पनाएं, यूनान और रोम की शास्त्रीय संकल्पनाएँ, आधुनिक उदारवादी संकल्पना, राजनीति की मार्क्सवादी संकल्पना, भारतीय संकल्पनाएँ, राज्य का अध्ययन, राजनीति विज्ञान का केन्द्रीय विषय, राज्य, समाज, सरकार, और राष्ट्र : भेद, वर्तमान प्रवृत्तियाँ,

राजनीति के अध्ययन के उपागम

ऐतिहासिक दृष्टिकोण, ऐतिहासिक दृष्टिकोण की परिसीमाएँ, आदर्शमूलक दृष्टिकोण, व्यवहारवादी दृष्टिकोण,डेविड ईस्टन के प्रमुख सिद्धान्त, व्यवहारवादी दृष्टिकोण की परिसीमाएँ, व्यवहारवादोत्तर दृष्टिकोण, व्यवहारवादोत्तर दृष्टिकोण के प्रमुख सिद्धान्त।

राजनीति विज्ञान और सामाजिक यथार्थ

सामाजिक यथार्थ पर एक सामान्य दृष्टि, राजनीति विज्ञान और सामाजिक यथार्थ, राजनीतिविज्ञान और अन्य सामाजिक विज्ञान, राजनीति विज्ञान और संस्कृति, राजनीति विज्ञान और दर्शन, राजनीति विज्ञान और इतिहास, राजनीति विज्ञान और समाज विज्ञान, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान और मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान और भूगोल, अंतः शास्त्रीय उपागत, राजनीति विज्ञान की प्रबोधक भूमिका, समाज विज्ञान की प्रबोधित एकता।

प्लेटो और अरस्तू के विचार से राज्य का क्लासिकी दृष्टिकोण

प्लेटो के ''रिपब्लिक'' का आधार, गुण ही ज्ञान है। प्लेटो का न्याय सिद्धान्त, प्लेटो के ''रिपब्लिक'' में वर्ग, क्षुधाः उत्पादक वर्ग, प्रेरणा : सैनिक, विवेक : संरक्षक और दार्शनिक राजा, प्लेटो का शिक्षा एवं

साम्यवाद संबंधी सिद्धांत, शिक्षा, साम्यवाद, आलोचना, प्लेटो की बाद की रचनाएँ, अरस्तू, अरस्तू की राज्य संबंधी अवधारणा, राज्य : मनुष्य के लिए स्वाभाविक, राज्य के प्रकार, राज्यों का वर्गीकरण, मिश्रित संविधान, अरस्तू के कानून का शासन और न्याय के सिद्धान्त संबंधी विचार, क्रान्तियाँ : कारण व निवारण, मनोवैज्ञानिक कारण, दाँव पर लगे मुद्दे, उपद्रव के अवसर व उत्पत्ति, क्रान्ति से कैसे बचें, प्लेटो और अरस्तू का तुलनात्मक अध्ययन, यूनानियों का राजनीतिक सिद्धान्त की दिशा में अन्य योगदान।

प्राचीन भारत में राज्य

राज्य का उदभव, राज्य की उत्पत्ति व विकास, राज्यों के प्रकार, राजतंत्र की अवधारणा, क्या राजा चुना जाता था? राजा का देवत्व, राजा : नैतिक व्यवस्था को कायम रखने वाला जनसेवक व न्यासी, क्या राजा नियंत्रित था? दण्ड व धर्म की अवधारणाएं, दण्ड नीति का अर्थ एवं उत्पत्ति, दण्ड नीति का क्षेत्र एवं विषयवस्तु, दण्ड नीति की आवश्यकता एवं महत्व, धर्म की उत्पत्ति एवं अर्थ, धर्म का उद्देश्य एवं महत्व, दण्ड एवं धर्म में संबंध, कौटिल्य एवं बुद्ध का योगदान, कौटिल्य : राजनीति एवं अन्य विज्ञान, कौटिल्य : राज्य की अनिवार्य प्रकृति, कौटिल्य : मैक्यावलीवाद, बौद्ध विचार : ब्राह्मणवादी परम्परा से विच्छेद, बौद्ध विचार : राजनीतिक चिंतन में महत्वपूर्ण विचार।

राज्य : अर्थ, प्रकृति, उदगम

राज्य का अर्थ और उसके तत्व, राज्य संबंधी उदारवादी सिद्धान्त, राज्य संबंधी मार्क्सवादी सिद्धान्त, मार्क्सवादी दृष्टिकोण : एक मूल्यांकन, गांधीवादी दृष्टिकोण, राज्य और अन्य संघ,

राज्य, राष्ट्रीयता और राष्ट्र

राज्य, राष्ट्रीयता और राष्ट्र का अर्थ, राज्य क्या है? राज्य और सरकार का भेद, राज्य का विश्लेषण : उदारवादी और मार्क्सवादी दृष्टिकोण, राष्ट्रीयता और राष्ट्र की अवधारणा, राष्ट्रीयताओं और राष्ट्रों का विकास, राष्ट्रीयता और राष्ट्र की विशेषताएं, राष्ट्र और राष्ट्रीयता का भेद, राज्य

और राष्ट्र तथा राष्ट्रीयता के बीच अंतर, राष्ट्र और राष्ट्रीयता के संबंध में उदारवादी और मार्क्सवादी दृष्टिकोण, उदारवादी दृष्टिकोण, राष्ट्र और राष्ट्रीयता संबंधी मार्क्सवादी दृष्टिकोण, राष्ट्रों का निर्माण, राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद की अवधारणा, राष्ट्रवाद और राष्ट्र का निर्माण, प्रथम विश्व युद्ध के बाद राष्ट्र की अवधारणा, समाजवादी बहुराष्ट्रीय राज्य का उदय। अफ्रीका, एशिया और अन्य औपनिवेशिक क्षेत्रों में राष्ट्रवाद और राष्ट्र का उत्थान, नये राज्य का बहु संजातीय चरित्र, भारत का मसला और महात्मा गांधी के विचार, राष्ट्रों की स्थापना कैसे होती है – सार संक्षेप। राष्ट्रीयताओं, राष्ट्रवाद और राष्ट्र के सवाल से संबंधित कुछ समस्याएं, राष्ट्रीयताओं और राष्ट्रों के सिद्धान्तों के बारे में भ्रामक धारणाएं, प्रमुख राष्ट्रीयताओं और संजातीय तनाव संबंधी समस्याएं।

प्रभुसत्ता और बहुवाद

प्रभुसत्ता की परिभाषा, प्रभुसत्ता की विशेषताएं, प्रभुसत्ता के सिद्धान्त, ऐतिहासिक संदर्भ, मार्क्सवादी मत, प्रभुसत्ता की अवस्थिति, प्रभुसत्ता का वर्गीकरण, विधित : और वस्तुतः प्रभुसत्ता, नाममात्र की प्रभुसत्ता, राजनीतिक प्रभुसत्ता, लोकप्रिय प्रभुसत्ता, प्रभुसत्ता का सिद्धान्त और नई विश्व व्यवस्था, बहुवाद का अर्थ, बहुवादी सिद्धान्त की उत्पत्ति, बहुवाद के मुख्य लक्षण, बहुवाद और प्रभुसत्ता, प्रभुसत्ता और बहुवाद का मूल्यांकन,

शक्ति, प्राधिकार और वैधता

शक्ति क्या है? शक्ति के कुछ उदाहरण, परिभाषा, शक्ति का अधिकार क्षेत्र, शक्ति का कार्य क्षेत्र, शक्ति : अर्थ और निहितार्थ, प्रभाव, मंजूरी, वैधता और प्राधिकार, वैधता के स्रोत, प्राधिकार : प्रकार, राज्य और प्राधिकार : दो दृष्टिकोण, उदारवादी विचारधारा, मार्क्सवादी।

विधि और नैतिकता

विधि का अर्थ, विधि के लक्षण, विधि के स्रोत, रीति रिवाज, धर्म, वैज्ञानिक समीक्षाएं, अधिनिर्णय, समता, विधान, विधि के प्रकार, सार्वजनिक विधि एवं निजी विधि, संवैधानिक विधि, सिविल एवं

फौजदारी विधि, प्रशासनिक विधि, प्राकृतिक विधि, अन्तर्राष्ट्रीय विधि, विधि के सिद्धान्त, विश्लेषणात्मक विचारधारा, ऐतिहासिक विचारधारा, समाजशास्त्रीय विचारधारा, मार्क्सवादी विचारधारा, विधि, नैतिकता और सामाजिक परिवर्तन, विधि और नैतिकता में अन्तर, विधि और सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में विधि के फायदे एवं सीमाएं, सामाजिक परिवर्तन के लिए विधि के सफल उपयोग की परिस्थितियां,

स्वतंत्रता

अर्थ और प्रकृति, प्राचीन भारतीय परम्परा में स्वतंत्रता, पश्चिमी परम्परा में स्वतंत्रता, आधुनिक विचारधारा में स्वतंत्रता, स्वतंत्रता की विभिन्न अवधारणाएं, स्वतंत्रता मूल्य के रूप में, नकारात्मक स्वतंत्रता, नकारात्मक स्वतंत्रता की अवधारणा की समालोचना, रचनात्मक स्वतंत्रता, रचनात्मक स्वतंत्रता की बाधाएं, समालोचना। स्वतंत्रता की उदारवादी और मार्क्सवादी अवधारणाएं- उदारवादी अवधारणा, मार्क्सवादी विचारधारा। स्वतंत्रता के प्रकार- व्यक्तिगत या नागरिक स्वतंत्रता, राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक स्वतंत्रता, राष्ट्रीय स्वतंत्रता। स्वतंत्रता और सत्ता,

समानता

समानता का अर्थ और स्वरूप, राजनीतिक विचारधारा में समानता का अर्थ, समानता की संकल्पना का विश्लेषण, समानता का नकारात्मक दृष्टिकोण, समानता का रचनात्मक दृष्टिकोण, समानता के बारे में उदारवादी दृष्टिकोण, मार्क्सवादी समालोचना, समानता के प्रकार, प्राकृतिक समानता, अवसर की समानता, सामाजिक समानता, राजनीतिक समानता, आर्थिक समानता, कानूनी समानता या कानून की दृष्टि में समानता, राष्ट्रों के बीच समानता या अन्तर्राष्ट्रीय समानता। समानता और स्वतंत्रता।

न्याय

न्याय का अर्थ, न्याय और कानून, न्याय और भेदभाव, विरण, मूलक

न्याय, कार्य के आधार पर वितरण, योग्यता के आधार पर वितरण, सामाजिक न्याय, नियमों पर आधारित न्याय, जान राल का न्याय संबंधी सिद्धान्त।

सरकार : इसके अंग और वर्गीकरण

शासन के अंग, विधायिका, उसका प्रतिनिधि स्वरूप, विधायिका के कार्य, द्विसदनवाद, विधायिका का पतन, कार्यपालिका- कार्यपालिका की संरचना, कार्यपालिका के कार्य, कार्यपालिका का प्रभुत्व,न्यायपालिका – न्यायपालिका के कार्य, न्यायपालिका की स्वतंत्रता, शासन पद्धतियों का वर्गीकरण :वर्गीकरण क्यों? अरस्तू का वर्गीकरण, वर्गीकरण के आधार, कुछ नये वर्गीकरण, इन वर्गीकरणों की उपयोगिता।

लोकतंत्रीय सरकार

लोकतंत्र के विचार का विकास, लोकतांत्रिका शासन पद्धति, संगठनात्मक लोकतंत्र, उदारवादी लोकतंत्र की मान्यताएं, लोकतंत्र के सिद्धान्त, लोकतंत्र का कुलीनवादी सिद्धान्त, लोकतंत्र का सहभागिता का सिद्धान्त, जनवादी लोकतंत्र और उदारवादी लोकतंत्र की सुधारवादी समालोचना, विकासशील देशों में लोकतंत्र की समस्याएँ।

एकात्मक और संघीय सरकार

एकात्मक सरकार, विकास, विशेषताएं, संघीय सरकार, विकास : अमेरिकी मॉडल, अन्य देशों के संघीय रूप, भारत एक संघ के रूप में, संघ के सहायक कारक, संघ व इसकी विशेषताएं, शक्तियों का विभाजन, लिखित संविधान, न्यायिक पुनरावलोकन, केन्द्र और राज्यों का स्वतंत्र अस्तित्व और समन्वय, एक समल संघ के लिए पूर्वापेक्षाएँ, संघ और अन्य शासन प्रणालियों में अन्तर, एकात्मक और संघीय, संघ और परिसंघ, संघवाद की प्रवृत्तियाँ, केन्द्रीकरण, सहयोगात्मक संघवाद, नए राज्यों में संघवाद, भारत में संघवाद।

संसदीय प्रणाली की सरकार

संसदीय सरकार का विकास, राजा के संसद तक सत्ता का स्थानान्तरण, संसद से केबिनेट तक सत्ता स्थानांतरण, प्रधानमंत्रित्व का उदभव, दल और इसकी भूमिका, भारत में विकास, संसदीय सरकार की विशेषताएं, संसद की सर्वोच्चता, केबिनेट का संसद के प्रति उत्तरदायित्व, केबिनेट की एकता और दल, प्रधानमंत्रित्व की प्रमुखता, सत्ता का संयोजन, प्रधानमंत्री की नेतृत्वकारी भूमिका, सम्मेलन/परम्परा, संसदीय सरकारों की प्रवृत्तियाँ, दल, हित समूह और उनकी भूमिका, जनमत और राजनीति, नौकरशाही : अदृश्य सरकार, कैबिनेट का प्रभुत्व। भारत और अन्य देशों में इस व्यवस्था की समीक्षा।

अध्यक्षीय शासन प्रणाली

सत्ता विभाजन का सिद्धान्त, अमेरिका में अध्यक्षीय प्रणाली का विकास, सरकार के अंगों की स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व का विभाजन, नियंत्रण एवं संतुलन। अन्य देशों में अध्यक्षीय प्रणाली, अध्यक्षीय शासन प्रणाली की विशेषताएँ, संरचनात्मक विभाजन, एकल कार्यपालिका, कार्यात्मक विभाजन, क्या नियंत्रण व संतुलन आवश्यक है। अध्यक्षीय और संसदीय शासन प्रणालियों में अन्तर, अध्यक्षीय प्रणाली की प्रवृत्तियाँ,

राज्य का व्यक्तिवादी दृष्टिकोण

व्यक्तिवाद और अहस्तक्षेप (लेस-ए-फेअर) का अर्थ, धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्रों में व्यक्तिवाद का उदय, अहस्तक्षेप, व्यक्तिवाद और पूँजीवाद, व्यक्तिवाद और अहस्तक्षेप के सिद्धान्तों के दृष्टिकोण, व्यक्तिवादी या अहस्तक्षेपीय राज्य से सामाजिक लोकतांत्रिक या कल्याणकारी राज्य में संक्रमण – राज्य के व्यक्तिवादी सिद्धान्त के गुण और दोष।

कल्याणकारी राज्य

कल्याणकारी राज्य का विकास- आधुनिक काल से पहले कल्याणकारी राज्य, आधुनिक कल्याणकारी राज्य का उदय, कल्याण्कारी राज्य और उसकी विशेषताएँ, उदार पूँजीवादी राज्य के परिणाम, सामाजिक न्याय, कल्याकारी कार्यक्रम, कल्याणकारी राज्य की विशेषताएँ, कल्याणकारी राज्य : समस्याएँ और सम्भावनाएँ, आर्थिक तर्क, राजनीतिक तर्क, राजनीतिक आर्थिक नवीनताएँ, नवीन प्रवत्तियाँ, तीसरी दुनिया और कल्याणकारी राज्य, भारत में कल्याणकार राज्य।

राज्य का मार्क्सवादी सिद्धान्त

सामाजिक वर्गों और वग संघर्ष की मार्क्सवादी अवधारणा, सामाजिक वर्ग, वर्ग भेद, वर्ग संघर्ष और वर्ग चेतना, राज्य की उत्पत्ति का मार्क्सवादी सिद्धान्त, व्यक्तिगत संपत्ति, श्रम विभाजन, राज्यों के प्रकार और उत्पादन पद्धतियाँ, आदिम साम्यवाद की उत्पादन पद्धति, दास प्रथा की उत्पादन पद्वति, सामंती उत्पादन पद्धति में राज्य का स्वरूप, पूंजीवादी उत्पादन पद्धति में राज्य का स्वरूप, समाजवादी उत्पादन पद्धति में राज्य का स्वरूप। राज्य के कार्य, राज्य और शासक तथा शासित वर्ग- राज्य और शासक वर्ग, राज्य और शासित वर्ग, पूंजीवाद का समाजवाद की ओर संक्रमण : मार्क्स और लेनिन के विचार, सर्वहारा की तानाशाही के विषय में मार्क्स के विचार, समाजवादी परिवर्तन के विषय में लेनिन के विचार, राज्य के मार्क्सवादी सिद्धान्त की समीक्षा।

राज्य का अराजकतावादी सिद्धान्त

प्रारम्भिक अराजकतावादी विचारधारा, अराजकतावाद की विभिन्न विचारधाराएँ, अराजकतावाद की व्यक्तिवादी विचारधारा, अराजकतावाद की समूहवादी और साम्यवादी विचारधाराएं, ईसाई अराजकतावाद। मानव स्वभाव के बारे में अराजकतावादी मान्यताएँ, राज्य के विरूद्ध अराजकतावादी तर्क, राज्य के हथियार के रूप में धर्म और संपत्ति, अराजकतावादी समाज, अराजकतावादी उददेश्य के साधन, मार्क्सवाद

से मतभेद। भारतीय राजनैतिक विचारधारा में अराजकतावाद, मूल्यांकन : राज्य विहीन समाज की संभावनाएं, अराजकतावाद के प्रभाव और मूल्य।

सर्वाधिकारवाद

सर्वाधिकारवाद का अर्थ और प्रकृति, सर्वाधिकारवादी राज्यों के प्रकार, सर्वाधिकार और स्वेच्छाचार, सर्वाधिकारवाद और फासीवाद, सर्वाधिकारवाद और तानाशाही, सर्वाधिकार और समाजवादी राज्य, उदारवादी और लोकतांत्रिक राज्यों में सर्वाधिकारवाद।

फासीवाद

फासीवाद के उदय की आर्थिक, राजनीतिक और विचारधारात्मक स्थितियाँ, फासीवाद का वर्ग आधार : दो दृष्टिकोण, फासीवाद सिद्धान्त की मूल विशेषताएं, बुनियादी मानव समानता और व्यक्ति की स्वतंत्रता की मनाही, तर्क का विरोध, बौद्धिकतावाद विरोधी, हिंसा का औचित्य, अभिजात्य शासन, सत्तावादी और सर्वाधिकारवादी चरित्र, नस्लवाद और साम्राज्यवाद। अन्तर्राष्ट्रीय विधि की अवहेलना और शांति विरोधी रूख, फासीवादी राज्य का सहयोगात्मक चरित्र, समग्र और अंश, फासीवाद और तानाशाही : समानताएं और अंतर, फासीवाद और समाजवाद की तुलना।

साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद के उदय के कारण, साम्राज्यवाद की उदार व्याख्याएं, साम्राज्यवाद की मार्क्सवादी व्याख्याएं, लेनिन के सिद्धान्त की मार्क्सवादी आलोचना, प्रणालियाँ, शासन के प्रकार, साम्राज्यवाद और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन, साम्राज्यवाद और नव उपनिवेशवाद।

राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रवाद

परिभाषाएँ, राष्ट्रवाद के तत्व, यूरोप में राष्ट्रवाद का उदभव और विकास, एशियाई राष्ट्रवाद, राष्ट्रवाद के प्रकार, लोकतांत्रिकत राष्ट्रवाद, परम्परागत राष्ट्रवाद, उदार राष्ट्रवाद, सर्वाधिकारवादी अथवा फासिस्ट राष्ट्रवाद,राष्ट्रवाद की विशेषताएं, अंतर्राष्ट्रवाद, सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद।

आर्थिक प्रक्रिया में राज्य की भूमिका

राज्य और आर्थिक विकास की प्रक्रिया, वाणिज्यवाद और अहस्तक्षेपवाद, काल्याणकारी राज्य, मार्क्सवाद, राज्य और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध, तृतीय विश्व के राज्य और आर्थिक प्रक्रियाएँ, तुलनात्मक विवेचन, संकल्पना, तृतीय विश्व की विकास संबंधी समीक्षा, दो मत, मिश्रित अर्थव्यवस्था और भारतीय राज्य, मिश्रित अर्थव्यवस्था : परिचय, मिश्रित अर्थव्यवस्था की परिभाषा, भारतीय मिश्रित अर्थव्यवस्था, भारतीय मिश्रित अर्थव्यवस्था की कमियाँ।

राज्य और सामाजिक प्रक्रियाएँ

धर्मनिरपेक्षता, धर्म निरपेक्षता का अर्थ, भारत में समान सिविल संहिता, सांविधानिक और अन्य सुरक्षात्मक उपाय, समस्याएँ, अल्पसंख्यकों के अधिकार, सांविधानिक और अन्य सुरक्षात्मक उपाय, समस्याएँ, आरक्षण और उससे संबंधित मुद्दे, सांविधानिक और अन्य सुरक्षात्मक उपाय, समस्याएं, सामाजिक विषमताएं और योग्यता का मापदण्ड, संदर्भ में भारतीय सामाजिक विषमताएं, विविध मापदण्ड।

UGPS-02

भारत की राजनैतिक परंपराएं

प्राचीन भारतीय राजनैतिक परंपराएं, बौद्ध समीक्षा, हिन्दू राजनैतिक परंपरा का मूल्यांकन, सूफीवाद और भक्ति आंदोलन का प्रभाव, आधुनिक भारत की राजनैतिक परंपराएं।

सुधारवादी राजनैतिक परंपराएं, पुनरुत्थानवादी राजनैतिक परम्परा, गांधीवादी राजनैतिक परंपरा, समाजवादी राजनैतिक परंपरा, सांप्रदायिक राजनैतिक परंपरा।

उपनिवेशवाद और राष्ट्रीय आंदोलन की धरोहर

औपनिवेशिक विरासत, राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत, राजनीतिक विरासत, आर्थिक विरासत, समाजवादी रूझान, राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया, विदेश नीति।

सामाजिक – आर्थिक ढांचा और राजनीतिक

आजादी के समय सामाजिक-आर्थिक स्थिति :- अर्थव्यवस्था, सामाजिक ढांचा। राजनीतिक व्यवस्था के लक्ष्य और उद्देश्य :- आकांक्षाएं, सैद्धान्तिक दृष्टिकोण। उपनिवेशवादी शासन के बाद का राष्ट्र :- माडल का विरोधाभास, सामाजिक विखंडन।

भारतीय संविधान का निर्माण

संविधान सभा का उद्‌भव (Origin), संविधान की संरचना और चरित्र (स्वरूप) :- संविधान सभा की संरचना और चरित्र का आलोचनात्मक मूल्यांकन, संविधान सभा का काम करने का तरीका, संविधान सभा में निर्णय की प्रक्रिया :- सहमति और समायोजन द्वारा निर्णय, संविधान सभा का राजनैतिक वातावरण व विचारधारात्मक पृष्ठभूमि :- राजनैतिक वातावरण, विचारधारात्मक पृष्ठभूमि, संविधान का दर्शन।

भारतीय संविधान की विचारधारा और दर्शन

संविधानवाद और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन :- 1930 में संविधानवाद का

पनः प्रवर्तन, संविधान सभा पर प्रतिवाद, संविधान सभा की उत्पत्ति, संविधान सभा : एक वैचारिक और दार्शनिक समझौता। भारत का संविधान बनाने में वैचारिक और दार्शनिक मुद्दे :- संविधान सभाः क्या एक मात्र कांग्रेस द्वारा संचालित संगठन, समाजवाद और संविधान, बाद के संशोधन और संविधान की विचारधारा।

मौलिक अधिकार

मौलिक अधिकार तथा ये क्यों दिए गए हैं?, सामान्य उपबंध, समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार :- दोषी ठहराए जाने के बारे में बचाव (संरक्षण), जीवन की सुरक्षा और निजी स्वतंत्रता, गिरफ्तारी और नज़रबन्दी के संरक्षण। शोषण के विरुद्ध अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार, संवैधानिक उपचारों का अधिकार।

राज्य के नीति निर्देशक सिद्धान्त

संविधान का प्रस्ताव के साथ सम्बन्ध, राज्य के नीति निर्देशक सिद्धान्तः मुख्य उपलब्ध (Main Provision), निर्देशक सिद्धान्तों को बनाने में विचारों का निर्धारण, निर्देशक सिद्धान्तों के कार्यात्मक उपयोग (Functional Uses) :- राजनीतिक प्रणाली के लिए महत्व, शासन में व्यवस्था के परिणाम, विकास प्रशासन और निर्देशक सिद्धान्त। निर्देशक सिद्धान्त और मौलिक अधिकार : एक तुलना :- निर्देशक सिद्धान्तों का बदलता हुआ क्षेत्र (विषय)।

न्यायिक पुनरावलोकन : अवधारणाएं और व्यवहार

न्यायिक पुनरावलोकन और मौलिक अधिकार, वैधानिक योग्यता का न्यायिक पुनरावलोकन :- संवैधानिक प्रावधान, न्यायिक दृष्टिकोण। संवैधानिक संशोधनों का न्यायिक पुनरावलोकन :- गोलकनाथ मुकदमें का प्रभाव, न्यायिक पुनरावलोकन की अवधारणा की मूलभूत संरचना, अनुप्रयुक्त (Applied) मूलभूत संरचना, मौलिक अधिकारों और नीति निर्देशक सिद्धान्तों में संतुलन। (प्रतिनिधि) कानून का न्यायिक पुनरावलोकन :- अधिकारातीत (Ultrawires) की अवधारणा, अमान्यता के आधार। प्रशासनिक कार्य का न्यायिक पुनरावलोकनः- विवेक का न्यायिक

पुनरावलोकन, विवेक के प्रयोग के मानदण्ड। प्रशासनिक कार्यों का वर्गीकरण, न्यायिक पुनरावलोकन की विधियाँ :- हुक्मनामा (Writs), निजी कानून के तहत न्यायिक पुनरावलोकन। न्यायिक पुनरावलोकन और न्यायालय की अवमानना, न्यायिक पुनरावलोकन की सीमाएं, न्यायिक पुनरावलोकन में नयी प्रवृत्तियाँ।

भारत में लोकतांत्रिक अधिकारों की स्थिति

लोकतांत्रिक अधिकार : विषय वस्तु और विभिन्नताएं, भारत में लोकतांत्रिक अधिकारों की स्थिति :- स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोकतांत्रिक अधिकारों की मांग, संवैधानिक प्रावधान और संशोधन, दमनकारी सरकारी उपायों का प्रसार। दमन की सामाजिक जड़ें, लोकतंत्र संस्थाओं की भूमिका। लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए संघर्ष : उपलब्धि और भविष्य।

भारतीय संसद : गठन, विकास और उसकी कार्य प्रणाली

भारत में विधायिका का विकास, संसद का गठन :- राज्यसभा, लोकसभा। पीठासीन अधिकारी, लोकसभा अध्यक्ष, लोकसभा उपाध्यक्ष, राज्यसभा सभापति। संसद के विशेषाधिकार, संसद की शक्तियाँ और कार्य, संसद का कार्य प्रणाली :- नयी संसद की शुरुआत, सरकारी विधेयक, विधायी प्रक्रिया, दूसरे सद में विधेयक, वित्तीय शक्तियाँ ैर प्रक्रिया। कार्यपालिका पर संसद के नियंत्रण के उपाय, समिति प्रणाली, संसद की गरिमा में गिरावट।

भारत के राष्ट्रपति : संस्था और गतिशीलता

राष्ट्रपति का कार्यालय :- योग्यताएँ, निर्वाचन पद्धति, कार्यकाल, राष्ट्रपति को पद से हटाने की प्रक्रिया। राष्ट्रपति की शक्तियाँ और कार्य :- साधारण शक्तियाँ, आपातकालीन शक्तियाँ, राष्ट्रपति की स्थिति।

प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद्

विकास, मंत्रिमण्डलीय प्रणाली, प्रधान मंत्री का कार्यालय :- उप-प्रधान मंत्री मंत्रिपरिषद् का आकार और गठन, मंत्रिमण्डलीय बैठकें, मंत्रिमण्डल समिति, मंत्रिमण्डल सचिव, प्रधान मंत्री का कार्यालय। राष्ट्रपति और मंत्रीमण्डल, संसद और मंत्रिमण्डल, प्रधान मंत्रालयिक सरकार।

राज्य सरकारें : राज्यपाल और मंत्रिपरिषद्

राज्यपाल :- नियुक्ति, कार्यकाल, योग्यताएँ, परिलब्धियाँ। शक्ति और कार्य :- कार्यपालिका, विधायी शक्तियाँ, वित्तीय शक्तियाँ, न्यायिक शक्तियाँ, विवेकाधिकार। मंत्रिपरिषद् के साथ संबंध :- नियुक्ति संबंधी अनुभव : विभिन्न परिदृश्य, मंत्रिपरिषद् की बर्खास्तगी, विधानसभा का भंग करना, सामूहिक जिम्मेदारी। राज्यपाल की वास्तविक स्थिति।

भारत में नौकरशाही (अधिकारी तंत्र)

नौकरशाही तंत्र की संकल्पना, अंग्रेजी शासन काल में नौकरशाही (अधिकारी तंत्र), स्वतंत्र भारत में नौकरशाही :- संवैधानिक प्रावधान, प्रशासनिक संरचना-केन्द्र एवं राज्य। तटस्थता, अनामत्व एवं प्रतिबद्धता, नौकरशाही से संबंधित विवाद :- सामान्यज्ञ बनाम विशेषज्ञ, नौकरशाही की विशिष्ट वर्गीयता, मंत्री बनाम सिविल कर्मचारी। वर्तमान प्रवृत्तियाँ।

भारतीय संघवाद की प्रकृति-

संघवाद : एक वैचारिक विश्लेषण, भारतीय संघ का विकास :- भारतीय संघ की मुख्य विशेषताएँ। भारत में संघ की गतिशीलता :- चरण-1, (1947-67), चरण-2 (1967-77), चरण 3 (1977-89)। केन्द्र राज्य सम्बन्धों में विवादास्पद मसले।

संघ-राज्य संबंध -

भारत : राज्यों का संघ, संघ एवं राज्यों के बीच अधिकारों का विभाजनः- विधायी संबंध, प्रशासनिक संबंध, वित्तीय संबंध, योजना एवं विकास में संबंध, व्यापार एवं वाणिज्य में संबंध। संघ-राज्य, संबंध संचालन :- प्रथम चरण, द्वितीय चरण, तृतीय चरण। संघ-राज्य टकराव क्षेत्र, आयोगों, समितियों व दलों की सिफारिशें।

भारत में राज्यों की राजनीति की प्रवृत्तियाँ

राज्यों की राजनीति का अध्ययन कैसे करें, राजनीतिक प्रतिरूपों को प्रभावित करने वाले तत्व-राज्य स्तर पर :- राजनीतिक संस्थाएँ, राजनीतिक पृष्ठभूमि, सामाजिक आर्थिक ढांचा। राज्यों की राजनीतिक प्रतिरूप और प्रवृत्तियाँ :-

दलीय व्यवस्था, संस्थाकरण के प्रतिमान और उनका ह्रास, सरकारी स्थायित्व एवं निष्पादन, क्षेत्रवाद और उपक्षेत्रवाद।

भारत में दलीय व्यवस्था का स्वरूप और विकास

राजनैतिक दल की परिभाषा, दलीय व्यवस्थाओं की किस्में, भारत में दलीय व्यवस्था का स्वरूप और विकास, भारत में दलीय व्यवस्था के विकास के विभिन्न दौर :- 1947 से 1967 तक, 1967 से 1975 तक, 1975 से 1977 तक, 1977 से 1980 तक, 1980 के बाद।

राष्ट्रीय पार्टियाँ : सिद्धान्त, सामाजिक आधार और संगठन

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :- कांग्रेस (इ), कम्यूनिस्ट पार्टियाँ, भारतीय जनता पार्टी, जनता दल। सिद्धान्त विचारधारा :- कांग्रेस (इ), भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), भारतीय जनता पार्टी, जनता दल। सामाजिक आधार :- कांग्रेस (इ), कम्प्यूनिस्ट पार्टियाँ, भारतीय जनता पार्टी, जनता दल। संगठन :- कांग्रेस (इ), कम्युनिस्ट पार्टियां, भारतीय जनता पार्टी, जनता दल।

भारत के क्षेत्रीय राजनैतिक दल

क्षेत्रीय दल की परिभाषा :- क्षेत्रीय दलों के मुख्य उद्देश्य। ऐतिहासिक विकास क्रम :- केन्द्र राज्य संबंधों का संदर्भ। क्षेत्रीय दलों की सामान्य विशिष्टताएं, प्रमुख क्षेत्रीय राजनैतिक दल :- द्रविड़ मुनेज कज़गम (डी.एम.के.) और आल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कगजम (ए.आई.ए. डी.एम.के.), अकाली दल, नेशनल कांफ्रेस, तेलगू देशम पार्टी, असम गण परिषद्, झारखंड पार्टी। दलीय घोषणा पत्रों की संक्षिप्त समीक्षा।

भारत के राजनीतिक आन्दोलन

अर्थ और विशिष्टताएं, किसान और किसान आन्दोलन :- रूपरेखा और पृष्ठभूमि, आजाद भारत में किसान आन्दोलन। जनजातियाँ :- आजादी से पूर्व भारत में जनजातियों के आन्दोलन, आजादी के बाद भारत में जनजातियों के आन्दोलन। भारत में मजदूर वर्ग :- ट्रेड यूनियन आन्दोलन। महिलाओं के आन्दोलन महिलाएं और राजनीतिक दल, महिलाएं और ट्रेड यूनियन।

राजनीतिक समूहः प्रेस, व्यवसाय, छात्र और किसान

प्रेस :- प्रेस की भूमिका, प्रेस की आजादी, प्रेस की स्वाधीनता। व्यावसायिक समूह :- राजनैतिक संगठन, कार्य प्रणाली। छात्रों के समूह, किसानों के समूह :- खेतिहर रणनीति, किसान आन्दोलन, माँगे और कार्य-प्रणाली।

साम्प्रदायिकता एवं धर्मनिरपेक्षता

साम्प्रदायिकता : अर्थ और परिभाषा, साम्प्रदायिकता : उत्तरदायी कारण :- औपनिवेशिक विरासत, विचारधारात्मक स्तर : सम्प्रदायिकता का सांस्कृतिक संदर्भ, राजनीतिक स्तर : भारतीय राज्य का संकट एवं चुनावी राजनीति, आर्थिक स्तर : पूंजीवादी विकास, सामाजिक संकट, सत्तारूढ़ वर्ग की राजनीति। धर्मनिरपेक्षता : अर्थ और प्रकृति :- धर्मनिरपेक्षता का भारतीय रूप। धर्मनिरपेक्षता : निदान :- कारणत्व लोकाचार के रूप में धर्मनिरपेक्षता, साम्प्रदायिकता के विरुद्ध सैद्धान्तिक संघर्ष, जनतांत्रिक अधिकारों की राजनीति साम्प्रदायिकता से समाप्ति के रूप में, धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई समाजवाद की लड़ाई के अभिन्न अंग के रूप में, मुक्ति धर्मत्व : सामाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के लिए संघर्ष के संदर्भ में धर्म के महत्व समझने की कोशिश।

भारतीय राजनीति में जाति

जाति एवं राजनीतिक प्रक्रिया :- जाति, जाति प्रथा एवं इसकी विशेषताएं। जाति एवं जाति व्यवस्था में परिवर्तन, राजनीति में जातिः उपनिवेश काल में जाति-राजनीति अंतक्रिया के स्वरूप :- क्षेत्रीय स्तर, राष्ट्रीय स्तर, जाति एवं इसका वर्ण से संबंध। स्वातंत्र्योत्तर काल में जाति एवं राजनीति, जाति की बढ़ती राजनीतिक प्रासंगिकता : जाति, वर्ग एवं सत्ता :- जाति एवं वर्ग, जाति हिंसा, बदलते समीकरण।

भाषा तथा क्षेत्रीय आंदोलन

भारत की भाषाई स्थिति, भारतीय कांग्रेस तथा भाषावार राज्य, भाषा तथा संविधान सभा, राज्य पुनर्गठन आयोग तथा भाषावार राज्य, राजभाषा का विकास :- त्रिभाषा फार्मूला। सरकारिया आयोग तथा भाषा, क्षेत्रीय

आंदोलन :- तमिलनाडु में क्षेत्रीय आंदोलन, तेलंगाना आंदोलन, महाराष्ट्र आंदोलन, झारखंड आंदोलन असम आंदोलन, पंजाब आंदोलन।

भारत में विकास का राजनीतिक अर्थशास्त्र

आर्थिक सूचक, सामाजिक सूचक, औपनिवेशिक शासन की ऐतिहासिक बिरासत :- राष्ट्रीय आंदोलन, विकास नीति का चयन, विकास नीति की संदर्शिका। विकास नीति के तत्व :- नियोजन लक्ष्य, पंचवर्षीय योजनाएँ लक्ष्य एवं निष्पादन, औद्योगिक नीति :-राज्य की भूमिका, उदारीकरण की प्रवृत्तियाँ। कृषि नीति :- कृषि नीति के लक्ष्य, उत्पादकता बढ़ाना, सुधार।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण

राज्य की परिभाषा, भारतीय राज्य के चरित्र पर सम्युनिस्ट पार्टियों के विचार, भारतीय राज्य के चरित्र पर परम्परागत मार्क्सवादी बुद्धिजीवियों के विचार :- संवैधानिक साक्ष्य, नियोजन प्रक्रिया के नीति-निर्देशक सिद्धान्तों से साक्ष्य, अर्थव्यवस्था की कार्य पद्धति से प्रमाण, इस दृष्टिकोण की सीमाएं। परम्परागत दृष्टिकोणों पर प्रतिक्रियाएं :- भारतीय राज्य का उपनिवेशोत्तर स्वरूप, भारतीय राज्य की तुलनात्मक स्वायत्तता, तुलनात्मक स्वायत्तता के दृष्टिकोण की सीमाएं। भारतीय राज्य के चरित्र पर एक नजर।

उदारवादी लोकतांत्रिक दृष्टिकोण

भारत में राज्य का निर्माण, भारतीय राज्य के उदारवादी सिद्धान्त :- राजनीतिक-संस्थागत परिप्रेक्ष्य, राजनीतिक-अर्थशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, राज्य पर सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य।

UGPS-03

अर्थ व्यवस्था, समाज और शासन व्यवस्था में औपनिवेशिक हस्तक्षेप

उपनिवेशवाद के चरण :- प्रथम चरण व्यापार एकाधिकार और राजस्व चोरी का काल, द्वितीय चरण : व्यापार द्वारा शोषण का काल, तृतीय चरण :- विदेशी निवेश और उपनिवेशों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्द्धा का काल। भारतीय समाज में औपनिवेशिक हस्तक्षेप :- सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में हस्तक्षेप, अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप, शासन व्यवस्था में हस्तक्षेप।

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन : विषय एवं दृष्टिकोण

औपनिवेशिक परिप्रेक्ष्य और औपनिवेशिक शासन की अवधारणा, पुनर्जागरण और सामाजिक सुधार :- धर्म और समाज की विवेकपूर्ण समीक्षा, धार्मिक पुनरुत्थानवाद। उदारवाद : विभिन्न तत्व :- एम0जी0 रानाडे, ज्योतिबा फुले और बी0 आर0 अम्बेडकर। राष्ट्रवाद, समाजवादः- क्रांतिकारी समाजवाद मार्क्सवादी समाजवाद, कांग्रेसी समाजवाद। सर्वोदय और अराजकतावाद।

परिचय

समाज सुधार आंदोलन को जन्म देने वाली परिस्थितियाँ, समाज सुधार विचारधारा की रूपरेखा :- पुनरुत्थान बनाम सुधार, परिवर्तन और प्रगति का विचार, व्यक्ति केन्द्र बिन्दु, क्या राजनैतिक सुधार से पहले सामाजिक सुधार होना चाहिए?, सामाजिक सुधार के तरीके। धार्मिक सुधार :- मूर्तिपूजा और अंधविश्वास पर प्रहार, नए ईश्वरवादी विचार। सामाजिक सुधार :- जाति व्यवस्था पर प्रहार, नारी की शिक्षा और उत्थान। राजनैतिक उदारवाद :- स्वतंत्रता, कानून और विवेक, संविधानवाद और प्रतिनिधि सरकार। आर्थिक राष्ट्रवादी और कल्याणकारी राज्य का विचार।

राजा राममोहन राय

धार्मिक सुधारक के रूप में राय :- राय पर पड़ने वाले प्रभाव, हिन्दुत्व की पुनर्विवेचना। समाज सुधार के रूप में राय। जाति व्यवस्था पर, महिलाओं

के अधिकारों पर, सती प्रथा पर। राय की राजनीतिक उदारवादिता :- स्वतंत्रता पर, व्यक्ति के अधिकारों पर, कानून और न्यायिक प्रशासन पर, राज्य की कार्यवाही के क्षेत्र पर, शिक्षा पर, अन्तर्राष्ट्रीय सह-अस्तित्व पर।

न्यायमूर्ति एम.जी. रानाडे का राजनैतिक चिंतन

रानाडे और धार्मिक सुधार :- रानाडे की हिन्दू धार्मिक प्रथाओं की आलोचना, रानाडे की ईश्वरवाद का दर्शन, प्रार्थना समाज और ब्रह्मों समाज की तुलना। रानाडे और सामाजिक सुधार :- रानाडे की हिन्दू समाज की आलोचना, रानाडे सामाजिक सुधार के तरीकों पर, रानाडे सामाजिक सुधार पर। रानाडे की भारतीय इतिहास की विवेचना :- रानाडे की भारतीय इतिहास की विवेचना :- रानाडे भारतीय इतिहास में इस्लाम की भूमिका पर, रानाडे के मराठा शक्ति पर विचार, रानाडे के भारत में अंग्रेजी राज पर। न्यायमूर्ति रानाडे के राजनैतिक विचार :- रानाडे के उदारवाद पर विचार, रानाडे राज्य की प्रकृति पर कार्यों पर, रानाडे के भारतीय प्रशासन पर विचार। रानाडे भारतीय राष्ट्रवाद के भविष्यवक्ता। न्यायमूर्ति रानाडे के आर्थिक विचार :- रानाडे भारतीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था पर, रानाडे भारतीय कृषि पर, रानाडे औद्योगिकरण पर।

गोपाल कृष्ण गोखले (1866-1915)

गोखले के राजनीतिक जीवन का विकास :- जीवन वृत्तांत, रचनात्मक प्रभाव। गोखले के राजनीतिक विचारों के स्रोत, राजनीतिक विचार, भारत में ब्रिटिश शासन के प्रति प्रतिक्रिया, उदारवाद, राजनीतिक लक्ष्य और कार्यक्रम। आर्थिक और सामाजिक विचार, उपसंहार।

परिचय

आक्रामक राष्ट्रवाद क्या है?, राष्ट्रवाद के तत्व, आक्रामक राष्ट्रवाद की प्रमुख विशेषताएं, आक्रामक राष्ट्रवाद और आतंकवादी क्रांतिकारी अराजकतावाद, आक्रामक राष्ट्रवाद : एक अत्यधिक भावुकतापूर्ण धार्मिक भावना, राष्ट्र का मिशन या उद्देश्य : स्वामी विवेकानन्द और स्वामी दयानंद सरस्वती आक्रामक राष्ट्रवाद के पीछे की धार्मिक आस्थाः पुरुषोचित और आग्रही धर्म, भगवद्गीता, साधन और लक्ष्य का संबंधः आक्रामक राष्ट्रवाद और गांधीवादी

विचारों की तुलना, इटली की प्रेरणा, राष्ट्रवाद का धर्म, बंगाल का बंटवारा, आक्रामक राष्ट्रवाद का प्रभाव और इसका समकालीन महत्व।

बाल गंगाधर तिलक

तिलक : एक संक्षिप्त जीवन-परिचय, सामाजिक सुधार पर तिलक के विचार :- विवादास्पद मुद्दे, तिलक का दृष्टिकोण। तिलक के आर्थिक विचार :- आर्थिक मूद्दों पर तिलक के विचार। तिलक के राजनीतिक विचार :- तिलक के राजनीतिक चिंतन की दार्शनिक बुनियाद, राष्ट्रवाद अतिवाद : एक विचारधारा के रूप में, अतिवाद : कार्यवाही का कार्यक्रम। एक संक्षिप्त आंकलन।

श्री अरबिंदो का राजनीतिक चिंतन

श्री अरबिंदो : उनका जीवन और कृतित्व :- प्रारंभिक जीवन निर्माण का दौर, तैयारी का दौर, तैयारी का दौर, राजनीतिक सक्रियता का दौर, बाद का दौर – 1910 के बाद के वर्ष। श्री अरबिंदो के राजनीतिक चिंतन की दार्शनिक बुनियाद, राजनीतिक चिंतन : प्रारंभिक दौर :- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर श्री अरबिंदों के विचार, अंग्रेजी राज की प्रकृति, राष्ट्र की अवधारणा और आध्यात्मिक राष्ट्रवाद का सिद्धान्त, अंतिम लक्ष्य-स्वराज, राजनीतिक कार्यवाही का सकारात्मक कार्यक्रम। दूसरा दौर – 1910 के बाद के वर्ष :- मानव समाज का उद्‌विकास, मानव एकता की प्रकृति, आलोचनात्मक मूल्यांकन :- राष्ट्रवाद का सिद्धान्त-आध्यात्मिक या धार्मिक, राजनीतिक मुद्दों पर जोर, श्री अरबिंदोः अराजकतावादी/आतंकवादी।

भगत सिंह

भगत सिंह का क्रांतिकारी बनना :- पारिवारिक पृष्ठभूमि, पंजाब में बढ़ती अशान्ति, राजनीतिक संपर्क, लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला, आतंकवाद का पक्ष, लाहौर षड्यंत्र कांड। भगत सिंह की विचारधारा :- नास्तिकता का पक्ष, सामाजिक क्रांति के बारे में उनके विचार। कांग्रेसी नेतृत्व का अस्वीकार।

उपनिवेशवाद, जाति-व्यवस्था और आदिवासी आंदोलन

उपनिवेशवाद और सांस्कृतिक सामाजिक क्षेत्रों में इसका प्रभाव, सुधार आन्दोलन :- जाति-विरोधी : कुछ विवरण। उपनिवेशवाद और अर्थतंत्र पर इसका प्रभाव, जाति-व्यवस्था और उपनिवेशवाद :- ब्रिटिश न्यायिक एवं प्रशासनिक व्यवहारों का प्रभाव, आर्थिक परिवर्तनों का प्रभाव, उदारवादी दर्शन के प्रभावों के अधीन जाति-विरोधी आंदोलन। आदिवासी आंदोलन।

ज्योतिबा फुले

जीवन, लेखन कार्य, उपनिवेशवादी सरकार के प्रति दृष्टिकोण :- अंग्रेजी राज की प्रशंसा, अंग्रेजी राज की आलोचना। उपनिवेशवादी सरकार के प्रति दृष्टिकोण :- अंग्रेजी राज की प्रसंशा, अंग्रेजी राज की आलोचना। भारतीय समाज-व्यवस्था की समीक्षा :- समाज-व्यवस्था की समीक्षा के दार्शनिक आधार, वर्ण एक जाति-व्यवस्था पर प्रहार, महिला-पुरुष समानता। भारतीय अर्थतंत्र की समस्याएं :- कृषि क्षेत्र का संकट, कृषि-समस्या का समाधान। सार्वभीम धर्म।

ई.वी. रामास्वामी नायकर

प्रारंभिक जीवन, 1930 तक की राजनीतिक गतिविधियां, गुरुकुल विवाद, वर्णाश्रम धर्म, आत्म-सम्मान आन्दोलन, 1925 भाषा विवाद।

डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर

भारत में ब्रिटिश राज के प्रति अम्बेडकर का दृष्टिकोण, प्रजातंत्र पर अम्बेडकर के विचार :- अर्थः सामाजिक और आर्थिक प्रजातंत्र, लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक तत्व। राज्य समाजवाद पर अम्बेडकर के विचार :- समाजवाद के प्रति प्रतिबद्धता, राज्य समाजवाद का अर्थ, सरकार की भूमिका, अम्बेडकर और भारतीय संविधान का प्रारूप निर्माण, सामाजिक परिवर्तन पर अम्बेडकर के विचार :- सुधारों को प्रमुखता/वरीयता, जाति-व्यवस्था पर प्रहार, जाति और अस्पृश्यता का उद्‌भव। अस्पृश्यता का उन्मूलन :- अस्पृश्यों में आत्म-सम्मान, शिक्षा, आर्थिक प्रगति, राजनीतिक सदृढ़ता, धर्म परिवर्तन। मूल्यांकन :- अस्पृश्यों में राजनीतिक चेतना जागृति

:- अस्पृश्यों में राजनीतिक चेतना जागृति, स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व।

भारत में उपनिवेश विरोधी आदिवासी आंदोलन

उपनिवेश काल के दौरान आदिवासियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति, आदिवासियों पर अंग्रेजी नीतियों का प्रभाव :- प्रस्तावना, वन-नीति। आदिवासी आंदोलनों की मुख्य विशेषताएं, भारत के कुछ प्रमुख आदिवासी आंदोलन : तामर विद्रोह (1789-1832), संथालों का खेखार आंदोलन (1833), संथाल विद्रोह (1855), बोकटा विद्रोह, सरदारी लड़ाई या मुक्ति लड़ाई आंदोलन (1858-95), बिरसा मुंडा विद्रोह (1895-1901), गुजरात का देवी आंदोलन (1922-23), मिनादपुर का आदिवासी आंदोलन (1981-24), मालदा में जीत संथाल का आंदोलन (1924-32), उड़ीसा के आदिवासी और राष्ट्रीय आंदोलन (1921-36), असम (तत्कालीन असम, नागालैंड, मेघालय और मिजोरम) का अदिवासी आंदोलन।

परिचय

ब्रितावनी (ब्रिटिश) शासन के प्रति भारतीय प्रतिक्रिया :- विभिन्न प्रतिक्रियायें, संगठनों एव आंदोलन के माध्यम से प्रतिबिम्बित भारतीय प्रतिक्रिया, नरमपंथी प्रतिक्रिया। मुस्लिम साम्प्रदायिक अलगाववाद :- मुस्लिम राजनीतिक चिंतन की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, धार्मिक बिम्ब विधान एवं प्रतीकावाद। पुनर्जागरणवादी राष्ट्रावादी राजनीति :- दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, वी0डी0 सावरकर। हिन्दू-मुस्लिम समस्या के कतिपय आयाम।

स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकान्द तथा वी0डी0 सावरकर

स्वामी दयानंद सरस्वती :- जीवन-रेखा, दयानंद के राजनीतिक विचार, महिला समाज, शिक्षा और जनवाद। स्वामी विवेकानंद :- स्वतंत्रता का दर्शन एवं अवधारणा, राष्ट्रवाद और राजनीति की अवधारणा। वी0डी0 सावरकर :- जीवन रेखा, सावरकर के राजनीतिक विचार।

सर सैयद अहमद खान, मोहम्मद इकबाल, एम0ए0 जिन्ना तथा अबुल कलाम आज़ाद

सर सैयद अहमद खान :- अलीगढ़ आंदोलन, राजनीतिक चिंतन। मोहम्मद इकबाल :- इस्लाम तथा अहं, इकबाल के राजनीतिक चिन्तन के आधारभूत सिद्धान्त उपराष्ट्रवाद, प्रजातंत्र, इस्लामिक प्रजातंत्र, समाजवाद, व्यक्ति (व्यष्टि)। एम0 ए0 जिन्ना :- उदारवाद और जिन्ना, राष्ट्रवाद, द्वि-राष्ट्र सिद्दान्त। अबुल कलाम आज़ाद : अबुल कलाम आज़ाद के विचारों का स्वच्छन्दतावादी काल (रोमांटिक फेज़) राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र, अबुल कलाम आज़ाद के विचारों का उत्तर स्वच्छन्दतावादी (पोस्ट रोमांटिक फेज)।

स्वराज की अवधारणा, सत्याग्रह और पश्चिमी सभ्यता की आलोचना

सभ्यतागत औचित्य और अंग्रेजी शासन :- अंग्रेजी शासन की वैधता के संबंध, में गाँधी, उग्रवादी एवं नरमपंथियों के विचार। हिन्द स्वराज के बारे में गाँधी के विचार :- गाँधी, उग्रवाद एवं ब्रिटिश साम्राज्यवाद, गाँधी, नरमपंथी एवं ब्रिटिश साम्राज्यवाद, स्वराज पर गाँधी के विचार। आधुनिक सभ्यता के संबंध में गाँधी की समीक्षा। स्वराज के राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक आयाम :- परिभाषा और अर्थ, स्वराज या सहयोगी प्रजातंत्र, स्वराज और स्वतंत्रता, पूर्ण स्वराज, पूर्ण स्वराज, आर्थिक आयाम। आधुनिक सभ्यता और स्वराज पर गाँधी के संशोधित विचार :- आधुनिक उदारतावाद द्वारा नागरिक स्वाधीनता की चिरकालिक प्रशंसा, गाँधी राज। सत्याग्रह :- आरम्भिक प्रयोग अर्थ आधारभूत सिद्धान्त अहिंसा और सत्याग्रह तपस। गाँधीवादी विचारों पर कुछ आलोचनात्मक टिप्पणियाँ पश्चिमी आधुनिकता के प्रति रवैया, सत्याग्रह की अव्यवहारिकता, पश्चिमी विचारको द्वारा मूल्यांकन।

सर्वोदय और गाँधीवादी विकल्प

व्यक्ति की अवधारणा, राजनीति में नैतिकता की भूमिका, राजनीतिज्ञ की अवधारणा, नागरिक समाज और राज्य, ग्राम-पंचायत, हिन्दूवाद।

गाँधीवादी सामाजिक सुधार : भूदान आंदोलन

रचनात्मक कार्यक्रम की अवधारणा, सर्वोदय की अवधारणा :- सर्वोदय का आशय तकनीकी की भूमिका, तकनीकी की भूमिका, ग्राम-विकास की अवधारणा, सर्वोदय संबंधी विनोबा की अवधारणा। भूदान आंदोलन :- ग्रामदान की अवधारणा, ग्राम पंचायत की भूमिका, जय प्रकाश नारायण का योगदान, व्यक्तिगत संपत्ति की भूमिका संगठन की भूमिका।

राष्ट्रवाद और सामाजिक क्रांति-। (समाजवाद) : एक परिचय

समाजवाद के प्रकार :- विकासात्मक समाजवाद। समाजवाद का दर्शनशास्त्र :- आदर्श समाजवाद, आदर्श समाजवाद का प्रभाव, जर्मनी का समाजिक लोकतंत्र। भारत में समाजवादी आंदोलन के लिए व्यावहारिक परिस्थितियां, समाजवादी विचारों का विकास, कांग्रेस समाजवादी दल। जवाहरलाल नेहरू और समाजवाद :- नेहरू द्वारा मार्क्सवाद की आलोचना, समाजवादियों पर नेहरू के विचार, नेहरू का समाजवाद पर प्रभाव, भूमि सुधार और अन्य मसलों पर नेहरू के विचार। सुभाषचन्द्र बोस और समाजवाद :- बोस के विभिन्न कार्यकलाप बोस का दर्शनशास्त्र, बोस की कार्यसूची। आचार्य नरेन्द्रदेव और समाजवाद :- आचार्य का दर्शनशास्त्र और गतिविधियां, नरेन्द्र देव के कृषिक पुननिर्माण पर विचार, आचार्य और नव-वामपंथी आंदोलन। जयप्रकाश नारायण के समाजवाद पर विचार :- समाजवाद और सामाजिक-अर्थिक रचना। राममनोहर लोहिया और समाजवाद।

जवाहर लाल नेहरू

नेहरू के राजनैतिक विचारों की प्रमुख विशेषताएं, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति नेहरू का रवैया, 1947 के बाद राष्ट्र-निर्माण समाजावाद और सामाजिक क्रांति के बारे में नेहरू के विचार, राष्ट्रवाद के आधार के रूप में राष्ट्रीय अर्थतंत्र नेहरू का वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्वतंत्र विदेश नीति एवं राष्ट्रीय स्वतंत्रता, अन्तर्राषट्रीय दृष्टिकोण।

सुभाषचन्द्र बोस

प्रारंभिक जीवन, उनकी गतिविधियाँ, सुभाष के राजनैतिक दर्शनशास्त्र की

मूल अवधारणा :- इतिहास के विषय में उनके विचार। उग्रवादी राष्ट्रवाद तथा देशभक्ति, राष्ट्रनिर्माण पर बोस के विचार, स्वदेशी और राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता की अवधारणा, समाजवाद परिवर्तन, राष्ट्रीय सामाजिक क्रांति के साधनः गुरिल्ला (छापामार) संग्राम, बोस और फासिज़्म, प्रगतिशील गुट (दल) के उद्देश्य।

जयप्रकाश नारायण और आचार्य नरेन्द्र देव

जय प्रकाश एवं नरेन्द्र देव :- जयप्रकाश और नरेन्द्र देव के आधारभूत दर्शन, जयप्रकाश और कांग्रेस समाजवादी दल (सी0एस0पी0) की स्थापना, जय प्रकाश एवं भारत में मार्क्सवाद का अनुपालन, समाजवादी कार्यक्रम एवं नरेन्द्र देव :- समाजवाद एवं लोकतंत्र, तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का विरोध, समाजवाद उधार लिया हुआ सिद्धान्त नहीं है, पूर्वी एवं पश्चिमी विचारों के विद्यार्थी के रूप में सांस्कृतिक मार्क्सवादी, धर्म एवं राजनीति के मेल के विरोधी, जय प्रकाश और आचार्य : कुछ विस्तृत जानकारी, समाजवादी एवं द्वितीय विश्वयुद्ध, गाँधी एवं कांग्रेस नेतृत्व पर समाजवादी दबाव, स्वतंत्रता के बाद के काल में समाजवादी, स्वतंत्रता के बाद जे0 पी0, जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा।

राममनोहर लोहिया

लोहिया का जीवन, लोहिया-एक चिन्तक, बौद्धिक संदर्भ, वर्तमान व्यवस्था का विश्लेषण, लोहिया का इतिहास का सिद्धान्त, पूंजीवाद और साम्यवाद, भविष्य के लक्ष्य, परिवर्तन लाने के लिए व्यूह-रचना, एक समीक्षात्मक-मूल्यांकन।

राष्ट्रवाद और सामाजिक क्रांति-॥ (साम्यवादी) : प्रस्तावना

आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि :- आर्थिक पृष्ठभूमि, राजनीतिक पृष्ठभूमि। भारत में मार्क्सवादी राजनीतिक चिंतन :- स्वतंत्र्य-पूर्व काल, स्वातंत्र्योत्तर काल।

कम्युनिस्ट (वामपंथ) और राष्ट्रीय आंदोलन

भारत में वामपंथी राजनीति की उत्पत्ति :- पृष्ठभूमि : विकासकालीन गुट,

शुरुआती कम्युनिस्ट गुटों की गतिविधियाँ, कॉमिन्टन में वैचारिक बहस, मानवेन्द्र नाथ रॉय की भूमिका। मज़दूर-किसान पार्टियां 1926-30 :- मज़दूर-किसान पार्टी, एम0एन0 रॉय और कांग्रेस, मज़दूर-किसान पार्टियों के कार्य और साम्यवादी (कम्युनिस्ट) प्रभाव का विकास, मज़दूर-किसान पार्टियों का उग्र-वामपंथी झुकाव। संयुक्त मोर्चा, 1934-40 :- कांग्रेस के वामपंथी गुट, जन-आंदोलनों का विकास और संयुक्त मोर्चे की अवधारणा पर वैचारिक बहस, वामपंथी मोर्चे में फूट का दौर। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान कम्युनिष्ट आंदोलन :- ''जनयुद्ध'' की रणनीति, कम्युनिस्ट और पाकिस्तान का मुद्दा।

एम0 एन0 रॉय : मार्क्सवाद और क्रांतिकारी मानवतावाद

कार्मिटर्न (कम्युनिस्ट इंटरनेशनल) और उपनिवेशवाद का मुद्दा, रॉय और भारतीय राजनीति :- '' संक्रमणकालीन भारत'' में संक्रमण के बारे में, संगठन के बारे में, रॉय और द्वितीय विश्व युद्ध, विचार प्रणाली की समस्याएं। क्रांतिकारी मानवतावाद :- मार्क्सवाद की समीक्षा, राजनीति का मानवतावादी प्रारूप, दलविहीन जनतंत्र। मूल्यांकन।

समकालीन मार्क्सवादी चिंतन (भारत)

भारतीय मार्क्सवादी चिंतन की विशिष्टता, भारतीय मार्क्सवादी और ऐतिहासिक भौतिकवाद, औपनिवेशिक शासन के बारे में भारतीय मार्क्सवादीयों के विचार, भारतीय मार्क्सवादी और भारतीय स्वतंत्रता की प्रकृति, भारतीय राजसत्ता और शासक वर्ग के बारे में मार्क्सवादियों के विचार :- भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन में विभाजन, भारतीय मार्क्सवादी और भारतीय राज। भारतीय मार्क्सवादी और विदेश नीति, भारतीय मार्क्सवादी और जाति व्यवस्था, भारतीय मार्क्सवादी और राष्ट्रीयता का प्रश्न, भारतीय मार्क्सवादी और संगठनिक रणनीति।

राष्ट्रवाद और सामाजिक क्रांति : एक अवलोकन

राष्ट्रीय आंदोलन, समाजवाद और सामाजिक-क्रांति : एक अवलोकन, जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, समाजवादी, मार्क्सवाद, समाजवाद और सामाजिक-क्रांति : एक अवलोकन, कम्प्युनिष्ट, एम0एन0 रॉय।

UGPS-04

अंतर्राष्ट्रीय संबंध-अध्ययन का क्षेत्र

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध क्या है? समकालीन अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का विकास, अध्ययन का क्षेत्र, परिभाषा एवं विकास :- अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, अतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध की स्वायत्तता की आलोचना, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में उलझाव एवं इसकी अंतर्वैषयिक () प्रकृति, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अंतर-अध्ययन की समस्याएं, सैद्धान्तिक विश्लेषण या नीति का अध्ययन, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के बदलते प्रसंग, उभरती प्रवृत्तियाँ।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन के नज़रिये

परम्परावादी नज़रिया, यथार्थवादी अध्ययन प्रणाली, आदर्शवादी विचार, मूल्यांकन, वैज्ञानिक नज़रिया, निकाय नज़रिया, गेम थियोरी या खेल सिद्दान्त निर्णय-परक नज़रिया, संचार आधारित नज़रिया।

साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद के विकास की पृष्टभूमि, पूँजीवाद की पद्धति एवं औपनिवेशिक विस्तार, उपनिवेशवाद की प्रणाली, उपनिवेशवाद की कुछ विशेषताएँ, उपनिवेशवाद और व्यापार का विस्तार, साम्राज्यवाद के सिद्धान्त, उपनिवेशवाद को उचित जताने वाले सिद्धान्त, उपनिवेशवाद पर मार्क्स के विचार, साम्राज्यवाद पर अध्ययन, उपनिवेशी शासन, उपनिवेशवाद की समस्याएँ एवं युद्ध, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद साम्राज्यवाद : नवउपनिवेशवाद, नवउपनिवेशवाद के कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त।

प्रथम विश्व युद्ध, अक्टूबर की क्रांति एवं शांति समझौते।

प्रथम विश्वयुद्ध, युद्ध के प्रमुख कारण, युद्ध की मुख्य घटनाएँ, युद्ध के परिणाम, बोल्शेविक क्रांति, रूस में सामाजिक प्रजातांत्रिक आंदोलन, रूसी राजतंत्र का पतन एवं बोल्शेविक क्रांति की स्थापना, बोल्शेविक विजय : साम्राज्यवाद को चुनौती, शांति बोल्शेविक नीति के अंतरंग पहलू के रूप में, सोवियत सरकार की शांति पहले, शांति की उद्घोषणा, ब्रेस्ट-लिटोव्स्क

शांति संधि, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, मैत्री संधियाँ, प्रथम विश्वयुद्ध के बाद शांति समझौते, पेरिस का शांति सम्मेलन वर्साय की संधि अन्य लघु संधियाँ।

संप्रभु राज्य व्यवस्था का उदय

आधुनिक राष्ट्र-राज्य, राष्ट्र राज्य के मूल तत्व, संप्रभु राज्य की धारणा, संप्रभु राज्यों की अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था, ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः पूर्ववर्ती अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्थायें, प्राचीन यूनान के नगर-राज्य, रोमन साम्राज्य, इटली में पुनर्जागरण, आधुनिक संप्रभु राज्य व्यवस्था का उदय, क्लासिकी युग, यूरोपीय ''सामंजस्य'' (दि यूरोपीयन कन्सर्ट), संप्रभु राज्य व्यवस्था का वर्तमान और भविष्य, राज्य की प्रभुसत्ता की सीमायें।

सामर्थ्य (केपेबिलिटि)

सामर्थ्य क्या है?, शक्ति तथा सामर्थ्य, सामर्थ्य : मूर्त तथा अमूर्त तत्व, सामर्थ्य तथा संप्रभु राज्य व्यवस्था : आधारभूत मुद्दे।

विदेश नीति निर्माण के गतिशील तत्व

मूल निर्णायक, विदेश नीति यंत्र रचना, विदेश नीति के निर्माण में विवाद बिन्दु एवं संदर्भ, व्यवसायिक अन्तर्गामी तत्व, भारत में विदेश नीति का निर्माण।

युद्ध का अवैधीकरण

युद्ध को अवैध घोषित करने के प्रयास, हेग सम्मेलन, राष्ट्र संघ की स्थापना : प्रतिज्ञा-पत्र की मुख्य प्राथमिकताएँ, फ्रांस की विदेश नीति और सुरक्षा की खोज, आपसी सहायता की प्रारूप संधि : 1923, जनेवा चार्टर, 1924, लोकार्नो समझौता, 1925, संयुक्त राष्ट्र की स्थापना : चार्टर का एक मूल्यांकन।

सामूहिक सुरक्षा

सामूहिक सुरक्षा क्या है? सामूहिक सुरक्षा की धारणायें, सामूहिक सुरक्षा एवं सामूहिक रक्षा, सामूहिक सुरक्षा-केस अध्ययन,अबीसिनिया (इथिपोपिया) पर इटली का आक्रमण, कोरिया संकट, स्वेज संकट, सामूहिक सुरक्षा और

यथा-स्थिति, सामूहिक सुरक्षा-इसका भविष्य।

क्षेत्रीय सुरक्षा

राष्ट्र संघ के अंतर्गत क्षेत्रीय सुरक्षा, संयुक्त राष्ट्र संघ के अधीन क्षेत्रीय सुरक्षा, कुछ उदाहरणों का अध्ययन, औस (ओ.ए.एस.), नाटो, सीटो, वॉरसा पैक्ट।

राष्ट्र संघ

राष्ट्र संघ की स्थापना, राष्ट्र संघ के उद्देश्य एवं लक्ष्य, राष्ट्र संघ का संगठन, सभा, परिषद् सचिवालय, अधिकार-पत्र व्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय न्याय का स्थायी न्यायालय, राष्ट्र संघ की उपलब्धियाँ, संघर्ष का निराकरण अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहन, राष्ट्रसंघ का मूल्यांकन, राष्ट्रसंघ में संवैधानिक कमी, संयुक्त राज्य अमेरिका की सदस्यता का न होना, मूल्यांकन।

फासिवाद का उदय

यूरोप में फासिस्टवाद, अत्यावश्यक लक्षण, इटली, जर्मनी और स्पेन में फासिस्टवाद, इटली में फासिस्टवाद का उदय, फासिस्टवाद के उदय के कारण, मुसोलिनी-समाजवादी के फासिस्ट, इटली को फासिस्ट बनाना, फासिस्ट इटली की नीतियाँ, फासिस्ट इटली की उल्लेखनीय घरेलू नीतियाँ, अतिवादी राष्ट्रवाद : अल्टो एडिग, फासिस्ट इटली की विदेश नीति के आधार, मुसोलिनी की प्रारंभिक विदेशी नीति, अंबीसीनिया एवं अलबानिया को हड़पना, बालवाल की घटना, इटली-अबीसीनियन युद्ध, स्पेन और आस्ट्रिया, इटली और अलबानिया।

तृतीय रीश (Reich) की विदेश नीति

हिटलर तथा तृतीय जर्मन साम्राज्य (थर्ड राइक) हिटलर की सत्ता ग्रहण करना, तृतीय जर्मन साम्राज्य की विदेश नीति के मूल आधार, सार प्रदेश की जर्मनी को पुनः प्राप्ति से पहले की विदेश नीति, हिटलर द्वारा प्रारंभिक वर्षो में शांति प्रियता का आडंबर (दिखावा) तृतीय जर्मन साम्राज्य की प्रारंभिक विदेश नीति का पड़ोसियों पर प्रभाव, रोम-बर्लिन-टोकियो धुरी, संधियों का खण्डन (अस्वीकरण), आंग्ल-जर्मन नौ-सेना, समझौता,

अबीसिनिया तथा स्पेन, धुरी का निर्माण, आक्रमण तथा विस्तार, आस्ट्रिया पर अधिकार, चेकोस्लोवाकिया का विनाश, डेजिंग तथा पोलैण्ड।

द्वितीय विश्व युद्ध

द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण एवं उसका प्रारंभ, युद्ध का प्रारंभ, अमेरिका और रूस में मित्र भाव, धुरी शक्तियों का पतन, जर्मनी एवं इटली की पराजय, जापान की पराजय, स्थायी शांति की समस्या,युद्धकालीन घोषणाएँ, युद्धकालीन सम्मेलन, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शांति संस्थापना, शांति सन्धियाँ।

द्विध्रुवीयता और शीतयुद्ध

द्विध्रुवीय विश्व का उद्‌भव और इसकी विशेषताएं, शीतयुद्ध : विभिन्न आयाम और पहलू, तनाव शैथिल्य से द्वितीय शीत-युद्ध तक, महाशक्तियों के संबंधों में नयी प्रवृत्तियाँ।

विश्व राजनीति में एक शक्ति के रूप में चीन

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :- स्वगृहीत विलगाव, ह्रास का काल, चीन का एक शक्ति के रूप में उदय, शक्ति के तत्व :- भोगोलिक स्थिति, जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधन आर्थिक विकास, सैन्य शक्ति। चीन और महाशक्तियाँ :- चीन और सोवियत संघ, चीन और अमेरिका। चीन और तीसरी दुनिया।

विउपनिवेशीकरण, राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और तृतीय विश्व का उद्‌भव

विउपनिवेशीकरण – मुख्य कारण, राष्ट्रीय आंदोलन, अंतर्राष्ट्रीय कारक, विउपनिवेशीकरण, विउपनिवेशीकरण के तरीके, तीसरी दुनिया का उद्‌भव, तीसरी दुनिया : अर्थ और विशेषताएँ, अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में तीसरी दुनिया।

संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका एवं अंतर्राष्ट्रीय शांति-

वैधानिक योजना :- संरचनात्मक स्वरूप, शक्तियों का विभाजन, सुरक्षा परिषद् की शक्तियाँ, शीतयुद्ध और उसका प्रभाव, सुरक्षा परिषद् का ह्रास/पतन, साधारण सभा एवं महासचिव पर प्रभाव, तनाव-शौथिल्य और नव शीतयुद्ध, अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए प्रयासः एक ऐतिहासिक रूपरेखा : सुधार एवं गलती के प्रारंभिक वर्ष, 1956-एक ऐतिहासिक मीलस्तंभ, अनिश्चितता‌पूर्ण दशक, ताजा उपलब्धियाँ/सफलताएँ।

निरस्त्रीकरण के प्रयास

संबंधित अवधारणाएँ और उनके अर्थ :- हथियारों की होड़, निरस्त्रीकरण और शस्त्र नियंत्रण, निरस्त्रीकरण का तर्काधार, मानव जीवन का संरक्षण, पारिस्थितिकीय तर्काधार, आर्थिक तर्काधार : निरस्त्रीकरण और विकास। निरस्त्रीकरण में संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका, भारत, निर्गुट आंदोलन और निरस्त्रीकरण, शस्त्र परिसीमन और निरस्त्रीकरण समझौते : एक सामान्य समीक्षा, निरस्त्रीकरण : भावी संभावनाएँ।

मानव अधिकारों के लिए संघर्ष

संयुक्त राष्ट्र संघ :- मानव अधिकारों की सार्वभौम भोषणा, अन्तर्राष्ट्रीय अनुबंध, विशिष्ट मानव अधिकारों के साधन, मानवीय अधिकारों को लागू करना, समकालीन मानव अधिकारों की धारणा के लक्षण। तृतीय संतति के अधिकार और उभरती विश्व व्यवस्था, क्षेत्रीय मानव अधिकार व्यवस्थाएँ, यूरोपीय व्यवस्था, अन्तः अमेरिकी व्यवस्था, अफ्रीकी व्यवस्था। मानव अधिकारों की वर्तमान समस्याएँ, गैर-सरकारी संगठन और मानव अधिकार।

क्षेत्रीय संगठन एवं एकीकरण-दक्षेस (सार्क) से विशेष संदर्भ में

क्षेत्रीयता का अर्थ :- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, क्षेत्रीय संगठनों का वर्गीकरण बहु-उद्देशीय संगठन, संधि (सैनिक) संगठन, आर्थिक (कार्यरत) संगठन। क्षेत्रीयतावाद बनाम विश्ववाद :- क्षेत्रीय संगठन और संयुक्त राष्ट्र संघ। क्षेत्रीय एकीकरण के सिद्धान्त :-संघवाद (फेडेरेलिज्म) कृत्यवाद (फंक्शनलिजम), नव-कृत्यवाद (निओ-फंक्शनलिज्म) दक्षिण एशिया में क्षेत्रीयतावाद – दक्षेस (सार्क) एक नमूना अध्ययन :- दक्षेस (सार्क) का उद्‌व एवं उद्देश्य, दक्षेस (सार्क) की संरचना का कार्य, दक्षेस (सार्क) की समस्यायें एवं संभावनायें।

विश्व असमानता और नयी अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था

विश्व असमानता का अर्थ और इसके कारण :- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएं, विश्व असमानता की वर्तमान स्थिति। नयी अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की परिभाषा और उत्पत्ति :- नयी अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अर्थ, नयी अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ, नयी

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि। नयी अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का वर्तमान दौर, भविष्य के लिए संभावनाएँ।

उत्तर-दक्षिण वार्ता में द्वन्द्व और सामंजस्य

उत्तर-दक्षिण : परिवेश, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, उत्तर-दक्षिण द्वन्द्व के आयाम, उत्तर-दक्षिण संवाद की जरूरत, वार्ता के मंच :- गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM), व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCTAD), संयुक्त राष्ट्र की आम सभा (UNGA) नई शुरूआतें : ब्रान्ट कमीशन रिपोर्ट को महत्व, कांकुन शिखर वार्ता, दक्षिण-दक्षिण सहयोग।

गुट-निरपेक्षता

एशियाई देशों की गुट-निरपेक्ष नीति का विकास, युगोस्लाविया की गुट-निरपेक्षता, परिभाषा और विशिष्टताएँ, गुट-निरपेक्ष आंदोलन का विकास, गुट-निरपेक्ष आंदोलन के सिद्धान्त :- शांति और निरस्त्रीकरण, आत्म-निर्णय का अधिकार और प्रजातीय समानता, आर्थिक समानता और नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था (नीओ), सांस्कृतिक स्वतंत्रता, आंदोलन की उपलब्धियाँ, आंदोलन का भविष्य।

नव-उपनिवेशवाद, बहुराष्ट्रीय निगम और बहुपक्षीय एजेन्सियाँ

नव-उपनिवेशवाद क्या है?, साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद :- पूंजीवाद और उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद। नव-उपनिवेशवाद की एजेन्सियाँ :- बहुराष्ट्रीय निगम, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक। नव-उपनिवेशवादी संचालन-प्रक्रिया, आर्थिक प्रभुत्व, राजनैतिक हस्तक्षेप, सैन्य-हस्तक्षेप। विकासशील देश और नव-उपनिवेशवाद।

UGPS-05

एक क्षेत्र के रूप में दक्षिण एशिया

भूमि एवं लोग :- दक्षिण एशिया के राज्यों की भौगोलिक सीमाएँ :- जनसंख्या की सघनता, जातीयता, भाषाएँ, धर्म। समाज और संस्कृति आर्थिक साधनों के स्त्रोतः- खेती, ऊर्जा एवं ईधन, खनन एवं खनिज संसाधन, पर्यटन।

दक्षिण एशिया औपनिवेशिक काल तक राजनैतिक विकास

भारतीय उपमहाद्वीप, श्रीलंका, मालदीव, नेपाल, भूटान, सुधार आंदोलन, साम्राज्यवाद :- आर्थिक प्रवाह। राष्ट्रीय आंदोलन एवं राजनैतिक दल :- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, उदारवादी, स्वराज पार्टी फारवर्ड ब्लॉक, क्रांतिकारी आंदोलन, कम्युनिस्ट। सांप्रदायिकता : राजनीति एवं राजनैतिक दल :- मुस्लिम लीग, अन्य पार्टियाँ, हिन्दू महासभा, शिरोमणि अकाली दल। संवैधानिक प्रक्रिया, स्वतंत्रता का आगमन :- आई.एन.ए. स्वतंत्रता की ओर, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालद्वीव।

भारतीय संविधान का उद्‌भव और विकास

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :- संविधान सभा का उद्‌भव, संविधान सभा। संविधान की रचना, संविधान की भावना, संविधान की मूलभूत विशेषताएँ :- जनप्रिय प्रभुसत्ता, संसदीय सरकार, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता, संघवाद, स्वतंत्र न्यायपालिका, आपातकालीन प्रावधान। संविधान का विकास :- अनुकूलन, संशोधन और परिवर्तन।

राजनीति की संरचना एवं प्रक्रियाएं

संवैधानिक प्रणाली की प्रकृति, संसदीय शासन प्रणाली, कार्यपालिका, संसद, न्यायपालिका। संघीय ढांचा, राज्य सरकारें, स्थानीय सरकारें, केन्द्र-राज्य संबंधों का गति-विज्ञान, दलीय व्यवस्था की प्रकृति, दबाव गुट।

राष्ट्र निर्माण की समस्याएँ

राष्ट्र निर्माण और स्वतंत्रता संग्राम :- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्वतंत्रता संग्राम

की विरासत। चुनौतियाँ : औपनिवेशिक विरासत, विकास प्रक्रियाएँ और उपलब्धियाँ :- संविधान की रचना, राज्यों का पुनर्गठन संघीय राजतंत्र, राजनीतिक प्रक्रियाएं, राजनीतिक घटनाक्रम। अर्थव्यवस्था और अधिसंरचना, जीवन स्तर। राष्ट्रनिर्माण : समस्याएँ और संभावनाएँ :- नकारात्मक प्रवृत्तियाँ, राजनीतिक ठहराव, आर्थिक संकट और उदारीकरण, राष्ट्र निर्माण की संभावनाएँ।

भारत की विदेश नीति

विश्व परिवेश तथा गुट-निरपेक्षता, प्रमुख शक्तियों के साथ संबंधः- भारत एवं संयुक्त राज्य अमरीका, भारत एवं सोवियत संघ, भारत एवं चीन। दक्षिण एशियाई पृष्ठभूमि :- भारत एवं पाकिस्तान, भारत एवं नेपाल, भारत एवं श्रीलंका, भारत एवं श्रीलंका, भारत एवं बंगलादेश, भारत एवं सार्क। भावी रुझान एवं चुनौतियाँ।

उत्पति और संवैधानिक विकास

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, पाकिस्तान के तीन संविधान : 1956, 1962, 1973 :- 1956 का संविधान, 1962 का संविधान, 1973 का संविधान। संवैधानिक मुद्दे :- संघात्मक ढांचा, इस्लाम और राज्य, इस्लामी समाजवाद कार्यपालिका, मार्शल ला और सेना।

राजनैतिक संरचना और प्रक्रियाएँ

स्थापना के समय विरासतें, राजनैतिक विकास एवं प्रक्रियाएँ :- संविधान सभा, जिन्ना-लियाकत शासनकाल, नौकरशाही-सेना गठबंधन, सैनिक शासन का पहला दौर : अयूब-याहया शासनकाल, भूट्टो के नेतृत्व में पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का शासन, सैनिक शासन का दूसरा दौरःजिया शासनकाल, गुलाम इशाक खां का शासनकाल, 1993 का राजनैतिक संकट। नौकरशाही, सेना, क्षेत्रीय विषमताएं, जनतंत्र बहाली आंदोलन, चुनाव और राजनैतिक दल।

पाकिस्तान की विदेश नीति -

प्रमुख निर्धारक :- आंतरिक कारण, भू-राजनैतिक संदर्भ, ऐतिहासिक कारण,

अस्मिता की तलाश, सामाजिक-आर्थिक और राजनैतिक ढांचा, विचारधारा की भूमिका, बाह्य कारण, क्षेत्रीय परिवेश माहौल अंतर्राष्ट्रीय वातावरण। पाकिस्तान विदेश नीति के मुख्य लक्ष्य :- सुरक्षा, आर्थिक विकास, सैनिक तैयारी इस्लामी दुनिया में भूमिका, शक्ति संचय। प्रमुख विशिष्टताएँ :- भारत विरोध, इस्लामी दृष्टिकोण, पाश्चात्योन्मुखी रूझान, नाभिकीय शक्ति की अभिलाषा। विदेशनीति का प्रथम चरण (1947-53) :- भारत के साथ विवाद कश्मीर समस्या मुस्लिम जगत के साथ संबंध पश्चिमी देशों से संबंध, पाकिस्तान और कम्यूनिस्ट खेमा। प्रतिबंद्ध विदेशनीति का दौर (1954-58) अयूब खां की विदेश नीति (1959-68), याह्या खाँ की विदेशनीति (1969-71), बांगलादेश का उदय। भुट्टो की विदेशनीति (1972-77) जिया-उल-हक की विदेशनीति (1977-88), पाकिस्तानी विदेशनीति का मौजूदा दौर (1988-)।

पाकिस्तानी राजनीति और सेना

पाकिस्तान की उत्पत्ति, पाकिस्तान में राजनैतिक घटनाक्रम : 1947-1958, सैन्य हस्तक्षेप की सैद्धान्तिक व्याख्याएँ। पाकिस्तान सेना : गठन और इतिहास, राजनैतिक प्रक्रियाओं में सैनिक हस्तक्षेप।

बंगलादेश की उत्पत्ति एवं संवैधानिक विकास

बंगलादेश का उदय :- औपनिवेशिक शोषण, भाषा-आन्दोलन, 1954 के चुनाव तथा उसके बाद, सैनिक शासन, छः सूत्रीय कार्यक्रम तथा 1969 का उभार, 1970 के चुनाव तथा बंगलादेश का उदय। संविधान का निर्धारण :- पृष्ठभूमि, 1972 के संविधान की विशेषताएं संविधान का संचालन।

बंगलादेश में राजनैतिक संरचना एवं प्रक्रियाएं

संविधान की प्राथमिकता एवं नागरिक शासन, प्रीटोरियन हस्तक्षेप, फौजी शासन का ''नागरिकीकरण'' प्रीटोरियन तथा जनतांत्रिक चुनौतियों की पुनरावृत्ति जनतंत्र की पुनर्स्थापना।

बंगलादेश की विदेश-नीति

प्रमुख निर्धारक :- राष्ट्रीय पृष्ठभूमि, अंतर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि, बांगलादेशी विदेश-नीति के मुख्य उद्देश्य एवं विशेषताएं, गुट-निरपेक्षता, भारत के प्रति रुख, इस्लामी कारक, महाशक्तियों के प्रति रुझान। प्रथम चरण : मुजीब युग (1971-1975) :-1975 का सैनिक तख्तापलट तथा उसके बाद :- जियाउर्रहमान चरण (1975-1981), एच.एम. इरशाद चरण (1981-1990)। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में भूमिका, समकालीन परिदृश्य।

संवैधानिक विकास -

नेपाली राजनैतिक प्रणाली का मूलाधार, शाह का शासन, राणाओं का उदय, राणाओं का विरोध, नेपाल सरकार अधिनियम, 1948, संविधान की प्रमुख विशेताएँ, राणा प्रणाली का तख्ता पलट, 1951 का अंतरिम संविधान, अंतरिम संविधान की प्रमुख विशेषताएं, 1951-59 के बीच संवैधानिक विकास, संसदीय संविधान, 1959, प्रमुख विशेषताएं, राजशाही का प्रत्यक्ष शासन पंचायत संविधान, प्रमुख विशेषताएं, 1962 के संविधान में किए गए संशोधन, पहला संशोधन, दूसरा संशोधन, तीसरा संशोधन, पंचायत व्यवस्था का उन्मूलन, 1990 का नया संविधान, मूल विशेषताएं।

राजनीति की संरचना एवं प्रक्रियाएं

राजनैतिक विरासत, शाहों का शासन काल (1967-1846), राणाशाही (1846-1950) जंग बहादुर कुंवर का उदय, राणाओं का शासन, जनवादी आंदोलन तथा राणा शासन का पतन, राणा के बाद के काल की राजनीति (1951-1959), सरकारी अस्थिरता, राजतंत्र की बढ़ती शक्ति, प्रथम निर्वाचित सरकार (1959-1960), राजा के राजनैतिक 'आविष्कार' (1960-1990) महेन्द्र युग, राजा वीरेन्द्र का शासन (1972-1990), वर्तमान राजनैतिक प्रणाली, राजनीति तथा राजनैतिक प्रक्रिया, नयी प्रणाली की संरचना।

नेपाल की विदेश नीति

निर्धारक तत्व, सामाजिक विन्यास एवं सांस्कृतिक ढांचा, आर्थिक निर्धारक तत्व, नेतृत्व का कारक इतिहास, नेपाल और भारत, नेपाल का 'शान्ति क्षेत्र का प्रस्ताव' भारत नेपाल सम्बन्धों में व्यापार एवं पारगमन संधि की समस्याएँ, नेपाल और चीन, नेपाल और महाशक्तियाँ, नेपाल और संयुक्त राष्ट्र संघ, नेपाल और उप-महाद्वीप

भूटान

भूटान की जनसांख्यिकीय विशेषताएं, धर्म, राष्ट्रीय भाषा, आर्थिक प्रणाली, शासन प्रणाली, जनतांत्रिक आंदोलन, भूटान की विदेश नीति तथा बाहरी संबंध, भूटान और भारत, भूटान और चीन (तिब्बत समेत)।

श्रीलंका में संवैधानिक विकास

राजनैतिक इतिहास : अंग्रेजी शासन काल, का डोनों-मोरे संविधान, का सॉलबरी संविधान, अधीनस्थ राज्य का दर्जा, लिखित संविधान, शासन का संसदीय स्वरूप, धार्मिक और जातीय अल्पसंख्यकों के अधिकार, विशेष चुनाव प्रणाली, 1972 का संविधान, प्रमुख विशिष्टताएं, शासन व्यवस्था न्यायपालिका, मूल्यांकन, 1978 का संविधान, प्रमुख विशेषताएँ, संशोधन की प्रक्रिया, राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धान्त, नागरिकता, मौलिक अधिकार एवं कर्त्तव्य, विकेन्द्रीकरण, मूल्याकन।

श्रीलंका में राजनैतिक संरचना और प्रक्रिया

समाज और संस्कृति, श्रीलंका की राजनैतिक अर्थव्यवस्था, सरकार के स्वरूप और राजनैतिक प्रक्रिया, राजनैतिक दल और चुनाव, श्रीलंका में संवैधानिक परिवर्तन।

श्रीलंका में जातीयता की समस्या

बहुलवादी समाज : प्रमुख विशिष्टताएं, सिंहला लोगों की आशंकाएं, श्रीलंकाई तमिल, भारतीय तमिल, श्रीलंकाई मुसलमान, मलय और बर्गर, राष्ट्र निर्माण का प्रयोग, भाषा और धर्म, जमीन का उपनिवेशीकरण, तमिल क्षेत्रों की आर्थिक उपेक्षा, तमिल क्षेत्रों में असुरक्षा, जनतांत्रिक भागीदारी,

तमिलनाडु की भूमिका। श्रीलंका में जातीय संघर्ष और भारत, भारत-श्रीलंका संधि, दूसरा गृह युद्ध।

श्रीलंका की विदेश नीति

श्रीलंका की विदेश नीति के निर्धारक तत्व, स्थायी कारण, परिवर्तनीय तत्व, विदेश नीति की विशेषताएं, पड़ोसी देशों के साथ संबंध, भारत के साथ संबंध, बंगलादेश और पाकिस्तान के साथ संबंध, श्रीलंका और क्षेत्रीय सहयोग, महाशक्तियों और अन्य देशों के साथ संबंध, अमेरिका के साथ संबंध, सोवियत संघ के साथ संबंध, चीन के साथ संबंध, अन्य देशों के साथ संबंध, संयुक्त राष्ट्र संघ में भूमिका, हिन्द महासागर : एक शांति क्षेत्र, निरस्त्रीकरण।

मालदीव : समाज और राजनीति

सामाजिक संरचना, भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सामाजिक व्यवस्था। संवैधानिक विकास, 1932 के संविधान का उद्‌भव, 1932 के संविधान की प्रमुख विशेषताएं, मालदीव की सरकार : पारिवारिक वर्चस्व, 1930 के दशक के अंतिम दिनों से लेकर द्वितीय विश्व-युद्ध तक का घटनाक्रम, सीलोन की स्वतंत्रता का प्रभाव, अमीन दीदी का शासन, 1954 का संविधान, ब्रिटेन और मालदीव के बीच समझौता, 1960 का समझौता। राज्य का संस्थागत ढांचा, राष्ट्रपति, विधायिका, न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका के संबंध, आर्थिक नीति, विदेश नीति, समकालीन राजनैतिक विकास।

दक्षिण एशिया के विशिष्ट अभिजन-गण

धारणा एवं सिद्धान्त, दक्षिण एशिया में विशिष्ट जन समुदाय का निर्माण, भारत, पाकिस्तान, बंगला देश, अन्य देश, विशिष्ट जन समुदाय द्वारा अनुपालन का पार्श्व चित्र, भारत, पाकिस्तान, बंगला देश, अन्य देश।

दक्षिण एशिया में धर्म की भूमिका

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, दक्षिण एशियाई राज्यों का धार्मिक गठन,भूटान, नेपाल, मालदीव, श्रीलंका, भारत, पाकिस्तान, बंगला देश। समकालीन

दक्षिण एशिया में धर्म एंव राजनीति, भारत, पाकिस्तान, बंगला देश, श्रीलंका, मालद्वीप, नेपाल, भूटान।

दक्षिण एशिया में राजनैतिक विकास

स्वतंत्रता के समय प्राप्त हुई विरासतें, उपमहाद्वीप का विभाजन, असंतुलित सामाजिक-आर्थिक विकास, प्रशासनिक इकाइयां एवं संरचनाएं, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की विरासतें, संवैधानिक विकास, राजनैतिक प्रणाली का संचालन, पार्टियां एवं राजनीति, भारत पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, श्रीलंका राजनैतिक उत्तराधिकार, राजनैतिक आन्दोलन, चुनाव।

दक्षिण एशिया में निर्धनता एवं उपषमन

निर्धनता की धारणा (संकल्पना) निर्धनता का दृश्यलेख (नाटकीय रूपरेखा) निर्धनता के निर्धारणकर्ता (निर्धारक) निर्धनता विरोधी नीतियाँ, भूमि सम्बन्धी नीतियाँ, सीमा निर्धारण एवं पुनर्वितरण नीति, पट्टेदारी अधिनियम, परिसम्पत्ति आधार को सबल करके स्वयं रोजगार को प्रोत्साहन प्रदान करने सम्बन्धी नीतियाँ, ग्रामीण बैंक (बंगला देश) ग्राम विकास हेतु समग्र कार्यक्रम (भारत), छोटे किसानों का विकास कार्यक्रम (नेपाल) वेतन नियोजन परियोजनायें, कार्यों के लिए भोजन व्यवस्था का कार्यक्रम (बंगला देश) जवाहर रोजगार योजना (भारत) छोटे किसानों का विकास कार्यक्रम (नेपाल) वेतन नियोजन परियोजनायें, कार्यों के लिये भोजन व्यवस्था का कार्यक्रम (बंगला देश) जवाहर रोजगार योजना (भारत) मूल आवश्कताओं की जन उपलब्धि।

दक्षिण एशिया में लोकतंत्र की समस्याएं और सम्भावनाएं

पूर्वाकाँक्षाओं की समस्याएं, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ, सामाजिक रूप की विषम जातीयता, राजनैतिक एवं ऐतिहासिक विरासतें, संरचनात्मक समस्याएं, दल व्यवस्थाएं, विशिष्ट व्यक्तियों के प्रति झुकाव, विदेशी हस्तक्षेप लोकतंत्र की संभावनाएं, सफलता की कहानियाँ, चुनौतियां।

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क)

इतिहास, क्षेत्र में क्षेत्रीयतावाद के आरंभिक प्रयास, पश्चिमी गुट की तरफ

झुकाव सहयोग की व्यवस्था के विचार का पुनरूत्थान, सार्क की दिशा में प्रभावी कदम, सार्क की स्थापना, सांगठनिक ढांचा। सार्क शिखर बैठकें, ढाका शिखर बैठक (1985), बंगलौर शिखर बैठक (1987), इस्लामाबाद शिखर बैठक (1988), माले शिखर बैठक (1990), कोलम्बो शिखर बैठक (1991)। संगठन में बाधक समस्याऐं। भीतरी अंतर्विरोध परस्पर विरोधी सुरक्षा बोध, विविध राजनैतिक संस्कृतियों की समस्या भारत पाक टकराव, मुख्य समस्याएं: पर्याप्त राजनैतिक दल का अभाव, संसाधन विकास की समस्या, सार्क की संभावनाऐं, राज्य संरचनाओं में उल्लेखनीय बदलाव, प्रमुख अड़चन : भारत-पाक टकराव, क्षेत्र के प्रमुख सकारात्मक पहलू।

UGPS-06

पूर्वी एशियाई क्षेत्र की प्रस्तावना

प्राकृतिक पर्यावरण, जनता, भाषाएं, सामाजिक सांस्कृतिक लक्षण, परिवार प्रणाली, कन्फूशियसवाद, पूर्वी एशिया में राजनैतिक परंपरा, कोरिया, जापान, पश्चिम की प्रतिक्रिया।

दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र की प्रस्तावना

दक्षिण-पूर्व एशिया के देश, म्यांमार, थाईलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, ब्रूनी, फिलीपीन्स, वियतनाम, लाओस, कंबोडिया।

दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय

उत्प्रवासन के मूल स्थान और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शुरू के उत्प्रवासन के कारण एवं परिस्थितियाँ, उत्प्रवासन के सांस्कृतिक आधार, आधुनिक काल में भारतीयों का उत्प्रवासन, भारतीय जनसंख्या की संगठन एवं व्यावसायिक स्वरूप, दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय : वर्तमान स्थिति, बर्मा, मलेशिया, सिंगापुर, फिलीपीन्स, इन्डोनेशिया, थाईलैण्ड, इण्डो-चीन के राज्य।

दक्षिण-पूर्व एशिया में चीनी लोग

19वीं शताब्दी में चीनियों का उत्प्रवासन, राष्ट्रवाद का उदय, जापानी पराधीनता, युद्धोत्तर काल : आरंभिक चरण, जनवादी गणतंत्र तथा दक्षिणपूर्व एशिया के चीनी लोग।

चीनी क्रान्ति एवं विचारधारा

चीनी क्रान्ति की पृष्ठभूमि, सुधार आन्दोलन, प्रतिक्रान्तिकारी युआन शिकाई, मई का आन्दोलन, 1917 की रूसी क्रान्ति का प्रभाव, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सी.सी.पी.), प्रथम क्रान्ताकरी गृहयुद्ध : सुनयातसेन द्वारा सी.पी.सी. से सहयोग, 30 मई का आन्दोलन, च्यांग काई शेक का उदय, उत्तरी अभियान, सी.पी.सी. के खिलाफ च्यांग काई शेक की कार्यवाही, दूसरा क्रान्तिकारी गृहयुद्ध : कम्युनिस्ट

(लाल) सेना की स्थापना, शरदकालीन फसल की कटाई के समय का विद्रोह, ग्रामीण क्रान्तिकारी आधार, जापानी आक्रमण, च्यांगकाई शेक द्वारा कम्युनिस्टों पर हमला, लम्बी यात्रा अभियान, जापान विरोधी संयुक्त मोर्चा, जापान के विरोधी कुओमिन्टांग मोर्चे की असफलता, सी.पी.सी. के जापान विरोधी आधार क्षेत्र, मुक्त किये गये क्षेत्रों की समस्याएं,, जापान पर विजय, सी.पी.सी. का सातवाँ सम्मेलन, तीसरा (अंतिम) क्रान्तिकारी गृह युद्ध : द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का चीन, च्यांग काई शेक की पराजय, मुक्त किये गये क्षेत्रों में भूमि सुधार के कार्यक्रम, लोकतांत्रिक संयुक्त मोर्चे को विस्तारीकरण, मुख्य भूमि की मुक्ति, चीन में जनवादी गणतंत्र की स्थापना, चीनी दर्शन में भौतिकवादी रूझान, चीन में मार्क्सवाद की आगमन, माओ की विचारधारा की उत्पत्ति, माओ-त्से-तंग के विचार।

चीन में राजनैतिक व आर्थिक सुधार

ऐतिहासिक समीक्षा, 1949-1978, आर्थिक सुधार, ग्रामीण सुधार, शहरी एवं अन्य आर्थिक सुधार, राजनैतिक सुधार, मूल्यांकन।

चीन की विदेश नीति

चीन की विदेश नीति के निर्धारक कारक, दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के साथ संबंध, भारत के साथ संबंध, पाकिस्तान के साथ संबंध, बंगलादेश एवं नेपाल के साथ संबंध, आसियान (ए.एस.ई.ए.एन) देशों के साथ संबंध। महाशक्तियों एवं पश्चिम योरोपीय देशों के साथ संबंध, सोवियत संघ के साथ संबंध, संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संबंध, पश्चिम योरोपीय देशों के साथ संबंध, संयुक्त राष्ट्र संघ में भूमिका।

ऐतिहासिक संदर्भ - राष्ट्रवाद और पूँजीवाद

भूगोल और लोग, सामंतवाद, राजनैतिक व्यवस्था, तोकूगावा वर्ग संरचना, अलगाव की नीति, तोकूगावा शासन को कमजोर बनाने वाले कारण, अलगाव का अंत, शोगुनेट का पतन। नया शासन- दाइम्यो डोमेन व्यवस्था का अंत, नये शासन द्वारा सुधार, राज्य और धर्म, जमीन और लगान, आर्थिक परिवर्तन, राष्ट्रवाद- चिंतन धाराएँ, राज्य

का उदय, अनिवार्य सैनिक सेवा, सभ्यता और ज्ञानोदय, विस्तारवादी राष्ट्रवाद, शिक्षा और राष्ट्रवाद, पूँजीवाद का उदय- औद्योगीकरण, निजी उद्यम, पूंजीवाद का दूसरा पहलू, पूंजी संरचना, व्यवसाय के नये अवसर।

संरचना और प्रक्रिया

संविधान संसद (डिएट), डिएट (संसद) के कार्य, डिएट (संसद) का संचालन। स्थानीय शासन, निर्वाचन प्रणाली, राजनैतिक दल। उदारवादी जनतांन्त्रिक दल (लिवरल डेमोक्रेटिक पार्टी), जापान की सोसलिस्ट डेमोक्रेटिक पार्टी, जापान की कम्युनिस्ट पार्टी, कोमेइतो। दलीय (दलगत) समर्थन, गठबंधन, दबाव समूह, नौकरशाही (शासन)।

जापान की विदेश नीति

आधुनिक जापान की विदेश नीति के आधार – जापान की विदेश नीति के मूल उददेश्य, द्वितीय विश्व युद्ध के पहले जापान की विदेश नीति। विदेश नीति का निर्माण, संसद की भूमिका, विदेश मंत्रालय की भूमिका, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं उद्योग मंत्रालय की भूमिका, राजनैतिक दलों की भूमिका, दबाव समूहों की भूमिका, जनमत की भूमिका, बाहरी कारणों की भूमिका। जापान की रक्षा और सुरक्षा के सरोकार, रक्षा एवं सुरक्षा नीति, जापान की रक्षा शक्ति, संवैधानिक सीमाएं, रक्षा बजट, राष्ट्रीय सुरक्षा के महत्व, क्षेत्रीय और विश्व सुरक्षा, जापान के विदेश संबंध, भारत और जापान, जापान उत्तरी अमेरिका और यूरोपीय समुदाय, नये औद्योगिक देश, जापान, पूर्व सोवियत संघ और चीन, जापान और विकासशील देश, जापान आ।र संयुक्त राष्ट्र संघ, अंतर्राष्ट्रीय विनिमय और सहयोग।

आधुनिक कोरिया का विकास

कोरिया की पाक-आधुनिक सभ्यता, शासन का रूप, कोरिया का सामाजिक राजनीतिक पतन, कोरिया में आधुनिकता की खोज का आरम्भ, राजतंत्र का बिखराव, पश्चिमी हस्तक्षेप, कांघवा की संधि,

तोंधक का विद्रोह, जापान द्वारा कोरिया का विलय, कोरिया में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का विकास, प्रगतिशील दलों का सुधार आन्दोलन, स्वतंत्रता क्लब का प्रबोधन आन्दोलन, आधुनिक आर्थिक ढांचे का विकास, आधुनिक शिक्षा का विकास, स्वतंत्रता आंदोलन के बीच सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन।

राजनीतिक तथा आर्थिक विकास का स्वरूप

जापानी शासन का प्रारम्भ, कोरिया का बंटवारा, संयुक्त राष्ट्र का हस्तक्षेप, कोरिया का युद्ध, आर.ओ.के. का दक्षिण कोरिया में राजनीतिक तथा आर्थिक विकास, संवैधानिक विकास, दल व्यवस्था, राजनीतिक प्रक्रिया, आर्थिक विकास, डी.पी.आर.के. (उत्तर कोरिया) में राजनीतिक तथा आर्थिक विकास, संवैधानिक विकास, दल व्यवस्था, राजनीतिक प्रक्रिया, आर्थिक विकास। डी.पी.आर.के. (उत्तर कोरिया) में राजनीतिक तथा आर्थिक विकास, संवैधानिक विकास, दल व्यवस्था, राजनीतिक प्रक्रिया, आर्थिक विकास,

विदेश नीति

दक्षिण आर.ओ.के. तथा उत्तर डी.पी.आर.के. की विदेश नीतियाँ, विदेश नीति के निर्धारक तत्व, विदेश नीति का विकास, विदेश संबंध- कोरिया का गणतंत्र- कोरिया (आर.ओ.के.), आर.ओ.के. तथा संयुक्त राज्य अमरीका के सम्बन्ध, आर.ओ.के. तथा जापान के सम्बन्ध, दक्षिण कोरिया तथा दूसरे राष्ट्र, विदेश सम्बन्ध : कोरिया का जनवादी प्रजातंत्रात्मक गणतंत्र (डी.पी.आर.के. – उत्तर कोरिया), डी.पी.आर.के. तथा चीन के सम्बन्ध, डी.पी.आर.के. तथा भूतपूर्व सोवियत संघ के सम्बन्ध, डी.पी.आर.के. तथा जापान के सम्बन्ध, डी.पी.आर.के. तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सम्बन्ध, डी.पी.आर.के. तथा दूसरे देश के सम्बन्ध, उत्तर दक्षिण कोरिया सम्बन्ध, परमाणु अप्रसार संधि की समस्या, भारत कोरिया सम्बन्ध,

सिंगापुर

इतिहास, प्रारम्भिक योरोपीय संपर्कों में मलाका का महत्व, जौहर के

सुल्तान के शासन, आधुनिक सिंगापुर की स्थापना, द्वितीय विश्व युद्ध एवं सिंगापुर, स्वतंत्रता- प्रारम्भिक राजनीतिक संरचना, नये संविधान की उत्पत्ति, सन 1955 का रैन्डल संविधान, मन 1955 के चुनाव, डेविड मार्शल एवं उसके बाद, सिंगापुर का मलाया के साथ विलसन का मुद्दा, पीपुल्स एक्शन पार्टी की आन्तरिक समस्याएं, मलेशिया महासंघ का गठन, सरकार एवं राजनीति, सिंगापुर की लोक सभा, न्यायिक प्रणाली, सामाजिक व्यवस्था, अर्थव्यवस्था - आर्थिक रूप का आरम्भिक परिवर्तन, विशेषज्ञ उन्मुख आर्थिक विकास की नीति, ए.एस.ई.ए.एन (आसियान) का गठन, आयात प्रतिस्थापन से निर्यात प्रोत्साहन तक, विदेशी मुद्रा भंडार एवं आर्थिक विकास, सरकारी कदम, सुरक्षा एवं विदेश नीतियाँ, पीपुल्स एक्शन पार्टी एवं साम्यवादी प्रभाव का विलोपन।

मलेशिया

देश, जनता, धर्म, अर्थव्यवस्था, नई आर्थिक नीति, प्रशासनिक एवं सामाजिक स्थितियाँ, प्रशासनिक संरचना, न्याय प्रणाली, सैन्य बल, शिक्षा प्रणाली एवं स्वास्थ्य सेवाएं, सांस्कृतिक जीवन, मलेशियाई राजनैतिक संस्कृति, संविधान का विकास, योरोपीय आक्रमण, ब्रिटिश प्रशासन, युद्धोत्तर मलाया, स्वाधीनता, मलेशिया का निर्माण, कोबोल्ड आयोग, संविधान की प्रमुख विशेषताएं, संघीय कार्यपालिका, यांग डी परटुआन आगांग, चुनाव, शासकों का सम्मेलन, प्रधानमंत्री, कैबिनेट एवं मंत्रीगण, यांग डी परटुआन आगाँग की संवैधानिक स्थिति, संघीय संसद, दीवान नेगारा, दीवान राकयत, सत्र, समिति प्रणाली, विधानमंडलीय प्रक्रिया, संसद के कार्य, संघीय न्यायपालिका एवं नागरिकों के अधिकार, न्यायिक प्राधिकारी,प्रभावक्षेत्र, न्यायपालिका की स्वतंत्रता, नागरिकों के अधिकार, पार्टी प्रणाली, आम चुनाव, संक्षेप में, एलाइन्स पार्टी, अन्य पार्टियां, पार्टी व्यवस्था की प्रकृति, मलेशिया अंतर्राष्ट्रीय मामलों में। भावी परिणाम, विदेश संबंध।

फिलीपीन्स

भूगोल और लोग, इतिहास, स्पेनी औपनिवेशिक शासन : 1565-1898, अमेरिकी आधिपत्य, आजादी के समय – 1 जुलाई 1946, लरिल लांगले समझौता, फिलीपीन्स में अमेरिकी सैनिक अड्डे, फिलीपीनी विदेशनीति का विकास- 1946-72, फिलीपीन्स का संविधान- 1972-86, मार्कोस शासन- 1972-86, आर्थिक संकट, छात्र आन्दोलन, सभा प्रस्ताव, कम्युनिस्ट आंदोलन, हक आंदोलन, रेमोन मैगसासे और हक आंदोलन का निलंबन, कम्युनिस्ट पाटी का गठन, मडिओला पुल की लड़ाई, कम्युनिस्ट आंदोलन और विदेशश नीति, मुस्लिम समुदाय, मार्कोस और मुस्लिम समुदाय, फिलीपीन्स में इस्लाम का आगमन, स्वातंत्रयोत्तर संबंध, मोरो राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा, इस्लामी देशों के साथ संबंध सुधार, अमेरिकी सैनिक अड्डे, भूमिका, संबधों के बदलते ढर्रे, सैनिक अड्डों से संबंधित वार्ताएं,मार्कोस की वैधता का सवाल, मार्कोस शासन का अन्त, कोराजोन अक्विनो का शासन काल : 1986-92, मार्कोस की विरासत की समस्याएं, नया संविधान, मौजूदा हालात, तात्कालिक समस्याएं, अमेरिका फिलीपीन्स संबंधों का भविष्य।

इंडोनेशिया में शासन और राजनीति

एक उपयुक्त राजनीतिक व्यवस्था की खोज : संसदीय जनतंत्र का प्रयोग (1950-51), इन्डोनेशिया में संसदीय व्यवस्था, चुनाव, सुकानों की ''निर्देशात्मक जनतंत्र'' की अवधारणा, निर्देशात्मक जनतंत्र का काल : सुकार्नो सेना और पी के आई त्रिकोण का उदय, सैन्य सत्ता : नयी व्यवस्था का उदय। नवीनीकरण की प्रक्रिया और इंडोनेशिया में सैनिक शासन।

थाईलैण्ड

थाईलैण्ड, भूगोल और लोग, थाईलैण्ड औपनिवेश शासन से कैसे बचा, राजतंत्र, संवैधानिक राजतंत्र, सैन्य नेतृत्व, जनतांत्रिक प्रयोग, धर्म और राजनीति, आर्थिक नीति, थाई विदेश नीति।

बर्मा

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, ब्रिटिश शासन की स्थापना, औपनिवेशिक शोषण तथा राष्ट्रवाद का उदय, जापान द्वारा कब्जा तथा बर्मा की स्वतंत्रता, संसदीय काल, आरम्भिक दिनों की राजनैतिक अस्थिरता, विकासात्मक योजनाएं, जातीय अल्पसंख्यक तथा वर्गीकरण, ए.एफ.पी.एफ.एल. के भीतर आंतरिक कलह तथा तख्ता पलट, फौजी शासन, नई राजनैतिक व्यवस्था, आर्थिक विकास की समस्याएं, प्रारम्भिक प्रतिरोध, जनतंत्र के लिए आन्दोलन, बी.एस.पी.पी. शासन का अंत, जनतंत्र समर्थक आन्दोलन की कमजोरियाँ, 1990 के चुनाव तथा उसके बाद।

वियतनाम

आरंभिक इतिहास, मध्यकालीन इतिहास, 18वीं सदी के अन्तिम 25 वर्षों के दौरान हुए विद्रोह, फ्रांस के साथ आन्दोलन क्रिया की शुरूआत, औपनिवेशिक शासन- धर्म, प्रचारकों का दमन और फ्रांसीसी हस्तक्षेप, टू डक की संधि, राष्ट्रीय आन्दोलन, वियतनाम का इतिहास तथा चीनी शासन का अंत, फ्रांसीसी शासन का विरोध, वियतमिन्ह एवं अमरीकी हस्तक्षेप, नया गणतंत्र तथा उपस्थित समस्याएं, फ्रांसीसी महत्वाकांक्षाएं एवं मंसूबे, वियतनाम तथा शीत युद्ध की छाया, गो दिन्ह डिएम को अमरीकी समर्थन, 1966 की टौगकिग घटना। अर्थव्यवस्था, आर्थिक नियोजन, की उत्पत्ति, युद्धोत्तर काल में आर्थिक नियोजन एवं विकास, विशेष समस्याएं, जल्दबाजी में किसे गये एकीकरण से पैदा समस्याएं, आन्तरिक समस्याएं, वियतनाम में पेरिस्वोइका, संविधान एवं सरकार, नया संविधान, विदेश नीति।

कम्बोडिया

प्रदेश तथा लोग, इतिहास, प्राचीन इतिहास, द्वितीय विश्व युद्ध तथा आधुनिक इतिहास, स्वतंत्र कंपूचिया, स्वतंत्रता तथा नया राजीतिक समीकरण, वियतनाम का गृह युद्ध तथा कंपूचिया, जनरल लोन नोल का शासन, कंपूचियन यूनाइटेड फ्रंट का उदय, कंपूचिया का समाज

तथा राजनीति,हैग सैमरीन के शासन का उदय, गृह युद्ध, आर्थिक विकास, पेरिस का शान्ति समझौता, चुनाव, भारत कंपूचिया संबंध।

लाओस

लाओस समाज, पाश्चात्य प्रभाव, लाओस का भूगोल, इतिहास तथा अर्थव्यवस्था, प्राचीन काल, आधुनिक इतिहास, लाओस की अर्थव्यवस्था, राजनैतिक घटना विकास, साझा मोर्चा सरकार का गठन और राजनैतिक पार्टियाँ, लाओसी सत्ता संघर्ष, के प्रमुख लक्षण, अन्तर्राष्ट्रीय निहितार्थ, साम्यवाद की विजय, त्रियोका की विजय, दक्षिणपंथी झुकाव, 1973 की समझौते की विफलता, नयी सरकार, नेतृत्व, आंतरिक कलह, संविधान, विकासात्मक रणनीति, विदेश संबंध।

दक्षिण पूर्व एशिया में आर्थिक विकास की पद्धति

परिभाषित क्षेत्र, अर्थव्यवस्थाओं की संरचना और विशेषताएं, आर्थिक संसाधनों की अनेकरूपता, आर्थिक विचारधाराएं, दोहरी संरचना, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की आर्थिक गतिविधि का विश्लेष, संक्रमणकालीन विकास के दो आयाम, विदेशी व्यापार, विदेशी निवेश, सत्तर दशक के मध्य के बाद के बृहद आर्थिक नीतियों के मुद्दे, व्यापार और औद्योगिक नीतियाँ, वित्तीय और पूंजी बाजार संबंधी सुधार, सार्वजनिक क्षेत्र सुधार, बचत और निवेश,मुद्रास्फीति, एशिया प्रशांत विकास के परिप्रेक्ष्य में व्यापार और विदेशी निवेश, एशिया प्रशान्त में निवेश और व्यापार की वृद्धि के प्रमुख कारक।

पूर्व और दक्षिण एशिया में राजनैतिक विकास की पद्धति

प्रजातंत्र और उदारवाद, समाजवाद और क्रान्तिकारी राजनीति, निरंकुश और सैनिक शासन।

पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया में राज्य और नागरिक समाज का समीकरण

कानून और मानवाधिकार के रक्षक, कानून और व्यवस्था और मानव अधिकार : चीन का उदाहरण, मानवाधिकार संबंधी चीनी दृष्टिकोण,

जापान में कानून और व्यवस्था और मानवाधिकार, राष्ट्रीय पुलिस अभिकरण, पूर्व और दक्षिण पूर्व ऐशिया के अन्य देशों में मानवाधिकार संबंधी परदृिश्य, फिलिपिन्स और मानवाधिकार, हिदेशिया और थाईलैण्ड में मानवाधिकार, राष्ट्रपति सुहारतो का शासन, कंबोडिया में मानवाधिकार, बर्मा में मानवाधिकार, दक्षिण कोरिया, ताइवान, सिंगापुर, वियतनाम, और मलेशिया में मानवाधिकार, सामाजिक संघर्षों का समाधान कर्ता, चीन और जापान की स्थिति, चीन में अल्पसंख्यक और जातीय सवाल, जातीयता की समस्या और मलेशिया, लोगों के हितैषी, पूर्व एशिया में समग्र स्थिति, जापान का उदाहरण, दक्षिण कोरिया में स्थिति, उत्तरी कोरिया में स्थिति, चीन में स्थिति, दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य देश और आर्थिक विकास।

दक्षिण पूर्व एंशियाई राष्ट्र संगठन (एशियन) के विशेष संदर्भ में क्षेत्रीय सहयोग

क्षेत्रीय सहयोग का सार, दक्षिण पूर्व एशिया और क्षेत्रीय सहयोग, दक्षिण पूर्व एशिया का संगठन, मलेशिया फिलिपीन्स और हिंदेशिया का संगठन (मैफिलिंडो), दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संगठन, शान्ति स्वतंत्रता और तटस्थता (जोफ्फान) की अवधारणा, दक्षिण पूर्व एशियाई आण्विक अस्त्र मुक्त क्षेत्र (सीएनफज) , बड़ी शक्तियों की इस क्षेत्र में भूमिका।

UGPS-07

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन क्यों ? विषय क्षेत्र एवं दृष्टिकोण

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अर्थ, अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का बदलता स्वरूप, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन क्यों जरूरी है? अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विषय क्षेत्र, दृष्टिकोण, पारंपरिक दृष्टिकोण यथार्थवाद, आदर्शवाद एवं नव-यथार्थवाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यवस्था सिद्धान्त, खेल सिद्धान्त, समन्वय सिद्धान्त, पर-निर्भरता दृष्टिकोण, महिलावादी दृष्टिकोण।

कुछ अवधारणाएँ : साम्राज्यवाद, राष्ट्रवाद फासीवाद और क्रांति

साम्राज्यवाद, साम्राज्यवाद का अर्थ, साम्राज्यवाद का विकास, उपनिदेशवाद क्या है? नव-उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद, राष्ट्रवाद की अवधारणा, राष्ट्रावाद के विविध चरण। फासीवाद – फासीवाद की प्रमुख विशेषताएँ, इटली, जर्मनी और स्पेन में फासीवाद, मुसोलिनी, समाजवादी से फासीवादी इटली में फासीवाद के उदय के कारण, यूरोप में नव-फासीवाद। क्रांतियाँ क्रांति क्या है?, कुछ महत्वपूर्ण क्रांतियाँ।

कुछ अवधारणाएँ : राज्य व्यवस्था, शक्ति, राष्ट्रहित और राष्ट्रीय सुरक्षा

राज्य व्यवस्था, राज्य व्यवस्था की विशेषताएँ, राज्य व्यवस्था का विकास, शक्ति, शक्ति क्या है, शक्ति के तहत, शक्ति का आंकलन, शक्ति का तरीके, शक्ति का प्रबंध, राष्ट्रीय हित राष्ट्रीय हित की परिभाषा, राष्ट्रीय हित-विदेश नीति का आधारभूत तत्व। सुरक्षा, सुरक्षा और राष्ट्रीय हित सुरक्षा और परमाणु हथियार।

प्रथम विश्वयुद्ध : कारण, घटनाएँ एवं प्रभाव

कारण, आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा औपनिवेशिक विवाद, स्पर्द्धाकारी संधि व्यवस्था, बढ़ती राष्ट्रीय अपेक्षाएँ, युद्ध का सूत्रपात, युद्ध की घटनाओं की क्रमिकता, युद्ध का यूरोपीय चरण, युद्ध का विश्वव्यापी चरण, युद् की समाप्ति, युद्ध के परिणाम, पेरिस शांति सम्मेलन, वर्सा की संधि, अल्प संधियाँ, युद्ध के प्रभाव, यूरोप पर प्रभाव, विश्व पर प्रभाव।

बोल्शेविक क्रांति एवं उसका प्रभाव

बोल्शेविक और अंतर्राष्ट्रीय संबंध की नई व्यवस्था, बोल्शेविक सरकार के शांति प्रयास, बोल्शेविक सरकार पड़ोसी देशों में अपने विशेषाधिकारों के खात्में की घोषणा। बोल्शेविक एवं उपनिवेश-विरोधी संघर्ष, पूर्व में समाजवादी विचारों का प्रसार, पूर्व में राष्ट्रवादी वं समाजवादी ताकतों की एकता, राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम का तीव्र होना। कम्युनिष्ट एवं मजदूर आंदोलनों का उद्‌भव एवं विकास।

द्वितीय विश्वयुद्ध : कारण और परिणाम (महाशक्तियों का उदय)

द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रारंभ और कारण, युद्ध का प्रारंभ, संयुक्त राज्य अमरीका एवं सोवियत संघ का मित्र बनना। द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम, इटली और जर्मनी की पराजय, जापान की पराजय, द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् शांति की स्थापना, पोट्‌सडग सम्मेलन, शांति संधियाँ, महाशक्तियों का उद्‌गम संयुक्त राज्य अमेरिका का नाभिकीय शक्ति बनना, संयुक्त राज्य अमरीका को सोवियत संघ की चुनौती।

शीत युद्धः अभिप्राय, प्रतिमान और आयाम

शीतयुद्ध का अर्थ, शीतयुद्ध का उद्‌गम, शीतयुद्ध का प्रसार, सुदूर पूरब में शीतयुद्ध, शीतयुद्ध में कमी, शीतयुद्ध का पुनर्जन्म, शीतयुद्ध का ढांचा एवं आयाम, शीतयुद्ध का अंत।

गुट निरपेक्षता

प्रसंग एवं आवश्यकताएँ, गुट निरपेक्षता की अवधारणा, गुट निरपेक्ष आंदोलन का विकास, गुट निरपेक्ष आंदोलन के उद्देश्य एवं उपलब्धियाँ, आज का गुट निरपेक्ष आंदोलन, बहस, गुटनिरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता।

हथियारों की दौड़ और नाभिकीय खतरा

नाभिकीय हथियारों के दौड़ की पृष्ठभूमि, प्रारंभ नाभिकीय हथियारों की दौड़ का जन्म, मैन हत्तेन की परियोजना, उत्तर युद्ध काल में हथियारों की दौड़ का औचित्य। नाभिकीय हथियारों की दौड़ : इतिहास में पूर्ववर्ती हथियारों

की दौड़ में यह किस प्रकार भिन्न है? त्रित्व परीक्षण, हिरोशिमा तथा नागासाकी की बमवर्षा, न्यूयार्क टाइम्स और त्रित्व परीक्षण। उत्तर युद्ध काल में नाभिकीय हथियारों की दौड़ में विभिन्न चरण, सोवियत संघ तथा साम्यवाद का भय, 1945 से 1953 : अमरीकी एकाधिकारवाद का काल, 1957 से 1968 : प्रक्षेपात्र संकट का काल और आई सी बी एम दौड़, 1968 से 1970 : के दशक के अंत तक एम.आई. आर. बी. तथा आई. सी.बी.एम की दौड़, 1981; रीगन का सामरिक महत्व आधुनिकीकरण की योजना, 1983: अंतरिक्ष का सैन्यकरण – रीगन का स्टार युद्ध कार्यक्रम, 1984 से 1997 : गोबाँचोव के युग में नाभिकीय हथियारों की दौड़ और सोवियत संघ के पतन का अंतिम दिन, 1991 से 1997 : तक सोवियत संघ के पतन के बाद नाभिकीय हथियारों की दौड़। तीसरी दुनिया और दक्षिण एशिया में हथियारों की दौड़ में सामान्य जटिलताएँ।

निरस्त्रीकरण और शांति आंदोलन

निरस्त्रीकरण का तर्क, निरस्त्रीकरण का संक्षिप्त इतिहास, निरस्त्रीकरण के समझौते और संधियाँ, शांति की अवधारणा, शांति आंदोलन, भारत, शांति आंदोलन और निरस्त्रीकरण, भारत और एन.पी.टी., भारत और सी.टी.बी.टी।

उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का स्वरूप

विऔपनिवेशीकरण के कारण, विऔपनिवेशीकरण की प्रक्रिया, लैटिन अमरीका, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विऔपनिवेशीकरण, दक्षिण अफ्रीका विऔपनिवेशीकरण के प्रभाव।

तीसरी दुनिया के राज्यों की विशेषताएँ

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण, उदारवादी दृष्टिकोण, मार्क्सवादी दृष्टिकोण, पराश्रयवादी दृष्टिकोण, राज्य की विशेषताएँ, अतिविकसित राज्य, स्वायत्तता, राजधानी का नियंत्रण।

खाड़ी युद्ध

खाड़ी युद्ध के कारण, संघर्ष की जड़े, खाड़ी युद्ध के समय अंतर्राष्ट्रीय

स्थिति, कुवैत के खिलाफ इराकी कार्रवाई, कुवैत पर विजय एवं कब्जा, कुवैत की मुक्ति, संयुक्त राज्य की अगुवाई में 28 देशों का गठबंधन, इराक के खिलाफ प्रतिबंध और कुवैत की संप्रभुता की बहाली, खाड़ी युद्ध का प्रभाव।

समाजवादी खेमे का विखंडन

विखंडन के आंतरिक कारण, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आर्थिक, विखंडन के बाह्य कारण, सोवियत संघ की भूमिका, पश्चिम की भूमिका, प्रदर्शनकारी प्रभाव। विभिन्न देशों में कम्युनिस्ट पार्टी व सरकार का पतन, पोलैंड, हंगरी, पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, बुल्गारिया, रोमानिया।

बदलती विश्व व्यवस्था संबंधी दृष्टिकोण

नयी विश्व व्यवस्था के अर्थ और आयाम, विविध दृष्टिकोणों का सारांश यर्थाथवादी दृष्टिकोण मार्क्सवादी दृष्टिकोण, विभिन्न देशों के दृष्टिकोण, अमरीकी दृष्टिकोण, यूरोपीय दृष्टिकोण, चीनी दृष्टिकोण, रूसी दृष्टिकोण, विकासशील देशों का दृष्टिकोण मौजूदा हालात और भावी संभावनाएँ।

संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था का पुनर्गठन

संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था का संगठन, संरचना और कार्य, संयुक्त राष्ट्र घोषणा पत्रः उद्देश्य और सिद्धान्त, संयुक्त राष्ट्र के मुख्य निकाय एवं कार्य, संयुक्त राष्ट्र की बदलती भूमिका, शीतयुद्ध काल, शीतयुद्धोत्तर काल, कुछ उपलब्धियाँ और कमियाँ, उपलब्धियाँ, कमियाँ/ असफलताएँ। संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था का पुनर्गठन-मुख्य सुझाव और भारत का दृष्टिकोण।

अर्थव्यवस्था का भूमंडलीकरण, आई0बी0आर0डी0 अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्व व्यापार संगठन

भूमंडलीकरण – अर्थ एवं सरचना, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, ब्रिटेन बुड्स तथा व्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष – उद्देश्य का कार्य, संरचना, आई बी0आर0डी0 उद्देश्य, कार्य, गैट, उरुग्वे चक्र एवं विश्व व्यापार संगठन, विश्व व्यापार संगठन, उत्तर ब्रिटेन वुड्स विकास, भूमडलीकरण और तीसरी दुनिया, भूमंडलीकरण का प्रभाव।

क्षेत्रीय संगठन : यूरोपियन समुदाय, एशियन, एपेक, सार्क दक्षेस, ओ0आई0सी0 तथा ओ0ए0यू0

यूरोपियन यूनियन, उद्‌भव इतिहास तथा उद्देश्य, संस्थाएँ और अंग, विश्व राजनीति में इसकी भूमिका और भविष्य, दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रसंघ (एशियन), लक्ष्य एवं उद्देश्य, संस्थाएँ या संरचना, अधिकार कार्य और भूमिका, एशिया प्रशांत आर्थिक सहयोग परिषद् (एपेक) दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (दक्षेस) लक्ष्य और उद्देश्य, संरचना एवं कार्य उपलब्धियाँ और संभावनाएं, इस्लामिक सम्मेलन संगठन (ओ0आई0सी0), लक्ष्य और उद्देश्य, ओ0आई0सी0 के अंग (निकाय) अफ्रीकी एकता संगठन (ओ0ए0यू0) उद्देश्य और सिद्दान्त अंग और संस्थाएँ, भूमिका और कार्य।

पर्यावरण और सतत् मानव विकास

सतत् मानव विकास की संकल्पना, मानव विकास प्रतिमान के अवयव, सतत् मानव विकास की संकल्पना एवं परिभाषा, सतत् मानव विकास और पर्यावरण, आर्थिक गतिविधियाँ और पर्यावरण, जल, वायु प्रदूषण, ठोस और खतरनाक अपशिष्ट (कूड़ा करकट), भूमि और निवास स्थान, वातावरणीय बदलाव, अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय खतरे का परिचय, एजेन्डा-21 और रियो घोषणा, क्या बाजार यंत्रावली पर्यावरणीय समस्या का समाधान कर सकता है? बहु पणधारी भागीदारी।

मानव अधिकार एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति

मानव अधिकारों का महत्व, संकल्पनाः विकास एवं अर्थ, प्राचीन यूनानी एवं स्टोइक दार्शनिक, आज का प्रमुख सिद्धान्त, विकास के मील के पत्थर, विकास का अधिकार, व्यक्ति के विविध संकल्पना-निर्धारण, सार्वभौम बनाम सांस्कृतिक सापेक्षवाद, कारेल वास्क के अधिकारों की तीन पीढ़ियाँ,दो प्रसंविदा पक्षों में अंतर, संयुक्त राष्ट्र संघ के विशेष सम्मेलन संयुक्त राष्ट्र संघ एवं उपनिवेशीकरण, मानव अधिकार, विकास का लोकतंत्र, हेलसिंकी प्रक्रिया, भूमंडलीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था में कार्यनीतिक परिवर्तन, मानव अधिकारों पर अमरीकी नीति, मानव अधिकारों

पर वियना घोषणा की विशेषताएँ, मानव अधिकार संरक्षण के समक्ष उभरती चुनौतियाँ।

जातीय राष्ट्रीय संघर्ष के प्रतिमान और आयाम

पारिभाषिक शब्दावली, राष्ट्र, राष्ट्रावाद, जातीयता, जातीय राष्ट्रवाद का अर्थ, संघर्ष के मूल कारण, आर्थिक कारण राजनीतिक विभेदीकरण, बलपूर्वक आत्मसात करना/आत्मसात्कारण, ऐतिहासिक जनसंख्या का दबाव शरणार्थी आंदोलन, मानव की व्यापक चिरकालिक, सतत् उड़ान, राज्य का विध्वंस जातीय समुदायों की चिरस्थाई दरार जातीय अल्पसंख्यकों की मनोग्रन्थि, आत्मनिर्धारण के सिद्धान्त, जातीय अल्पसंख्यकों के प्रतिरूप, जातीय राष्ट्रीय संघर्षों के आयाम, जातीय प्रभुत्व, जातीय विच्छेद, स्वायत्ता की मांग, शांतिपूर्ण जातीय आत्मनिर्धारण जातीय विशुद्धिकरण, जातिय राष्ट्रीय संघर्ष के प्रभाव य निहितार्थ।

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की प्रकृति, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की प्रकृति, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के रूप, भूमण्डलीय आतंकवाद के प्रारूप, शहरी आतंकवाद, शहरी आतंकवादी निकाय, शहरी आतंकवादियों की तकनीकें, शहरी आतंकवाद को रोकने के उपाय, ग्रामीण आतंकवाद, ग्रामीण आतंवाद का विकास, एशिया तथा अफ्रीका में ग्रामीण आतंकवादी समस्याएँ, लैटिन अमरीका में ग्रामीण आतंकवादी गतिविधियाँ, आतंकवाद-विश्वस्तरीय संघर्ष, एक दूसरे की हत्या करने की प्रक्रिया की रोकथाम, आतंकवादी गतिविधियों को रोकने के कानून।

संचार प्रौद्योगिक में क्रान्ति

संचार के माध्यम, नई संचार प्रौद्योगिकी,संचार प्रौद्योगिकी से संबंधित मुद्दे, संचार और राष्ट्रीय संप्रभुसत्ता, संचार में असमानताएं, नई अंतर्राष्ट्रीय सूचना व्यवस्था, वर्तमान सूचना और संचार व्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर संचार प्रौद्योगिक का प्रभाव।

UGPA-01

लोक प्रशासन का स्वरूप

लोक प्रशासन : अर्थ एवं विषय क्षेत्र

प्रशासन की विशिष्टिता, लोक प्रशासन की परिभाषा, लोक प्रशासन का विषय क्षेत्र तथा प्रभाव क्षेत्र– प्रभाव क्षेत्र, विषय क्षेत्र, विषय का स्वरूप, लोक प्रशासन तथा व्यापारिक प्रशासन में अंतर।

लोक प्रशासन का महत्व

व्यावहारिक संबंध, सामाजिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में, तीसरी दुनिया के परिप्रेक्ष्य में, नागरिकता की दृष्टि से उदार अध्ययन, लोक प्रशासन के योगदान, ज्ञानमीमांसात्मक, तकनीकी, लोकपालिक, उदार शिक्षात्मक, व्यावसायिक।

लोक प्रशासन और अन्य सामाजिक विज्ञान

सामाजिक घटना–क्रियायें : उनका एकीकृत स्वरूप, सामाजिक विज्ञान के रूप में लोक प्रशासन, अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध, राजनीतिक विज्ञान से सम्बन्ध, समाजशास्त्र से सम्बन्ध, अर्थशास्त्र से सम्बन्ध, इतिहास से सम्बन्ध, विधिशास्त्र से सम्बन्ध।

लोक प्रशासन का विकास

विषय के विकास का अध्ययन क्यों? निरंकुशतावादी परम्पराएं, उदारतावादी लोकतांत्रिक परम्पराएं–राजनीति प्रशासन द्विभाजनात्मक उपागम, संरचनात्मक उपागम, मानवीय संबंधात्मक उपागम, व्यवहारवादी उपागम, विकासात्मक उपागम, लोकनीति उपागम, राजनीतिक अर्थव्यवस्था उपागम। विभिन्न उपागमों के अन्तर को स्पष्ट करने वाला चार्ट, मार्क्सवादी परम्पराएं।

तुलनात्मक लोक प्रशासन

किसकी तुलना करें, विश्लेषण के स्तर, तुलनात्मक अध्ययनों का क्षेत्र– अन्तर संस्थागत विश्लेषण, अन्तराराष्ट्रीय विश्लेषण, बहुराष्ट्रीय विश्लेषण, बहु सांस्कृतिक विश्लेषण, विभिन्न कालात्मक विश्लेषण, तुलनात्मक का प्रशासनिक अध्ययनों की प्रकृति– आदर्शात्मक से अनुभवात्मक, भाव चित्रात्मक से विधि संबंधी, गैर पारिस्थितिक से पारिस्थितिक। तुलनात्मक लोक प्रशासन का क्षेत्र, तुलनात्मक लोक

प्रशासन का महत्व, तुलनात्मक लोक प्रशासन में संकल्पनात्मक उपागम– नौकरशाही या अधिकारीतंत्रात्मक उपागम, व्यवहारवादी उपागम, सामान्य निकाय उपागम, पारिस्थितिक उपागम, संरचनात्मक कार्यात्मक उपागम, विकासवादी उपागम।

विकास प्रशासन

विकास प्रशासन के तत्व– परिवर्तन अभिमुखीकरण, लक्ष्यअभिमुखीकरण, प्रगतिवाद, नियोजन, नवीनतावाद, संगठनात्मक प्रक्रियाओं में लचीलापन, उच्चकोटि की प्रेरणा। लाभभोगी अभिमुखीकरण, सहभागिता, प्रभावी एकीकरण, सामना करने की क्षमता, विकास प्रशासन और प्रशासनिक विकास। विकास प्रशासन और परम्परागत प्रशासन, विकास प्रशासन के साधन– प्रशासनिक तंत्र, राजनीतिक संगठन, ऐच्छिक संस्थाएं, जन संगठन।

नवीन लोक प्रशासन

अमरीका में नवीन प्रवृत्तियॉ– सामाजिक असंतोष के बदलते परिवेश या वातावरण, फिलाडेल्फिया सम्मेलन, मिन्नोबुक सम्मेलन, नवीन लोक प्रशासन की विशेषताएँ– परिवर्तन तथा प्रशासनिक अनुक्रियाशीलता, तर्क संगति, प्रबंधक कर्मचारी सम्बन्ध, संरचनाऍं, लोक प्रशासन में शिक्षा, नवीन लोक प्रशासन के लक्ष्य– प्रासंगिकता, मूल्य, सामाजिक समता, परिवर्तन। नवीन लोक प्रशासन पर टिप्पणियॉ,।

सार्वजनिक संगठन : प्रतिमान (द पैराडाइम्स)

पुरातनवादी उपागमः लूथर गुलिक एवं लिंडल उर्विक

संरचना का महत्व, फेयोल के तत्वों से पोस्डकार्ब तक, संगठन के सिद्धान्त– कार्य विभाजन, समन्वय, आदेश की एकता, सूत्र एवं स्टाफ, नियंत्रण का क्षेत्र, पुरातनवादी सिद्धान्त की व्यवहारिक मान्यता, पुरातनवादी सिद्धान्त की आलोचना।

वैज्ञानिक प्रबंध : एफ. डब्ल्यू. टेलर

प्रारम्भिक कार्य का अध्ययन, अंश दर व्यवस्था, कारखाना प्रबंध, धातु काटने की कला, प्रबंध की त्रुटियां या कमियां, समय व गति अध्ययन। टेलर की प्रबंध संबंधी अवधारणा, वैज्ञानिक प्रबंध के सिद्धान्त– कार्य के वास्तविक विज्ञान का विकास, कामगारों के वैज्ञानिक चयन और उत्तरोत्तर विकास, कार्य के विज्ञान तथा वैज्ञानिक रूप से चयनित व

प्रशिक्षित व्यक्तियों को साथ लाना, कार्य व उत्तरदायित्व का विभाजन। क्रियाशील अध्यक्षता, वैज्ञानिक प्रबंध की व्यवस्थाएं, मानसिक क्रान्ति, आलोचना, टेलर के योगदान का मूल्यांकन।

मानवीय सम्बन्धात्मक उपागमः एल्टॉन मेयो

अर्थ और उदगमन– आर्थिक मंदी, पूंजी अवधारक उद्योग, तकनीकी प्रगति, टेलरवाद की प्रतिक्रिया, वर्ग विरोध। मेयो के प्रारम्भिक प्रयोग– प्रथम शोध, हॉथार्न के अध्ययन– महान प्रबोधन 1924–27, मानवीय भावनाएं और मनोवृत्तियां, सामाजिक संगठन। उद्योगों में अनुपस्थितिवाद, आलोचना।

व्यवस्थावादी उपागम : चेस्टर बरनार्ड

व्यवस्थावादी उपागम, एक सहकारी व्यवस्था के रूप में संगठन, औपचारिक संगठन, सत्ता की अवधारणा, उदासीनता का क्षेत्र, कार्यपालिका के कार्य, एक आलोचनात्मक मूल्यांकन।

व्यवहारवादी उपागमः हरबर्ट साईमन

परम्परावादी उपागम : साईमन द्वारा आलोचना, प्रशासन में निर्णय लेने का स्थान, चयन एवं व्यवहार, निर्णय निर्माण में मूल्य एवं तथ्य, निर्णयों का सोपान, निर्णय निर्माण में तार्किकता, संयोजित तथा असंयोजित निर्णय, निर्णय निर्माण तथा प्रशासनिक प्रक्रिया। विशेषीकरण, समन्वय, विशेष ज्ञान, उत्तरदायित्व । संगठनात्मक प्रभाव की विधियां, सत्ता, संगठनात्मक निष्ठाएं, कार्यकुशलता का आधार, परामर्श तथा सूचना, प्रशिक्षण। आलोचनात्मक मूल्यांकन।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक उपागम : डगलस मैकग्रेगर एवं अब्राहम मैस्लो

मैस्लो का अभिप्रेरणा सिद्धान्त, आवश्यकता– सोपान सिद्धान्त, आवश्यकता सोपान किस प्रकार कार्य करता है ? आवश्यकता पूर्ति की परिस्थितियॉ, आवश्यकता सोपान क्रम : एक मूल्यांकन। मैकग्रेगर का ''एक्स'' सिद्धान्त प्रबंध का परम्परावादी दृष्टिकोण। ''वाई'' सिद्धान्तः प्रबंध का एक नया सिद्धान्त, एक्स एवं वाई सिद्धान्त : एक मूल्यांकन।

पारिस्थितिकीय उपागम : फ्रेड डब्ल्यू. रिग्स

पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण, फ्रेड डब्ल्यू. रिग्स के विचार, आदर्श प्रारूपः बहुकार्यात्मक प्रारूप, अल्पकार्यात्मक प्रारूप, समपार्श्वीय प्रारूप, समपार्श्वीय समाजः विशेषताएं, विजातीयता, औपचारिकता, अतिच्छादन।

साल प्रारूप, बाजार कैंटीन प्रारूप, समपार्श्वीय समाज का सिद्धान्त : पुनर्निर्माण का संशोधन, आलोचना।

नौकरशाही : अर्थ

शब्द का उदभव, नौकरशाही का अर्थ– नौकरशाही नीति, सत्ताधारी लोक सेवक, पदाधिकारी, नौकरशाही – एक आदर्श संकल्पना, नौकरशाही एक संगठन, नौकरशाही एक समाज, नौकरशाही एवं तार्किकता, नौकरशाही का शब्दकोश में अर्थ, नौकरशाही : आलोचकों के मत। नौकरशाही के प्रकार – अभिभावक नौकरशाही, जातीय नौकरशाही, प्रश्रय अथवा संरक्षण नौकरशाही, योग्यता पर आधारित नौकरशाही, नौकरशाही के दोष।

मैक्स वेबर –

प्रभुत्व का सिद्धान्त, पारंपरिक प्रभुत्व, श्रद्धा पर आधारित प्रभुत्व, वैज्ञानिक या कानूनी प्रभुत्व, नौकरशाही की विशेषताएं– श्रम विभाजन, पदक्रम परम्परा, कागजी कार्रवाई। विशेषता, आजीविका की व्यवस्था, विविध वेतन, नौकरशाही के विकास के कारण, नौकरशाही के प्रशिक्षण, नौकरशाही संकल्पना की समीक्षा।

कार्ल मार्क्स

नौकरशाही का उदय, नौकरशाही की भूमिका, नौकरशाही की शक्ति और सैनिक तानाशाही, नौकरशाही की विशेषताएं, श्रम विभाजन, पद क्रम परम्परा, प्रशिक्षण, नियम, अलगाव। पूंजीपतियों और श्रमिकों के बीच संघर्ष में तीव्रता, मार्क्स के समाजवादी समाज में प्रशासन, आलोचनात्मक समीक्षा।

प्रतिनिधि नौकरशाही

प्रतिनिधि नौकरशाही का अर्थ, प्रतिनिधि नौकरशाही के कारण, ब्रिटेन और अमेरिका में स्थिति, भारत में स्थिति, प्रतिनिधित्व की सीमाएं, निष्कर्ष।

नौकरशाही से सम्बन्धित प्रश्न

सामान्य एवं विशेषज्ञ प्रशासक, सामान्य एवं विशेषज्ञ प्रशासकों के बीच संबंध, ब्रिटेन तथा भारत में अनुभव, गुमनामी, प्रतिबद्धता।

औपचारिक और अनौपचारिक संगठन

संगठन : अर्थ और परिभाषा, औपचारिक संगठन, औपचारिक संगठन

की विशेषताएं, औपचारिक संगठन के क्रिया कलाप, अनौपचारिक संगठन, अनौपचारिक संगठन क्यों, अनौपचारिक संगठन की विशेषताएं, अनौपचारिक संगठन की कमियॉ, औपचारिक और अनौपचारिक संगठन का पारस्परिक सम्बन्ध।

कार्य का विभाजन और समन्वय

कार्य का विभाजन क्यों? कार्य विभाजन के आधार, उद्देश्य पर आधारित संगठन, प्रक्रिया पर आधारित संगठन, व्यक्तियों पर आधारित संगठन, स्थान पर आधारित संगठन। कार्य विभाजन के लाभ, कार्य विभाजन की सीमाएं, समन्वय का अर्थ और परिभाषांएं, समन्वय क्यों आवश्यक है? टकराव या द्वंद्व समाप्त करने हेतु, खतरनाक प्रतियोगिका समाप्त करने हेतु, किफायत और कार्यकुशलता सुनिश्चित करने हेतु, लक्ष्य प्राप्त करने हेतु। समन्वय के तरीके– नियोजन, परामर्श, सम्मेलन और समितियॉ, क्रियाविधियों का मानवीकरण, लिखित निर्देश, समन्वय की समस्याएं।

सोपानक्रम

अर्थ तथा परिभाषा, महत्व, मूल विशेषताएं, स्तर लांघना, लाभ, कमियॉ, व्यावहारिक उपयोग।

नियंत्रण का क्षेत्र

नियंत्रण के क्षेत्र का महत्व, नियंत्रण के क्षेत्र और सोपानक्रम के बीच संबंध, नियंत्रण के क्षेत्र को प्रभावित करने वाले कारण ग्रेकुनास का फार्मूला, संशोधन के अंतर्गत नियंत्रण का क्षेत्र।

समादेश की एकता

अर्थ, महत्व, व्यवहार में समादेश की एकता, समादेश की एकता को प्रभावित करने वाले कारक, सिद्धान्त के अपवाद, समादेश की एकता के पक्ष में तर्क, समादेश की एकता के विरोध में तर्क।

केन्द्रीकरण और विकेन्द्रीकरण

केन्द्रीकरण का अर्थ,विकेन्द्रीकरण का अर्थ, विकेन्द्रीकरण के प्रकार, केन्द्रीकरण तथा विकेन्द्रीकरण को प्रभावित करने वाले तत्व, केन्द्रीकरण के गुण एवं दोष।

प्रत्यायोजन

प्रत्यायोजन का अर्थ, प्रत्यायोजन की विशेषताएं, प्रत्यायोजन की

आवश्यकता, प्रत्यायोजन के प्रकार, प्रत्यायोजन के सिद्धान्त, प्रत्यायोजन में अड़चनें, संगठनात्मक अड़चनें, व्यक्ति की अड़चनें, प्रत्यायोजन की सीमाएं।

निरीक्षण

अर्थ और परिभाषा, निरीक्षण के विभिन्न पहलू, एक और एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा निरीक्षण, निरीक्षण की तकनीकें, अच्छे निरीक्षक के गुण, निरीक्षक के कर्तव्य, निरीक्षकों के प्रशिक्षण।

संचार

अर्थ और परिभाषाएं, संचार व्यवस्था के तत्व, संचार की आवश्यकताएं, संचार के प्रकार, संचार के माध्यम, संचार प्रक्रिया में बाधक तत्व।

प्रशासनिक नियोजन

अर्थ एवं महत्व, नियोजन की प्रकृति, नियोजन के प्रकार– नीति एवं कार्यक्रम नियोजन, गतिविधि नियोजन एवं केन्द्रीय नियोजन, नियोजन प्रक्रिया, नियोजन की तकनीकें, नियोजन की गतिविधियों की अवस्थिति, नियोजन की समस्याएं।

अधिकार और उत्तरदायित्व

अधिकार : अर्थ और परिभाषा, अधिकार और शक्ति अधिकार के अध्ययन के तरीके, अधिकार के स्रोत, अधिकार की पूर्व अपेक्षाएं और पर्याप्तता, अधिकार की सीमाएं, उत्तरदायित्व, उत्तरदायित्व के प्रकार, राजनीतिक उत्तरदायित्व, संस्थागत उत्तरदायित्व, व्यावसायिक उत्तरदायित्व, अधिकार और उत्तरदायित्व।

नेतृत्व

नेतृत्व के सिद्धान्त, नेतृत्व के गुण, नेताओं के प्रकार्य– नेता : एक अधिशासी के रूप में, नेता–एक शिक्षक के रूप में, नेतृत्व की प्रविधियॉं, नेतृत्व की शैलियां, नेतृत्व की बाधाएं।

UGPA-02

भारतीय प्रशासन

ब्रिटिश शासन के आगमन के समय प्रशासनिक प्रणाली

मौर्य तथा गुप्त प्रशासन, मुगल प्रशासन की सामान्य विशेषताएं, शासक की भूमिका, नौकरशाही, सेना, पुलिस। मुगल प्रशासन पद्धति का ढांचा– केन्द्रीय प्रशासन, प्रांतीय प्रशासन, जिला और स्थानीय प्रशासन। राजस्व प्रशासन– भू राजस्व : आय का प्रमुख स्रोत, भूमि पट्टेदारी के प्रकार, भू राजस्व प्रशासन, प्रमुख राजस्व सुधार, भू–राजस्व वसूली की पद्धति। न्याय प्रशासन– दीवानी न्याय प्रशासन, फौजदारी न्याय प्रशासन ।

ब्रिटिश प्रशासन का उद्‌भवः 1757–1858

प्रशासन की प्रकृति, ईस्ट इण्डिया कम्पनी की मुख्य विशेषताएं, सन 1773 का रेग्युलेटिंग ऐक्ट, सन् 1781 का अमेंडिंग ऐक्ट। सन 1781–1834 के बीच सांविधानिक परिवर्तन– पिट्स इण्डिया ऐक्ट, 1786 का अमेंडिंग ऐक्ट। केन्द्रीय सचिवालय– सरकार के मंत्रियों के विभाग, 1787–1808 के बीच सचिवालय में हुए परिवर्तन, वित्त और उपनिवेशी विभाग, सन् 1815 में विभागों का पुनर्गठन। गवर्नर जनरल के अधीन विभाग तथा अन्य सिविल विभाग– राजस्व प्रशासन, दीवानी की साम्राज्यिक स्वीकृति, राजस्व मंडल या राजस्व परिषद का गठन, जिला प्रशासन और जिलाधिकारी। राजस्व मण्डल– मंडल आयुक्तों की भूमिका, दंड न्याय प्रशासन और पुलिस प्रशासन, सिविल सेवा।

ब्रिटिश प्रशासन में सुधार : 1858 से 1919 तक

स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद, इण्डियन काउंसिल ऐक्ट– आपसी संपर्क की नीति की आवश्यकता, इण्डियन काउंसिल ऐक्ट 1861, इण्डियन काउंसिल ऐक्ट 1892। राष्ट्रीय आन्दोलन और प्रशासनिक सुधार– राष्ट्रीय आन्दोलन और संवैधानिक सुधार, प्रशासनिक सुधारों की मांग, मार्ले मिंटो सुधार 1909 – मुख्य प्रावधान, सुधारों की समीक्षा, भावी सुधारों के संकेत। प्रशासनिक ढांचा– विभागों का पुनर्गठन, सिविल सेवाएं, वित्तीय प्रशासन, पुलिस प्रशासन, स्थानीय प्रशासन,

मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार 1919 – गवर्नमेंट आफ इण्डिया ऐक्ट 1919 की प्रस्तावना, केन्द्र सरकार, प्रांतों में दोहरी शासन प्रणााली, सुधारों की समीक्षा।

1935 के अधिनियम के अंतर्गत प्रशासनिक सुधार

सुधारों की शुरूआत, साइमन कमीशन, नेहरू योजना, प्रतिक्रियाएं, भारत सरकार अधिनियम 1935– मुख्य विशेषताएं, टिप्पणियां, केन्द्र में प्रशासनिक प्रणाली– अखिल भारतीय परिसंघ, अखिल भारतीय परिसंघ की विफलता, प्रांतीय स्वायत्ता – प्रान्तों में विधायिका और कार्यपालिका, प्रांतीय स्वायत्तता की कार्य प्रणाली, उपलब्धियॉ, प्रशासनिक ढांचा– विभागों का गठन, लोक सेवा, वित्तीय प्रशासन, न्याय प्रशासन, स्थानीय प्रशासन। नए संविधान की ओर– गतिरोध, परिवर्तन की प्रक्रिया, ब्रिटिश शासन की विरासत।

1947 के पश्चात् भारतीय प्रशासन में निरंतरता एवं परिवर्तन

भारतीय प्रशासन में निरंतरता, विभागीय संगठन, लोक सेवाएंः स्वरूप, लोक सेवा आयोग, प्रशासन में विकास और कल्याण के तत्व। संघीय शासन में प्रशासन की भूमिका, प्रशासन में राजनीतिक नेताओं और जनता की भागीदारी।

सांविधानिक ढांचा

बुनियादी विशेषताएं, केन्द्रीय सरकार की शक्तियां, मंत्रिपरिषद की भूमिका, सांविधानिक प्राधिकरण, भारत का नियंत्रक महालेखापरीक्षक, भारत का महान्यायवादी, अनुसूचित जाति/अनसूचित जनजातियों के लिए विशेष अधिकारी (आयुक्त) , भाषायी अल्पसंख्यकों के लिए विशेष अधिकारी। सांविधानिक आयोग, वित्ता आयोग,निर्वाचन आयोग, राजभाषा आयोग, संघ लोक सेवा आयोग।

केन्द्रीय सचिवालय : संगठन एवं कार्य

केन्द्रीय सचिवालय का विकास, अर्थ, कार्य, केन्द्रीय सचिवालय के कार्य, सचिवालय की संरचना– विभाग/मंत्रालय, सचिवालय के विभिन्न श्रेणियों के अधिकारियों के कार्य, अवधि प्रणाली, कार्यपालक एजेसियां, अर्थ, वर्गीकरण, सचिवालय तथा कार्यपालक एजेन्सियोंके

बीच सम्बन्ध। अधीनस्थ कार्यालय।

प्रधान मंत्री कार्यालय और मंत्रिमंण्डल सचिवालय

प्रधानमंत्री की शक्तियां और कार्य, प्रधानमंत्री को सांस्थानिक सहायता, प्रधानमंत्री कार्यालय का विकास, गठन, कार्य, प्रधानमंत्री कार्यालय की बदलती हुई भूमिका। मंत्रिमंडल सचिवालय– भारत में मंत्रिमंडल सचिवालय की स्थापना, संगठन और कार्य, मंत्रिमंडल सचिव की भूमिका, मंत्रिमण्डल समितियां, आकार, कार्य और भूमिका।

संघ लोक सेवा आयोग/चयन आयोग

संघ लोक सेवा आयोग का उदभव, भारत में लोक सेवा आयोग का विकास, प्रथम काल– 1926–37 (भारत सरकार अधिनियम, 1919 और ली आयोग), द्वितीय काल– 1937–50 (भारत सरकार अधिनियम 1935), तृतीय काल– 1950 से अब तक। संघ लोक सेवा आयोग का गठन। गठन, सदस्यों की नियुक्ति और पदावधि, संघ लोक सेवा आयोग के कार्य – संघ ालेक सेवा आयोग की सलाहकार भूमिका।

योजना प्रक्रिया

योजना का अर्थ, योजना की आवश्यकता, योजना के प्रकार, भारत में योजना की उत्पत्ति, केन्द्रीय स्तर पर योजना तंत्र– योजना आयोग का संगठन और भूमिका, आंतरिक संगठन, योजनागत परियोजना के बारे में समिति, कार्यक्रम मूल्यांकन संगठन। राष्ट्रीय विकास परिषद की भूमिका, केन्द्रीयकृत योजना की समस्या।

अखिल भारतीय एवं केन्द्रीय सेंवाएं

ऐतिहासिक विकास, अखिल भारतीय सेवाओं का गठन, भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा, भारतीय वन सेवा, भारतीय प्रशासनिक सेवा का महत्व, अखिल भारतीय सेवाओं में भर्ती, अखिल भारतीय सेवाओं के कार्मिकों का प्रशिक्षण, संवर्ग प्रबंध, अखिल भारतीय सेवाओं की आवश्यकता, केन्द्रीय सेवाएं, भर्ती, प्रशिक्षण तथा संवर्ग प्रबंध, भारतीय विदेश सेवा।

राज्य प्रशासन की सांविधानिक रूपरेखा

राज्य सरकार की शक्तियां, राज्य सूची, समवर्ती सूची, राज्यपाल की

भूमिका, राज्य का विधान मंडल, राज्य का मंत्रिपरिषद्, मंत्रिमंडल की शक्तियां और कार्य, राज्य स्तर पर विभागों में कार्य का विभाजन। मुख्यमंत्री की भूमिका– मंत्रिपरिषद के संबंध में मुख्यमंत्री की शक्तियां, राज्यपाल के संबंध में मुख्यमंत्री की शक्तियां, विधानमंडल के संबंध में मुख्यमंत्री की शक्तिया, नौकरशाही के संबंध में मुख्यमंत्री की शक्तियां। उभरती प्रवृत्तियां, निष्कर्ष।

राज्य सचिवालय : संगठन एवं कार्य

सचिवालय का अर्थ, राज्य सचिवालय की स्थिति तथा भूमिका,सामान्य सचिवालय विभाग की संरचना, राज्य सचिवालय में विभागीकरण का ढांचा,सचिवालय विभाग एवं कार्यपालक विभाग में अंतर– नीति तथा प्रशासन : विविक्त प्रक्रियाएं या अबाध क्रम। मुख्य सचिव–मुख्य सचिव का स्थान, मुख्य सचिव के कार्य।

निदेशालय/प्रादेशिक प्रशासन

निदेशालय–अर्थ तथा नाम पद्धति, राज्य तथा क्षेत्रीय स्तर पर निदेशालयों का गठन। कार्यपालक एजेसियों के रूप या प्रकार– सम्बन्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों की भूमिका। राजस्व बोर्ड– दर्जा तथा स्थान, बोर्ड एक जिले से ऊपर के स्तर की एजेन्सी के रूप में, जिले से ऊपर के स्तर पर राजस्व प्रशासन का ढांचा, राजस्व बोर्ड का गठन तथा कार्य, गठन, कार्य, क्षेत्रीय प्रशासन– महत्व, अर्थ तथा ढांचा, भूमिका, मूल्यांकन। मंडल आयुक्त– स्थान और कार्य क्षेत्र, संस्था का उतार चढ़ाव वाला जीवन। क्षेत्रीय आयुक्तः एक विवादास्पद पद–विवाद के मुद्दे। पक्ष में तर्क, विपक्ष में तर्क, क्षेत्रीय आयुक्त के कार्य।

निदेशालयों और सचिवालयों के बीच संबंधों के ढॉचे

सचिवालय–निदेशालय के बीच संबंध को स्वरूप देने वाले कारक– सचिवालय की कार्य विधि के पहलू, सचिवालय के विस्तार के लिए उत्तरदायी कारक, दोनों पक्षों के समर्थन का आधार– सचिवालय के पक्ष में तर्क, निदेशालयों के पक्ष में तर्क। सचिवालय और निदेशालय के बीच संबंधों के उभरते हुए स्वरूप । यथास्थितिवादी दृष्टीकोण– पक्ष में तर्क, विपक्ष में तर्क, दूरी को कम करने वाला दृष्टिकोण–पदेन सचिवालय स्तर, कार्यकारी एजेंसी के अध्यक्ष के रूप में सचिव की

समवर्ती नियुक्ति। निदेशालय का सचिवालय में विलय, विलय का दूसरा प्रारूप। निर्विलय का दृष्टिकोण– निर्विलय क्यों : बिहार का अनुभव, सतत विलय के पक्ष में तर्क, निर्विलय (विलय न करने) के पक्ष में तर्क, निर्विलय लाने में कौन सी उलझने हैं?

राज्य सेवाएं एवं लोक सेवा आयोग

सिविल सेवा का अर्थ, स्वतंत्र भर्ती एजेंसी का महत्व, राज्य स्तर पर सिविल सेवा के घटक– अखिल भारतीय सेवाएं, राज्य सेवाएं, पारस्परिक संबंध और अंतर्संबंध। राज्य सिविल सेवाओं का वर्गीकरण– वेतनमानों आदि पर आधारित वर्गीकरण, राजपत्रित और अराजपत्रित वर्गीकरण। राज्य सिविल सेवाओं की भर्ती, विशेषताएं, आयोग के संबंध में सांविधानिक प्रावधान, आयोग का गठन– आयोग के कार्य, सलाहकारी भूमिका,आयोग की स्वतंत्रता, आयोग की कार्यप्रणाली– सरकार द्वारा प्रश्रय का प्रयोग, आयोग की सदस्यता का प्रश्न।

क्षेत्र प्रशासन की संरचना

मंडलीय प्रशासन, जिला प्रशासन का विकास, जिले का आकार, प्रादेशिक उप मंडल, कलक्टर और जिला प्रशासन, जिला प्रशासन के महत्वपूर्ण घटक, प्रशासनिक संगठन, क्षेत्र प्रशासन में समस्या मूलक क्षेत्र।

जिला कलक्टर

कार्यालय का विकास, कलक्टर के कार्य, कलक्टर और पंचायती राज, प्रशासनिक सहायता, लखीना प्रयोग, कलक्टर का कार्य : कुछ दबाव।

पुलिस प्रशासन

भारत में पुलिस प्रशासन की पृष्ठभूमि, पुलिस की भूमिका और कार्य, केन्द्र और राज्य स्तर पर संगठन, रेंज स्तर पर संगठन, जिला और उपजिला स्तर पर संगठन, ग्राम पुलिस– ग्राम पुलिस स्टेशन, गांवों में पुलिस व्यवस्था। शहरी पुलिस, पुसिल प्रशासन के सम्मुख कुछ मुद्दे।

शहरी प्रशासन :नगर निगम/विकास प्राधिकरण

भारत में शहरीकरण, शहरी क्षेत्रों का वर्गीकरण, नगर निगम– परिषद, समिति प्रणाली, महापौर, आयुक्त, नगरपालिकाएं, परिषद, समिति

प्रणाली, राजनीतिक कार्यकारी, नगरपालिका आयुक्त, शहरी विकास प्राधिकरण, नगरपालिका कार्मिक, वित्त, राज्य शहरी स्थानीय निकाय संबंध, नई प्रवृत्तियां।

पंचायती राज

पृष्ठभूमि, संरचना, कार्य, समिति प्रणाली, नौकरशाही, वित्तीय साधन, राज्य पंचायती राज संबंध, नई प्रवृत्तियां, मूल्यांकन।

सामाजिक सांस्कृतिक कारक और प्रशासन

सामाजिक संरचना के मुख्य लक्षण और प्रशासन पर प्रभाव–ग्रामीण आबादी, धर्म, जाति, परिवार, संस्कृति और प्रशासन।

लोक शिकायतों का निवारण

लोक शिकायतों की प्रकृति, प्रशासन में भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार के तरीके, स्केनहोनेवियन संस्था : ओम्बुइसमैन, केन्द्रीय सतर्कता आयोग, लोकपाल, लोकायुक्त, समीक्षात्मक मूल्यांकन।

प्रशासनिक अधिकरण

प्रशासनिक अधिकरण का अभिप्राय और महत्व, प्रशासनिक अधिकरण की वृद्धि के कारण, प्रशासनिक अधिकरण के प्रकार, प्रशासनिक अधिकरण की विशेषताएं, केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण की संरचना, प्रशासनिक अधिकरण के लाभ, प्रशासनिक अधिकरण की हानियॉ, प्रशासनिक अधिकरणों की कमियों से बचाव के उपाय।

न्यायिक प्रशासन

भारत में न्याय प्रणाली, प्रशासन पर न्यायिक नियंत्रण का क्षेत्र, प्रशासन पर न्यायिक नियंत्रण के रूप, न्यायिक समीक्षा, सांविधिक अपील, सरकार के विरूद्ध मुकदमा, सरकारी अधिकारियों के विरूद्ध आपराधिक और सिविल मुकदमें, असाधारण निकारण । प्रशासन पर न्यायिक नियंत्रण की सीमाएं, लोक हित के मुदकमें, कानूनी सहायता,न्याय पंचायतें।

केन्द्र एवं राज्यों के बीच प्रशासनिक संबंध

केन्द एवं राज्यों के बीच प्रशासनिक शक्तियों का विभाजन, संवैधानिक

उपाय, संविधानेत्तर उपाय, राज्यों पर कार्यकारी नियंत्रण के तरीके, आपातकालीन प्रावधान, सरकारिया आयोग की सिफारिशें, उपसंहार।

विकेन्द्रीकरण विवाद

विकेन्द्रीकरण का अर्थ, विकेन्द्रीकरण का महत्व, विकेन्द्रीकरण की अवधारणा के दृष्टिकोण, विकेन्द्रीकरण के प्रकार, भारत में विकेन्द्रीकरण की प्रणाली, स्वंतंत्रता पूर्व काल, स्वतंत्रयोत्तर काल, वर्तमान प्रवृत्तियां, संविधान के प्रावधान, विकेन्द्रीकरण संस्थाओं की कार्य प्रणाली, विकेन्द्रीकरण के बाधक कारक।

राजनीतिक एवं स्थायी कार्यकारियों के बीच संबंध

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, नीति–प्रशासन द्वैधता, सम्बंधता को शासित करने के सिद्धान्त, तटस्थता का प्रतिमान, गुमनामता का प्रतिमान, सहयोग एवं टकराव के क्षेत्र, लोकप्रिय चेतना की वृद्धिं।

दबाव समूह

दबाव समूहों का अर्थ, दबाव समूह और राजनीतिक दल, दबाव समूह और लाब् इंग, दबाव समूहों की विशेषताएं, दबाव समूहों के प्रकार, भारत में दबाव समूहों की प्रकृति, भारत में दबाव समूहों द्वारा कार्य करने के तरीके, दबाव समूहों की सीमाएं, उपसंहार।

सामान्यज्ञ एवं विशेषज्ञ

सामान्यक एवं विशेषज्ञ अर्थ, सामान्यकों एवं विशेषज्ञों में संबंध, सामान्यकों के पक्ष में तर्क, विशेषज्ञों के पक्ष में तर्क, प्रशासनिक सुधार आयोग के सुझााव, दोनों के मध्य सेतु स्थापना के लिए सुझाव लागू करना।

प्रशासनिक सुधार

प्रशासनिक सुधार का अर्थ, प्रशासनिक सुधार की आवश्यकता, प्रशासनिक सुधार के प्रकार, भारत में स्वतंत्रता के बाद प्रशासनिक सुधार, प्रशासनिक सुधार आयोग (ए.आर.सी.) की 1966 में नियुक्ति प्रशासनिक सुधार आयोग की मुख्य सिफारिशें, संगठन और पद्धति प्रभाग, कार्मिक, लोक शिकायत,पेंशन और पेंशनर कल्याण मंत्रालय की भूमिका, निष्कर्ष।

UGPA-03

विकास प्रशासन

विकास प्रशासन –संकल्पना और अर्थ

विकास प्रशासन का अर्थ, परंपरागत प्रशासन एवं विकास प्रशासन में अंतर, विकास प्रशासन की उत्पत्ति, विकास प्रशासन की विशेषताएं,

क्षेत्र और महत्व

विकास प्रशासन का कार्य क्षेत्र, विकास प्रशासन के आदर्श, विकास प्रशासन का महत्व।

उद्‌भव

1950 के दशक में विकास प्रशासन का उदभव और विकास, 1960 के दशक में विकास प्रशासन, 1970 के दशक में विकास प्रशासन पर दबाव, 1980 के दशक में विकास प्रशासन की प्रवृत्ति अथवा झुकाव।

भारत में विकास प्रशासन की संवृद्धि

योजनाबद्ध परिवर्तन, स्वतंत्र भारत में भूमि सुधार और उनका कार्यान्वयन, सामुदायिक विकास कार्यक्रम, भारत में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण, विकास और विकास प्रशासन के लिए अपनाए गये दृष्टिकोण/उपागम, भारत में प्रशासनिक विकास।

स्वतंत्रता के समय भारत की सामाजिक–आर्थिक रूपरेखा (प्रोफाईल)

ब्रिटिश शासन काल में भारत की सामाजिक और आर्थिक स्थिति, भारत की गतिहीन अर्थव्यवस्था की रूपरेखा, अल्प विकास की औपनिवेशिक वसीयत।

मिश्रित अर्थव्यवस्था मॉडल तथा इसका तर्कसंगत आधार और महत्व

मिश्रित अर्थव्यवस्था की अवधारणा, मिश्रित अर्थव्यवस्थाः एक शुद्ध अर्थव्यवस्था नहीं है, भारतीय अर्थव्यवस्था की मिश्रित आर्थिक प्रकृति,मिश्रित अर्थव्यवस्था का तर्कसंगत आधार, मिश्रित अर्थव्यवस्था के लक्षण, मिश्रित अर्थव्यवस्था का महत्व– अवसंरचना का विकास और सरकारी सेक्टर, निजी सेक्टर की भूमिका, भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था का विकास, मिश्रित अर्थव्यवस्था में योजना की भूमिका, निष्कर्ष।

योजना (प्लानिंग) की भूमिका

योजना का अर्थ, योजना की आवश्यकता, भारत में योजना हेतु मशीनरी, योजना का विकास, योजना कार्य में संबद्ध संस्थाएं, भारत में योजना की प्रक्रिया, भारत में योजना की सीमाएं, निष्कर्ष।

विकास के उद्देश्य

विकास की संकल्पना, भारत में विकास संबंधी लक्ष्य, हमारे योजनागत उद्देश्य, निष्कर्ष,

योजना आयोग तथा राष्ट्रीय विकास परिषद्

योजना आयोग के कार्य, योजना आयोग की संरचना, राष्ट्रीय विकास परिषद, योजना की कार्यविधि, योजना आयोग की भूमिका।

राज्य योजना तंत्र (मशीनरी)

राज्य योजना मण्डलों की भूमिका, राज्य योजना मण्डलों की रचना, राज्य योजना विभाग, राज्य योजना कार्यविधि प्रोसीजर, निष्कर्ष।

जिला नियोजन

जिला नियोजन का औचित्य, स्थानीय नियोजन में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका, जिला नियोजन तंत्र, जिला नियोजन की समस्याएं।

आधार स्तरीय नियोजन

सामुदायिक विकास कार्यक्रम, पंचायती राज, आधार स्तरीय नियोजन का पतन, पुनरूत्थान के प्रयास।

अधिकारी तंत्र (नौकरशाही) की भूमिका

राज्य और अधिकारी तंत्र (नौकरशाही) की बढ़ती हुई भूमिका, नीति निर्माण में अधिकारी तंत्र की भूमिका, नीति के कार्यान्वयन में अधिकारी तंत्र की भूमिका, परियोजना और कार्यक्रमों की समीक्षा, अधिकारी तंत्र की समस्याएं।

भारतीय अधिकारी तंत्र (नौकरशाही) की औपनिवेशिक विरासत

राजनीतिक विरासत, अधिकारी तंत्र का वर्गीकरण, नियुक्ति या भर्ती, प्रोन्नति, सेवा शर्तें, सांगठनिक विरासत, प्रक्रियात्मक विरासत,

राजनीतिक गतिविधि, सांस्कृतिक विरासत।

भारतीय अधिकारी तंत्र (नौकरशाही) की सामाजिक पृष्ठभूमि

अधिकारीतंत्र (नौकरशाही) की सामाजिक पृष्ठभूमि, अधिकारी तंत्र की सामाजिक पृष्ठभूमि का प्रशासन पर प्रभाव, अधिकारी तंत्र को अधिक प्रातिनिधिक बनाने के उपाय।

तटस्थ बनाम प्रतिबद्ध अधिकारी तंत्र (नौकरशाही)

तटस्थता, प्रतिबद्धता, तटस्थता और प्रतिबद्धता का निर्धारण।

सरकारी अधिकारियों और राजनेताओं के बीच संबंध

नीति गठन की प्रक्रिया में संबंध, कार्यान्वयन की प्रक्रिया में संबंध, संबंधों के बीच समस्याएं।

अधिकारी तंत्र (नौकरशाही) की क्षमता में वृद्धि

कार्मिक विकास, संगठनात्मक विकास, प्रक्रियात्मक विकास, समाज का विकास।

लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की अवधारणा

विकेन्द्रीकरण की अवधारणा, विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता, विकेन्द्रीकरण के आयाम, लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण, लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के मार्ग में आने वाली बाधाएं।

पंचायती राज का उद्‌भव और भूमिका

प्राचीन काल, ईसा पूर्व 600 से सन 600 ईस्वी के मध्य ग्रामीण स्थानीय शासन, कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अन्तर्गत स्थानीय संस्थायें, मुगलकाल में ग्रामीण स्थानीय स्वशासन, ब्रिटिश शासन के दौरान ग्रामीण स्थानीय स्वशासन, स्वतंत्रता के पश्चात स्थानीय शासन का विकास, पंचायती राज की भूमिका।

पंचायती राज के उभरते हुए प्रतिमान

पंचायती राज की संरचना, आंध्र प्रदेश प्रतिमान, महाराष्ट्र प्रतिमान, कर्नाटक प्रतिमान।

पंचायती राज के भविष्य एवं समस्याएं

पंचायती राज संस्थाओं के द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएं,

पंचायती राज संस्थाओं के भविष्य।

स्वैच्छिक अभिकरणों की भूमिका

अवधारणा, उदविलास, स्वैच्छिक कार्य की विधियां, स्वैच्छिक अभिकरणों की भूमिका, राज्य एवं स्वैच्छिक अभिकरण, स्वैच्छिक अभिकरणों का परिचय, कार्यक्रमों का परिचय, स्वैच्छिक अभिकरणों का स्वरूप।

सहकारिता एवं विकास

सहकारिता की अवधारणा, परिभाषा, सहकारी आन्दोलन के उद्देश्य, सहकारिता के प्रतिमान, सहकारी के प्रकार, सहकारी एवं पंचायती राज संस्थाएं।

विकास के लिए विशिष्ट अभिकरण

अवधारणा, दष्टिकोण, सूखा प्रवण क्षेत्र कार्यक्रम, मरूभमि विकास कार्यक्रम, नहरी क्षेत्र विकास प्राधिकरण, पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम, एकीकृत जनजाति विकास अभिकरण, परिसम्पत्तिमूलक दृष्टिकोण।

सार्वजनिक (सरकारी) क्षेत्र का उदभव और विकास

सार्वजनिक क्षेत्र और सार्वजनिक उद्यम–अर्थ, भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का उदभव, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्देश्य, सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार और अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव।

सार्वजनिक उद्यम के स्वरूप

विभागीय उपक्रम, वैधानिक निगम, सरकारी कंपनी, सार्वजनिक उद्यमों के लिए संगठन के स्वरूप का चयन, संगठन के दूसरे स्वरूप, संयुक्त उद्यम, सार्वजनिक उद्यमों के लिए एक समग्र संगठन की आवश्यकता।

विकास निगमों की भूमिका

विकास निगमों की संकल्पना, विकास निगमों के कार्य, विकास बैंक, विकास निगमों की भूमिका और उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन ।

सार्वजनिक क्षेत्र की प्रशासनिक समस्याएँ

भारत में सावर्जनिक क्षेत्र की प्रमुख समस्याएं, नीतिगत पहलू, संगठनात्मक समस्याएं, क्रियात्मक समस्याएं।

UGPA-04

कार्मिक प्रशासन

कार्मिक प्रशासन की संकल्पना, प्रकृति और कार्यक्षेत्र

कार्मिक प्रशासन की संकल्पना, कार्मिक प्रशासन : अर्थ, कार्मिक प्रशासन की प्रकृति, कार्मिक प्रशासनः उदभव तथा विकास, कार्मिक प्रशासन का कार्यक्षेत्र, निष्कर्ष।

कार्मिक प्रशासन के कार्य और महत्व

कार्मिक प्रशासन के कार्य, मानव शक्ति नियोजन, भर्ती प्रशिक्षण एवं पदोन्नति, वेतन संरचना, कर्मचारी कल्याण। कार्मिक प्रशासन का महत्व।

''लोक सेवाएं'' और प्रशासनिक प्रणाली में उनकी भूमिका

लोक सेवाओं का अर्थ, सरकार (शासन) और लोक सेवा के बीच संबंध, लोक सेवाओं का कार्यक्षेत्र, पारंपरिक राज्य से आधुनिक राज्य में परिवर्तन, लोक सेवा के प्रकार्य, लोक सेवा के प्रतिदर्श, लोक सेवाओं की बदलती हुई भूमिका।

भारत में लोक कार्मिक प्रशासन की विशेषताएँ

भारत में लोक कार्मिक प्रशासन की विशेषताएं, भारत में लोक कार्मिक प्रशासन : कुछ विकृतियां, एक कुशल लोक कार्मिक प्रशासन व्यवस्था का उदय।

आधुनिक नौकरशाही के परिप्रेक्ष्य में लोक सेवा

नौकरशाही का अर्थ, नौकरशाही के प्रकार, नौकरशाही के लक्षण, नौकरशाही की भूमिका, हाल के वर्षों में नौकरशाही की बढ़ती हुई भूमिका, नौकरशाही के गुण तथा दोष।

नौकरशाही के आधार

नौकरशाही की स्थिति के आधार, नौकरशाही –प्रतिनिध्यात्मक प्रकृति, भारतीय नौकरशाही का बढ़ता आधार।

भारत में लोक सेवाओं का विकास

ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना से पूर्व लोक सेवाएं, ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अन्तर्गत लोक सेवाएं (1675–1857), ब्रिटिश राज्य में लोक

सेवांएं (1858–1917), भारत सरकार अधिनियम 1919 तथा 1935 के अंतर्गत लोक सेवाएं।

सेवाओं (काडर) का वर्गीकरण

सेवाओं का वर्गीकरण– अर्थ एवं महत्व, वर्गीकरण के आधार, वर्गीकरण के लाभ, वर्गीकरण के प्रकार, भारत में स्वतंत्रता पूर्व काल में सेवाओं का वर्गीकरण, स्वतंत्रता पश्चात लोक सेवाओं का वर्गीकरण, वर्तमान वर्गीकरण व्यवस्था का आलोचनात्मक मूल्यांकन, प्रशासनिक सुधार आयोग की सिफारिशें, तृतीय एवं चतुर्थ वेतन आयोग की सिफारिशें।

सामान्यज्ञ तथा विशेषज्ञ

सामान्यज्ञ– अर्थ, सामान्यज्ञ की भूमिका, विशेषज्ञ– अर्थ, विशेषज्ञों की भूमिका, भारत में सामान्यज्ञों एवं विशेषज्ञों के मध्य विवाद/विरोधाभास, उपयुक्त ढंग विकसित करना, निष्कर्ष।

कार्मिक विभाग/संघ लोक सेवा आयोग/राज्य लोक सेवा आयोग/ कर्मचारी चयन आयोग की भूमिका और कार्य

केन्द्रीय कार्मिक एजेंसी की आवश्यकता, कार्मिक विभाग का क्रम विकास, कार्मिक, प्रशिक्षण, प्रशासनिक सुधार, लोक शिकायतें,पेंशन और पेंशनभोगी कल्याण मंत्रालय की संरचना। कार्मिक प्रशिक्षण, प्रशासनिक सुधार, लोक शिकायतें, पेंशन और पेंशनभोगी कल्याण मंत्रालय की भूमिका और कार्य, संघ लोक सेवा आयोग का क्रम विकास, संघ और राज्य लोक सेवा आयोग का गठन, लोक सेवा आयोग के कार्य, लोक सेवा आयोग की परामर्शदात्री भूमिका, कर्मचारी चयन आयोग : उत्पत्ति, कर्मचारी चयन आयोग की भूमिका और कार्य, आयोग की रूपरेखा।

केन्द्रीय एवं राज्य प्रशिक्षण संस्थान

प्रशिक्षण की भूमिका, प्रशिक्षण के प्रकार – बुनियादी प्रशिक्षण, सेवा में भर्ती के समय दिया जाने वाल प्रशिक्षण, सेवाकाल के दौरान दिया जाने वाला प्रशिक्षण। केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान, राज्य प्रशिक्षण संस्थान, राज्य प्रशिक्षण संस्थानों के कार्य, राज्य प्रशिक्षण संस्थान को राज्य में प्रशिक्षण देने वाला एक प्रमुख अभिकरण बनाना ।

प्रशासनिक अधिकरण

प्रशासनिक अधिकरण – क्रम विकास, प्रशासनिक अधिकरणों की संरचना, प्रशासनिक अधिकरणों का गठन, अधिकार क्षेत्र, अधिकार और प्राधिकार, प्रशासनिक अधिकरणों में आवेदन का तरीका, प्रशासनिक अधिकरणों के लाभ और उनकी सीमाएं,निष्कर्ष।

जीवनवृत्ति (कैरियर) नियोजन एवं विकास

जीवनवृत्ति (कैरियर) नियोजन और विकास– अर्थ, जीवनवृत्ति नियोजन और विकास का महत्व, जीवनवृत्ति का वर्गीकरण, जीवनवृत्ति नियोजन और विकास के उपाय, जीवनवृत्ति (कैरियर) के चरण, जीवनवृत्ति का प्रतीकात्मक ढांचा।

कार्मिक नीति

नीति निर्धारण–अर्थ, भारत में सार्वजनिक कर्मचारी, कार्मिक नीतियो के निर्धारण के लिए संगठन संस्था, कार्मिक विभाग, नवीन नीति परिदृश्य।

भर्ती (नौकरियों में आरक्षण)

भर्ती का महत्व, भर्ती का अर्थ, भर्ती की प्रक्रिया, भर्ती की विधियां एवं प्रकार, अर्हता पद्धति, अर्हता निर्धारण की विधियां, श्रेष्ठ भर्ती पद्धति की आवश्यक शर्तें, भारत में भर्ती की पद्धति, आरक्षण क्यों? संवैधानिक सुरक्षा, लोक सेवाओं में पदों का आरक्षण।

पदोन्नति

पदोन्नति का महत्व, पदोन्नति का अर्थ, सिविल सेवाओं में पदोन्नति की आवश्यकता, पदोन्नति के प्रकार, पदोन्नति के सिद्धान्त, पदोन्नति के लिए अर्हता जांच पद्धतियां, श्रेष्ठ पदोन्नति नीति की आवश्यक शर्तें, भारत में पदोन्नति पद्धति।

प्रशिक्षण

प्रशिक्षण का महत्व, विकासशील देशों में प्रशिक्षण, प्रशिक्षण का अर्थ, प्रशिक्षण का उद्देश्य, प्रशिक्षण की किस्में, प्रशिक्षण की पद्धतियां और तकनीकें, सिविल कर्मचारियों/अधिकारियों के प्रशिक्षण की अवधारणा का ऐतिहासिक विकास, प्रक्षिण की भारतीय प्रणाली, भारत में प्रशिक्षण एजेन्सियां और संस्थाएं, प्रशिक्षण की भारतीय प्रणाली का आलोचनात्मक मूल्यांकन।

कार्य निष्पादन मूल्यांकन

कार्य निष्पादन मूल्यांकन की आवश्यकता और महत्व,कार्य निष्पादन मूल्यांकन का अर्थ, कार्य निष्पादन मूल्यांकन का उद्देश्य, कार्य निष्पादन मूल्याकन की पद्धतियां, कार्य निष्पादन मूल्यांकन को प्रभावित करने वाले तत्व, सरकार में कार्य निष्पादन मूल्यांकन की प्रणाली, प्रशासनिक सुधार आयोग की सिफारिशें,

वेतन प्रशासन (प्रोत्साहन तथा अन्य लाभ सम्मिलित करते हुए)

वेतन निर्धारण की पद्धतियॉं, कार्य मूल्यांकन की पद्धतियां, वेतन निर्धारण के सिद्धान्त, अंगेजी राज में वेतन प्रशासन का इतिहास, स्वतंत्रता के उपरांत की अवधि में वेतन प्रशासन हेतु अपनाए गये सिद्धान्त, प्रोत्साहन,अन्य लाभ।

आचरण एवं अनुशासन

कार्मिक प्रशासन में आचरण एवं अनशासन की भूमिका, आचरण यिमावली के अन्तर्गत आने वाले विषय, अनुशासनिक कार्यवाही–अर्थ, अनुशासनिक कार्यवाही के कारण, अनुशासनिक कार्यवाही के प्रकार, अनुशासनिक कार्यवाही के तरीके, अंग्रेजी राज के दौरान सरकारी कर्मचारियों के विरूद्ध अनुशासनिक कार्यवाही ,अनशासनिक मामलों के संबंध में –भारत का संविधान, अनुशासनिक कार्यवाही में निहित क्रमिक चरण, वाद विषय और समस्याएं

प्रशासनिक नैतिकता तथा सरकारी सेवाओं में निष्ठा

प्रशासनिक नैतिकता का व्यवहार सुनिश्चित करने वाले मूल तत्व, निष्ठा : अर्थ, सरकारी सेवाओं में भ्रष्टाचार, सरकारी सेवाओं में निष्ठा ह्रास के कारण, भ्रष्टाचार रोकने हेतु कानूनी ढांचा, सरकारी सेवाओं में निष्ठा सुधार हेतु सुझाव।

कर्मचारी संघ

कर्मचारी संघ की आवश्यकता, कर्मचारी संघों के उद्देश्य, कर्मचारी संधों का विकास, संघों तथा संस्थाओं के गठन का अधिकार, कर्मचारी संघों के प्रमुख कार्य, कर्मचारी संघों में भर्ती के अधिकार पर लगने वाली पाबन्दियां, मान्यता देने के नियम ।

संयुक्त परामर्शदायी मशीनरी

संयुक्त परामर्शदायी मशीनरी का उदभव एवं विकास, संयुक्त परामर्शदायी मशीनरी का उदय तथा अनिवार्य मध्यस्थता योजना, संयुक्त परामर्शदायी मशीनरी योजना की मुख्य विशेषताएं, परिषदों के कार्य, मध्यस्था मंडल।

सार्वजनिक सेवकों (कर्मचारियों) के अधिकार

भारतीय संविधान द्वारा प्रत्याभूत नागरिकों के मूलाधिकार, मूलाधिकार तथा अन्य अधिकारों का वर्गीकरण, निजी/व्यक्तिगत अधिकार, नागरिक अधिकार, विचार अभिव्यक्ति तथा भाषण देने की स्वतंत्रता, राजनीतिक अधिकार, श्रमिक संघ बनाने का अधिकार, (सर्विस) सेवा संबंधी अधिकार,।

अभिप्रेरण एवं मनोबल

अभिप्रेरण का अर्थ, अभिप्रेरण के उद्देश्य, अभिप्रेरण के प्रकार, कार्यकुशलता वृद्धि के अभिप्रेरक, मनोबल का अर्थ, मनोबल के प्रकार, मनोबल को प्रभावित करने वाले कारक, मनोबल का मूल्यांकन, मनोबल बढ़ाने के उपाय।

UGPA-05

वित्तीय प्रशासन

वित्तीय प्रशासन की प्रकृति तथा कार्यक्षेत्र

वित्तीय प्रशासन : अर्थ, वित्तीय प्रशासन– महत्व, वित्तीय प्रशासन की प्रकृति, वित्तीय प्रशासन का कार्यक्षेत्र, वित्तीय प्रशासन का अवयव।

वित्तीय प्रशासन के उद्देश्य और सिद्धान्त

वित्तीय प्रशासन : उद्देश्य, वित्तीय प्रशासन के सिद्धान्त, भारत का वित्तीय प्रशासन, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, नये उभरते रूझान।

मिश्रित अर्थव्यवस्था

मिश्रित अर्थव्यवस्था– अवधारणा तथा प्रमुख लक्षण, भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति, भारत में निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र, मिश्रित अर्थव्यवस्था – आधुनिक रूझान तथा मूल्यांकन।

केन्द्र राज्य वित्तीय सम्बन्ध – ।

संघवाद–अर्थ, संघवाद के मूल लक्षण, राज्यकोषीय संघवाद के सिद्धान्त, भारत में राजकोषीय संघवाद की उत्पत्ति।

केन्द्र राज्य वित्तीय सम्बन्ध–।।

संविधान के तहत कायों तथा स्रोतों का विभाजन, वित्त आयोग, योजना आयोग, केन्द्र राज्य वित्तीय सम्बन्ध : एक आलोचनात्मक मूल्यांकन।

राजकोषीय नीति, समता और सामाजिक न्याय

राजकोषीय नीति –अर्थ, राजकोषीय नीति के उद्देश्य, राजकोषीय नीति का क्रियान्वयन – कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे, राजकोषीय नीति–समता एवं सामाजिक न्याय।

सरकारी बजट प्रक्रिया : सिद्धान्त और कार्य

बजट–अर्थ, बजट की विशिष्टताएं, बजट के कार्य, बजट का वर्गीकरण, बजट–एक नजर।

भारतीय बजट व्यवस्था

भारत में बजट व्यवस्था का उद्भव और विकासक्रम, बजट के सिद्धान्त, वित्तीय वर्ष, बजट प्रक्रिया, बजट चक्र।

सरकारी व्यय का वर्गीकरण

सरकारी व्यय का वर्गीकरण, राजस्व एवं पूंजी व्यय, विकासात्मक तथा गैर विकासात्मक व्यय, योजना एवं गैर योजना व्यय, व्यय के वर्गीकरण की प्रणाली का मूल्यांकन।

सार्वजनिक व्यय : सिद्धान्त एवं विकास

सार्वजनिक व्यय के निर्धारक, सार्वजनिक व्यय का प्रभाव, भारत में सार्वजनिक व्यय की वृद्धि।

निष्पादन बजट प्रणाली

निष्पादन बजट प्रणाली, अवधारणा तथा उद्देश्य, निष्पादन बजट प्रणाली के चरण, भारत में निष्पादन बजट प्रणाली, निष्पादन बजट प्रणाली एक आलोचनात्मक मूल्यांकन।

शून्य आधारित बजट प्रणाली

शून्य आधारित बजट प्रणाली की अवधारणा तथा अभिप्राय, शून्य आधारित बजट प्रणाली तथा परंपरागत बजट प्रणाली :एक तुलनात्मक अध्ययन, शून्य आधारित बजट प्रणाली की उत्पत्ति, शून्य आधारित बजट प्रणाली के चरण/तत्व, भारत में शून्य आधारित बजट प्रणाली का प्रवेश, शून्य आधारित बजट प्रणाली का कार्यान्वयन–लाभ तथा समस्याएं।

राजस्व के स्रोत :कर एवं करों के अतिरिक्त आय

कर राजस्व–परिकल्पना एवं वर्गीकरण, प्रत्यक्ष कर, अप्रत्यक्ष कर, कर–अतिरिक्त राजस्व, आय का राज्यों के साथ बटवारा, गत वर्षों में साधन संगठन।

घाटे का वित्तीयन

घाटे का वित्तीयन–संकल्पना और अर्थ, घाटा वित्तीयन की आर्थिक विकास के वित्तीयन में सहायक के रूप में भूमिका, घाटे का वित्तीयन तथा स्फीति, धाटे का वित्तीयन तथा भारत में मूल्य–व्यवहार, घाटे के वित्तीयन से लाभ, घाटे के वित्तीयन की सीमाएं, घाटे के वित्तीयन को नियंत्रित करने वाले उपाय।

सार्वजनिक ऋण प्रबन्धन एवं भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका

वित्तीय मूल्यांकन

लोक निवेश के उद्देश्य एवं महत्व, लोक निवेश के प्रकार एवं निर्धारक तत्व, लोक निवेश निर्णय निर्माण की प्रक्रिया, परियोजना मूल्यांकन की प्रकृति, वित्तीय मूल्यांकन की तकनीकें, कुल वर्तमान मूल्य, आन्तरिक प्रतिफल की दर, लागत लाभ अनुपात।

आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यांकन

गैर वित्तीय तर्क विचार, आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यांकन की आवश्यकता, व्यावसायिक लाभदेयता की सीमाएं, राष्ट्रीय आर्थिक लाभदेयता, लक्ष्य, उद्देश्य, लाभ एवं लागत, सकल राष्ट्रीय लाभदेयता, सामाजिक लागत लाभ विश्लेषण, प्रणालियां, लागत एवं लाभ की माप, छाया कीमतें, सामाजिक भार, सामाजिक ब्याज दर, निर्णय मापदण्ड एवं सामाजिक लागत लाभ एवं विश्लेषण तुलन पत्र।

विधायी नियंत्रण

विधायी नियंत्रण की संकल्पना, विधायी नियंत्रण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, संवैधानिक उपबंध, 1950, कराधान पर नियंत्रण, लोक व्यय पर नियंत्रण–एक मूल्यांकन।

वित्तीय समितियों की व्यवस्था

समितियों की आवश्यकता, लोक लेखा समिति, आकलन समिति, सरकारी उपक्रम समिति, समितियों की कार्य प्रणाली–एक मूल्यांकन।

कार्यकारी नियंत्रण

व्यय पर कार्यकारी नियंत्रण का विकासक्रम, वित्त मंत्रालय की भूमिका, वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन।

भारत में लेखा शास्त्र की प्रणाली

लेखा शास्त्र : परिभाषा एवं महत्व, शासकीय लेखाशास्त्र के सिद्धान्त एवं विधियॉ, लेखा का अंकेक्षण से पृथक्करण, लेखा का विभागीकरण, लेखा शास्त्र की संशोधित संरचना, शासन में प्रबंध लेखा।

भारत में लेखा परीक्षण की प्रणाली

लेखा परीक्षण – परिभाषा एवं महत्व, भारत में लेखा परीक्षण का

उत्कर्ष, सांविधानिक एवं आंतरिक लेखा परीक्षण, लेखा परीक्षण की किस्में, लेखा परीक्षण की निरपेक्षता, लेखा परीक्षण के परिणाम– परीक्षण रिपोर्टें तथा प्रशासन द्वारा उन पर कार्य।

लेखा नियन्त्रक तथा महालेखा परीक्षक की भूमिका

लेखा नियन्त्रक तथा महालेखा परीक्षक की उत्पत्ति एवं उसकी संवैधानिक स्थिति, लेखाओं एवं लेखा परीक्षण से सम्बन्धित लेखा नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के कर्तव्य तथा शक्तियॉं, लेखा नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक के अन्य कर्तव्य, लेखा नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक की भूमिका : एक मूल्यांकन।

सार्वजनिक उपक्रमों का वित्तीय प्रशासन

सार्वजनिक उपक्रमों में वित्तीय प्रशासन का अर्थ एवं महत्व, सार्वजनिक उपक्रमों में वित्तीय प्रशासन के कार्य, सार्वजनिक उपक्रमों के लिए वित्तीय उद्देश्य, सार्वजनिक उपक्रमों के वित्तीय संगठन, सार्वजनिक उपक्रमों में निवेश प्रबंध, सार्वजनिक उपक्रम वित्त के स्रोत, सार्वजनिक उपक्रमों का वित्तीय निष्पादन।

सार्वजनिक उपक्रमों की वित्तीय स्वायत्तता एवं जवाबदेही

सार्वजनिक उपक्रमों में वित्तीय स्वायत्तता एवं जवाबदेही की अवधारणा, सार्वजनिक उपक्रमों में वित्तीय स्वायत्तता एवं जवाबदेही के स्तर, सार्वजनिक उपक्रमों में वित्तीय स्वायत्तता एवं जवाबदेही सुसनिश्चित करने की प्रणालियां, सार्वजनिक उपक्रमों की वित्तीय स्वायत्तता एवं जवाबदेही की स्थिति, सार्वजनिक उपक्रमों में वित्तीय स्वायत्तता एवं जवाबदेही से संबंधित समस्याएं, सार्वजनिक उपक्रमों में बेहतर स्वायत्तता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए सुझाव, सार्वजनिक उपक्रमों की वित्तीय स्वायत्तता एवं जवाबदेही : वर्तमान प्रवृत्तियां।

शहरी शासन का वित्तीय प्रशासन

शहरी स्थानीय वित्त की पारिस्थितिकी, शहरी स्थानीय वित्त के सिद्धान्त, नगर पालिका : राजस्व के स्रोत, नगर पालिका : व्यय का प्रारूप, शहरी उत्तरी प्रबन्ध, राज्य का नियंत्रण और पर्यवेक्षण, नगरपालिका की सेवाओं और संसाधनों में अंतराल।

ग्रामीण शासन का वित्तीय प्रशासन

ग्रामीण विकास की परिकल्पना, ग्रामीण स्थानीय वित्त के नियम, ग्रामीण शासनः राजस्व के स्रोत, ग्रामीण शासन : व्यय का स्वरूप, ग्रामीण वित्तीय व्यवस्था, राज्य नियंत्रण एवं पयवेक्षण, ग्रामीण जनसेवाओं और संसाधनों के बीच अंतराल।

UGPA-06
लोक नीति

लोक नीति : अर्थ और प्रकृति

राजनीति एवं लोक नीति के बीच संबंध–लोक नीति का अर्थ, नीति एवं उद्देश्य, नीतियां एवं निर्णय, लोक नीति निर्माण की विशेषताएं, लोक नीति के विभिन्न प्रकार, लोक नीति की प्रणाली के विभिन्न चरण, लोक नीति का महत्व।

नीति चक्र : नीति निर्माण की बाधाएँ

नीति निर्धारण, नीति क्रियान्वयन, नीति शिक्षा, नीति मूल्यांकन, नीति निर्धारण में आने वाले व्यवधानः एक प्रभावी नीति प्रक्रिया का आवश्यकता।

लोक नीति – निर्माण का माहौल

राज्य की प्रकृति, शासन प्रणाली की प्रकृति, जनतांत्रिक व्यवस्था, एकदलीय व्यवस्था, विकासशील देशों में नीति निर्माण, विकासशील देशों में नीति निर्धारण, राज्य के तंत्रों की प्रकृति, भारत में लोकनीति निर्धारण का प्रसंगाश्रित विन्यास, नीतियों को रेखांकित करने वाले मूल उद्देश्य, सरकारी तथा गैर सरकारी प्राधिकरणों की भूमिका, नीति निर्धारण में संस्कृति, सदाचार एवं मूल्यों की भूमिका।

लोक–नीति के अध्ययन का महत्व : आधुनिक परिदृश्य

लोक नीति प्रक्रिया में राज्य की भूमिका, भारत में लोक नीति का अनुभव, व्यवस्थित लोक नीति की आवश्यकता।

नीति–विज्ञान की नयी विधाएँ

नीति विज्ञान का अर्थ तथा महत्व, नीति विश्लेषण, स्थूल एवं सूक्ष्म नीतियॉं, नीति विज्ञान के दृष्टिकोण, ईस्टन, लासवैल तथा ड्रार के विचार।

अंतर्सरकारी संबंध

अंतर्सकारी संबंध : अर्थ एवं महत्व, भारत में नीति निर्माण : संरचना एवं प्रक्रिया, विभिन्न स्तरों के बीच अन्योन्य क्रिया।

राजनैतिक कार्यपालिका की भूमिका

राजनैतिक कार्यपालिका शब्द का अर्थ, नीति निर्माण में राजनैतिक कार्यपालिका की भूमिका, नीतिगत मुद्दों की पहचान करना, नीतिगत एजेण्डा की पहचान करना, नीतिगत प्रस्तावों की पहचान करना : कुछ तकनीक।

अधिकारी तंत्र की भूमिका

अधिकारी तंत्र का अर्थ, अधिकारी तंत्र की बदलती हुई प्रकृति, नीति निर्माण में अधिकारी तंत्र की भूमिका, हस्तान्तरित विधान तथा अधिकारी तंत्र, अधिकारी तंत्र की बढ़ती हुई महत्ता।

विधानमंडल की भूमिका

भारतीय विधानमंडल, विधानमंडलीय प्रक्रिया, संसदीय समितियों की भूमिका, विधानमंडल की बदलती भूमिका।

न्यायपालिका की भूमिका

भारत में न्याय प्रणाली का स्वरूप, न्याय पालिका के कार्य, न्यायपालिका का नीति निर्माण पर प्रभाव,नीति निर्माण में न्यायपालिका का महत्व, न्यायिक समीक्षा।

विभिन्न अंगों के बीच अन्योन्य क्रिया

राजनैतिक और स्थाई कार्यपालिका, संसद तथा स्थाई कार्यपालिका, संसद तथा राजनैतिक कार्यपालिका, संसद तथा न्यायपालिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका।

भारत में नीति निर्माण प्रक्रियाः बंधुआ मजदूरी प्रथा (उन्मूलन) अधिनियम 1975 का विषय परीक्षण–।

भारत में बंधुआ मजदूरी प्रथा, बंधुआ मजदूरी प्रथा का उन्मूलन करने के प्रयास–स्वतंत्रता पूर्व काल, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के प्रयास : प्रमख कदम, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के आयुक्त की रिपोर्ट 1951–74।

भारत में नीति निर्माण प्रक्रिया : बंधुआ मजदूरी प्रथा (उन्मूलन) अधिनियम 1976 का विषय–परीक्षण–।।

भारत में बंधुआ मजदूरी प्रथा की पृष्ठभूमि में नीति निर्माण प्रक्रिया,

संसद तथा नीति निर्माण, बंधुआ मजदूरी प्रथा अधिनियम 1976 के प्रमुख लक्षण, बंधुआ मजदूरी प्रथा अधिनियम 1976 पर सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय।

हित समूह एवं नीति निर्माण

हित समूह एवं लोक नीति, हित समूह एवं नीति निर्माण, हित समूह एवं राज्य की प्रकृति।

राजनीतिक दल एवं नीति निर्माण

राजनीतिक दल : अर्थ एवं महत्व, भारत में राजनीतिक दल, राजनीतिक दल एवं नीति निर्माण।

जनसंचार माध्यम

जनसंचार माध्यम तथा नियोजित परिवर्तन, नये विचारों एवं व्यवहारों का प्रसारण, समाज में परिवर्तन लाना, नीतियों को प्रभावित करने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका, सूचनार्थ भूमिका, दिशा निर्धारण भूमिका, परामर्शदायी भूमिका, जनसंचार माध्यम तथा लोकमत, लोगों में जनचेंतना बढ़ाना, लोकमत की लामबन्दी, जनसंचार माध्यम के लिए एक उपयुक्त नीति बनाने की आवश्यकता।

सामाजिक आन्दोलन

सामाजिक आन्दोलन : अर्थ, उत्पत्ति, सिद्धान्त, तथा सामाजिक लामबंदी, सामाजिक आन्दोलन तथा लोकनीति, विशिष्ट उदाहरण, खेतिहर श्रमिक तथा किसान आन्दोलन, किसान आन्दोलन, धनी कृषक आन्दोलन, इन आन्दोलनोंपर सरकारी नीतियों पर प्रभाव, जन निकायों की प्रतिक्रिया–निग्रही तथा प्रतिसंवेदी।

अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियाँ

नीति निर्माण तथा अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियां, संयुक्त राष्ट्र की नीतियों का सदस्य – राष्ट्रों द्वारा नीति निर्माण पर प्रभाव, संयुक्त राष्ट्र विकास दशक, अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों की भूमिका– अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संगठन, संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, विज्ञान तथा सांस्कृतिक संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम, अन्तर्राष्ट्रीय वित्त संस्थाएं एवं बहुराष्ट्रीय निगम। अभिनव प्रवृत्तियां।

नीति निष्पादन में सरकारी एजेंसियों की भूमिका–।

नीति निष्पादन : अर्थ एवं परिप्रेक्ष्य, नीति निष्पादन में विधायिका की भूमिका, नीति निष्पादन में न्यायपालिका की भूमिका, नीति निष्पादन में विधायिका एवं कार्यपालिका के मध्य संबंध ।

नीति निष्पादन में सरकारी एजेन्सियों की भूमिका–।।

नीति निष्पादन, नीति निष्पादन में राजनीतिक कार्यपालिका की भूमिका, नीति निष्पादन में स्थायी कार्यपालिका की भूमिका, नीति निष्पादन में राजनीतिक तथा स्थायी कार्यपालिका के बीच संबंध।

नीति निष्पादन में गैर–सरकारी एजेंसियों की भूमिका

गैर–सरकारी / स्वैच्छिक एजेन्सियों का अर्थ, स्वैच्छिक एजेन्सियां, दबाव समूह, नागरिक, गैर सरकारी एजेन्सियों की वृद्धि, निष्पादन में गैर सरकारी एजेंसियों की भूमिका, स्वैच्छिक संगठनों एवं गैर सरकारी संगठनों की भूमिका, दबाव समूहों की भूमिका, नागरिकों की भूमिका, सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की बीच अंतर्क्रिया, गैर सरकारी एजेन्सियों के काम संबंधी मुद्दे।

नीति निष्पादन की समस्याएं

नीति निष्पादन की समस्याएं, नीति विवरण, सहायक सेवाएं, निष्पादकों पर दबाव, निष्पादकों का झुकाव, प्रभावी नीति निष्पादन पद्धति।

भूमि सुधार

स्वातंत्र्योत्तर कृषि नीति : प्रारम्भिक प्रयास, भूमि सुधार, प्रथम चरण, द्वितीय चरण, भूमि सुधारों का क्रियान्वयन : कुछ समस्याएं, भूमि रिकार्ड, समय सीमा, प्रक्रियात्मक समस्याएं, राजनैतिक संस्कृति, भूमि सुधारों का प्रभाव, निष्कर्ष।

गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम

भारत में गरीबी : अर्थ एवं कारण, पंचवर्षीय योजनाओं में गरीबी का उन्मूलन प्रमुख गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम, समस्याएं एवं भावी रणनीति।

औद्योगिक नीति

औद्योगिक प्रगति की रणनीति : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, स्वतंत्रता पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति, औद्योगिक नीति की उत्पत्ति, भारत में

औद्योगिक प्रगति की आवश्यकता, औद्योगिक प्रगति : रणनीतियॉ तथा औद्योगिक नीति प्रस्ताव, औद्योगिक प्रगति रणनीतियॉ, औद्योगिक नीति प्रस्ताव, औद्योगिक प्रगति की रणनीति : एक आलोचनात्मक समीक्षा, उपलब्धियां एवं विफलताएं, औद्योगिक नीति की आलोचनात्मक समीक्षा, वर्तमान समस्याएं।

पंचायती राज (ग्रामीण विकास)

भारत में पंचायती राज व्यवस्था की उत्पत्ति एवं प्रगति, पंचायती राज संस्थाओं की संरचना एवं कार्य, पंचायती राज और सरकारी नीति, पंचायती राज संस्थाओं के संचालन में समस्याएं, पंचायती राज संस्थाओं को पुनः सक्रिय बनाने के प्रयास, हाल के धटनाक्रम।

UGTS-01
पर्यटन में आधार पाठ्यक्रम

पर्यटन परिघटना

पर्यटन को समझना -1: – पर्यटन परिघटना, पर्यटन क्या है, अवधारणाएँ, पर्यटन की परिभाषा, पर्यटन उत्पाद और सेवाएं, भ्रमण, पर्यटन स्थल, पर्यटन, स्वरूप और प्रकार, भविष्यगत प्रवृत्तियाँ।

पर्यटन को समझना-2 – बदलती प्रवृत्ति, पर्यटन का उद्देश्य, विशेष रूचि, वैकल्पिक पर्यटन, अन्य निर्धारक (मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, समय)।

ऐतिहासिक उद्भव और विकास : – पर्यटन के इतिहास की आवश्यकता, आंकड़ों के स्त्रोत (आंकड़ों के स्त्रोत, काल निर्धारण और अवधारणाएं), प्राचीन काल, आरंभिक साम्राज्य, रेशम मार्ग, तीर्थ यात्रा, शानदार यात्रा, आधुनिक पर्यटन मं संक्रमण, भारत में आधुनिक पर्यटन।

पर्यटन उद्योग

पर्यटन व्यवस्था – अवधारणाएँ, मांग निर्धारित व्यवस्था, आपूर्ति संबंधी समस्याएँ, पर्यटन प्रभाव।

पर्यटन उद्योग के अवयव और पर्यटन संगठन : – पर्यटन उद्योग, अवयव, पर्यटन संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, भारत के सरकारी संगठन, भारत के निजी क्षेत्र संगठन।

पर्यटन नियमन – बाहरी अंदरूनी यात्रा नियमन, आर्थिक नियमन, स्वास्थ्य नियमन, कानून और व्यवस्था नियमन, आवासीय और भोजन संबंधी नियमन, पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण ।

सांख्यिकी और माप – सांख्यिकी, परिभाषा और उपयोग, सांख्यिकी माप, पर्यटन सांख्यिकी की आवश्यकता, माप की समस्याएं, माप की विधियाँ, विश्व पर्यटक आगमन और आमदनी, भारत में पर्यटन सांख्यिकी, विदेशी मुद्रा आय का प्राक्कलन।

परिवहन साधन – परिवहन साधनों का विकास, सड़क परिवहन, रेल परिवहन, जल परिवहन, वायु परिवहन, पर्यटन में परिवहन की भूमिका, राष्ट्रीय परिवहन नीति की ओर।

पर्यटक आवास व्यवस्था – विभिन्न प्रकार की आवास व्यवस्था, कुछ महत्वपूर्ण आयाम (विपणन, अन्य आयामः संचालन संबंधी), पर्यटक आवास का उपयोग करने वाले पर्यटक, सूचना प्राप्ति, कैंप आवास का एक प्रस्ताव।

पर्यटन की अनौपचारिक सेवाएँ – अनौपचारिक क्षेत्र के आयाम, पटरियों पर बैठे स्मारिका विक्रेता, स्ट्रीट गाइडः कार्य, प्रभाव तथा नियंत्रित करने का तरीका।

सहायक सेवाएँ : विभिन्न प्रकार और उनकी सेवाएँ – आम सेवाएँ (स्थानीय परिवहन, खान-पान स्पाट और बार, मनोरंजन और मनोविनोद, टूरिस्ट पुलिस, संचार व्यवस्था, किताब की दुकान और पुस्तकालय, फोटोग्राफी), पर्यटक स्थल संबंधी विशिष्ट सेवाएं, विविध आवश्यकताओं की पूर्ति, रोजगार का तर्क ।

दुकानें, इम्पोरियम और मेला – ग्रामीण और लघु शहर हाट, मौसमी और उत्सव मेला, इम्पोरियम, निजी दुकाने, बुटीक और सहकारी विक्रय केन्द्र, स्थानीय स्तर पर विपणन संगठन, कारीगर और शिल्पी, दिल्ली हाट।

पर्यटन सेवा और परिसंचालन-2

ट्रैवेल एजेंसी – ट्रैवेल एंजेसी, संचालन (टिकट उपलबध कराना, आरक्षण और रद्द कराना, विशेष सेवाएँ, यात्रा को सुगम बनाना, अतिरिक्त उत्तरदायित्व।

टूर आपरेटर – टूर आपरेटर और उसके कार्य, मुख्य साझीदार (होटल / आवासीय उद्योग, परिवहन उद्योग), बनी बनाई यात्रा योजना, यात्रा की लागत, बिकने वाला माल, पर्यटक परिवहन संचालन।

गाइड और यात्रा मार्ग निर्देशक – गाइडों और यात्रा मार्ग निर्देशकों की परिभाषा, गाइड की भूमिका, गाइडिंग एक तकनीक, यात्रा का मार्गनिर्देशन।

पर्यटन सूचना : विभिन्न स्त्रोत – सूचना का महत्व, सूचना के स्त्रोतः सरकारी एजेंसियाँ, सूचना के स्त्रोतः निजी एजेंसियाँ, सूचना के स्त्रोतः संचार माध्यम।

भूगोल और पर्यटन

भारत की जैविक विविधता : प्राकृतिक दृश्य (लैंडस्केप), पर्यावरण और परिस्थितिकी – भारत का भूगोल, भारत की पारिस्थितिकी, पर्यावरण संबंधी खतरे।

पर्यटक मौसम और स्थल – मौसम और जलवायु, पर्यटन में मौसमीयता, पर्व का मौसम, पर्यटक मौसम का आकलन, स्थल प्रबंधन, विपणन और रोजगार, स्थल।

नक्शा और चार्ट – नक्शा और चार्ट- प्रासंगिकता, नक्शे का इतिहास, नक्शे के प्रकार, नक्शे की भाषा और शब्दावली, नक्शा कैसे पढ़ें चार्ट के प्रकार, कुछ उपयोगी नक्शे और चार्ट।

पर्यटन विपणन और संचार

पर्यटन विपणन – प्रासंगिकता उत्पादन, स्वरूप, बाजार अनुसंधान। विपण्न क्या है, विपणन तत्व, बाजार का विभाजन और लक्ष्य, पर्यटन में उत्पाद, गुण और रूप, उत्पाद डिजाइन, उत्पाद का प्रस्तुतीकरण, बाजार अनुसंधान।

पर्यटन विपणन-2 : – प्रोत्साहन आयोजन, विज्ञापन प्रसार, विक्रय। प्रचारात्मक आयोजन, विज्ञापन, प्रचार, जन संपर्क, व्यक्तिगत बिक्री, व्यापार।

संचार माध्यमों की भूमिका – संचार माध्यमः अर्थ और प्रकार, संचार माध्यम की शब्दावली, संचार माध्यमों की विभिन्नता, संचार माध्यम और अनुसंधान, संचार माध्यम की छवि, संचार माध्यमों की लागत, संचार माध्यम नियोजन।

पर्यटन के लिए लेखन – यात्रा लेखन : कल और आज, पूर्व अपेक्षा : उपकरण और गुण तथा उद्देश्य, पर्यटन के लिए लेखन कोटियाँ।

व्यक्तिगत विकास और संवाद क्षमता – व्यक्तिगत विकास : बाह्यरूप और व्यवहार, स्वच्छता, आदतें और चुस्ती, संवाद क्षमता, सुनना और बोलना, आवाज, टेलीविजन पर बातचीत, मूक संवाद।

पर्यटन : सांस्कृतिक विरासत

इतिहास का उपयोग – पर्यटन उत्पादन के रूप में इतिहास, मिथक, किंवदंतियां और इतिहास, पर्यटन में इतिहास का उपयोग ।

स्मारक और संग्रहालय – प्राचीन काल (हड़प्पा स्थल, स्तूप, मंदिर), स्मारक काल, नए रूप, शैलीगत विकास, सार्वजनिक भवन), संग्रहालय (भारतीय संग्रहालयों का इतिहास, संग्रहालयों के प्रकार)।

जीवित संस्कृति और प्रदर्शनात्मक कलाएँ – जीवित संस्कृति क्या है। (भारत का सांस्कृतिक जीवन, हस्त शिल्प, वस्त्र निर्माण), आनुष्ठानिक कलाएं, प्रदशर्नात्मक कलाएं, (परिभाषा, नृत्य, संगीत, रंगमंच)।

भारत के धर्म – भारत की धार्मिक, विविधता, हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म, सिक्ख धर्म।

पर्यटन : नियोजन और नीति

पर्यटन नीति और नियोजन – पर्यटन नीति और नियोजन की आवश्यकता, 1982ई. में पर्यटन नीति की शुरूआत, पर्यटन और योजना आयोग (पर्यटन राष्ट्रीय समिति 1988 की रिपोर्ट, आठवीं पंचवर्षीय योजना, सन् 1992 -97 ई.), राष्ट्रीय कार्य योजना 1992)।

अधिसंरचनात्मक विकास – महत्वपूर्ण मुद्दे, अधिसंरचना, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर, कृषि संरचना का प्रबंधन, अवरोध और कमियाँ, वैकल्पिक दृष्टिकोण।

स्थानीय निकाय, अधिकारी और पर्यटन – भारत में स्थानीय निकाय, स्थानीय निकाय और पर्यटन, खराब प्रदर्शन के कारण, सुधार के उपाय।

विकास, निर्भरता और मनीला उद्घोषणा – विकास निर्भरता विवाद (अनिवार्य तत्त्व, एक आलोचना), तीसरी दुनिया में पर्यटन (आरंभिक प्रयास, मनीला सम्मेलन, एक विश्वव्यापी संघ।

पर्यटन के प्रभाव

आर्थिक प्रभाव – रोजगार, आय, विदेशी मुद्रा अर्जन।

सामाजिक, पर्यावरणात्मक और राजनैतिक प्रभाव – सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव, एशिया में पर्यटन, पर्यावरणात्मक प्रभाव (वन्य जीवन, वहन क्षमता), राजनैतिक प्रभाव।

पर्यटन के खतरे और बाधाएँ – खतरों और अवरोधों की समझ, जन असंतोष, अपराध और दबाव, लाल फीताशाही और नौकरशाही प्रशिक्षित मानव शक्ति और जागरूकता, घरेलू पर्यटकों की अवहेलना, पर्यटन आगमन और प्रभाव।

UGTS-02

पर्यटन विकास : उत्पाद, संचालन और स्थिति अध्ययन

पर्यटकों और मेजबानों को समझना

विदेशी पर्यटक : – पर्यटकों की रूपरेखा, विदेशी पर्यटकों की रूपरेखा, 1988-89 के सर्वेक्षण की मुख्य बातें, आदतें, विशेष रूचियाँ, आदि,अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक आवागमन।

घरेलू पर्यटक : – घरेलू पर्यटकों की रूपरेखा, राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर।

मेहमान मेजबान संबंध : – कुछ मूलभूत पहलू, मेहमान मेजबान पारस्परिक संबंध, विभिन्न स्थितियाँ, संख्याओं की भूमिका और पर्यटकों की श्रेणियां, प्रासंगिकता।

समाजशास्त्र, मानवशास्त्र और पर्यटन : – पर्यटन का समाजशास्त्र, पद्वतियाँ, पर्यटन का मानवशास्त्र,

एक शहर की खोज : गाइड और नगर भ्रमण

: – गाइड और नगर भ्रमण स्थानीय सूचना के स्रोत, भ्रमण की योजना, भ्रमण की तैयारी, भ्रमण की ओर।

एक स्मारक का वर्णन – ताजमहल : – ताजमहल संबंधी तथ्य, योजना की शुरूआत और निर्माण, इतिहास में ताजमहल , दंतकथाएं, ताजमहल का संरक्षण।

पर्वतीय गाइड - शेरपा : – गाइड और पथ प्रदर्शक, शेरपा- लोग, पथ प्रदर्शक बनने की प्रक्रिया, गाइड/पथ प्रदर्शक और पर्यटकों की अपेक्षाएं, गाइड/पथ प्रदर्शक और पर्यटकों की अपेक्षाएं, गाइड/पथ प्रदर्शक के लिए अपेक्षित योग्यता, अन्य पक्ष।

एक संग्रहालय की सैर : – संग्रहालय को समझना, एक संग्रहालय की सैर, पुरातत्व प्रभाग, कला प्रभाग, चित्रकला प्रभाग, प्राकृतिक इतिहास प्रभाग, शैक्षिक गतिविधियाँ।

राष्ट्रीय उद्यान का भ्रमण- एक गाइउ का नजरिया : – एक वन्य जीव पर्यटक की पहचान, वन्य जीव पर्यटन की समस्याएँ, प्रकृति की साहचर्य, आर्थिक लाभ – एक एजेंडा।

पर्यटक स्थल – उत्पाद और संचालन- 1

नृत्य और संगीत- खजुराहो उत्सव : – नृत्य और संगीत- पर्यटन उत्पाद का विपणन

(मार्केटिंग), खजुराहो- स्थानीय विशेषताएं और प्रमुख आकर्षण, खजुराहो उत्सव- आकर्षण बढ़ाने का एक सहायक उपादान, उत्सव की उपलब्धियाँ और असफलताएं।

व्यापारिक शहर – मुम्बई : – स्थल, मौसम, भूगोल, एक संक्षिप्त परिचय, आवागमन और स्थानीय परिवहन, मुम्बई का व्यापारिक ढांचा, मुम्बई के दर्शनीय स्थल, आगंतुकों के लिए आवास।

भोजन, रीति रिवाज, उत्सव और मेले : – एक नजर, भोजन , रीति रिवाज, पर्व, त्योहार और मेले।

पर्यटन स्थल : उत्पाद और संचालन-2

रोमांच और खेलकूद : – रोमांच, खेल और पर्यटन, खेल और मनोरंजन, रोमांचक खेल, टूर आपरेटर्स का उत्तरदायित्व।

समुद्रतटीय तथा द्वीपीय आरामगाह : कोवलम व लक्षद्वीप – आरामगाहों की उत्पत्ति एवं विकास, समुद्रतटीय एवं द्वीपीय पर्यटन की परिकल्पना, कोवलम समुद्रतटीय आरामगाह, लक्षद्वीप- इतिहास, आकर्षण, अधिसंरचना, आवास एवं खानपान, मार्ग, सुविधाएं, पर्यटकों के लिए जरूरी बातें।

भारत के हिल स्टेशन : – पहाड़ी पर्यटन में आकर्षण के बिन्दु, पहाड़ी पर्यटन उद्योग के समन्वयात्मक प्रभाव, प्रतिनिधि हिल आरामगाहें, नयी हिल आरामगाहों की आवश्यकता।

वन्य जीवः जिम कार्बेट तथा गीर राष्ट्रीय उद्यान : – वन्य जीवन का अनुभव, संरक्षित वन्य जीव उद्यानों का जाल, प्रकृति के साथ संबंधों का पुनर्नवीनीकरण, वन्य जीव आकर्षण, राष्ट्रीय उद्यान।

पर्यटन स्थल : उत्पाद और संचालन -3

तीर्थ स्थल : – इतिहास में तीर्थ स्थल, तीर्थस्थल एवं पर्यटन, तीर्थस्थलः अध्ययन विषय (वैष्णोदेवी, कामाख्या, तिरूपति, अजमेर : मुईनुउद्दीन की दरगाह)।

उत्सव : – ऋतु उत्सव (नौका दौड़, आमों का उद्यान एवं फूल, चाय, पतंग उत्सव), सांस्कृतिक उत्सव (हाथी, राजस्थान का मरूस्थल, संगीत नृत्य उत्सव, धार्मिक मेले, बौद्ध मठों का शहर लद्दाख उत्सव), जनजातीय उत्सव, उत्सव मेले एवं पर्यटन।

नृजातीय पर्यटन : – नृजातीय पर्यटन की संकल्पना, सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव, मध्यस्थों की भूमिका, भारत में नृजातीय पर्यटन।

शिल्प और लोक कला : – शिल्प और लोक कला : पर्यटन के कारक (लुप्तप्राय शिल्प), गृह सज्जा के माध्यम के रूप में लोक कला, शिल्प अपने प्राकृतिक पर्यावरण में, शिल्प और लोक कलाः विस्तार और संरक्षण (क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, संग्रहालय), लोक उत्सव, और शिल्प मेले।

प्रोत्साहनमूलक कौशल : स्थिति अध्ययन - 1

भारत महोत्सव : विदेशों में सांस्कृतिक छवि निर्माण।

संरचना, योजना और संगठन, उद्देश्य और प्रासंगिकता, उपलब्धियां और सीमाएं।

इंडियाफेस्ट परिकल्पना, योजना, सर्वेक्षण, प्रोत्साहन और प्रचार, प्रस्तुत कार्यक्रम, समस्याएं, उपलब्धियाँ।

कलिंग –बाली यात्रा : – कलिंग बाली यात्रा (उद्देश्य, विस्तृत योजना, यात्रा), अन्य सांस्कृतिक गतिविधियाँ, प्रचार, मूल्यांकन।

पैलेस ऑन व्हील्स : – परियोजना की उत्पत्ति, परियोजना निर्माण, परियोजना प्रदर्शन, यात्रा कार्यक्रम, प्रोत्साहन, संगठनात्मक प्रारूप।

प्रोत्साहन मूलक कौशल – स्थिति अध्ययन-2

पाटा : यात्रा हाट का एक अध्ययन : – उदभव और संरचना, पाटा यात्रा हाट, पाटा विपणन सम्मेलन, भारतीय पर्यटन पर प्रभाव, अवलोकन।

विदेशों में विपणन : पर्यटन विभाग – भारत सरकार। आपरेशन ब्रिटेन, आपरेशन यूरोप, अन्य कार्यवाईयाँ (अमेरिका, पश्चिम एशिया)।

राज्य सरकार की पर्यटन प्रोत्साहन योजनाएँ (महाराष्ट्र का स्थिति अध्ययन) : – महाराष्ट्र एक पर्यटक स्थल (संक्षिप्त इतिहास, सांस्कृतिक विरासत ऐतिहासिक स्थल और स्मारक, प्राकृतिक सौन्दर्य कला और हस्तशिल्प), महाराष्ट्र में पर्यटन (वर्तमान स्थिति, नए विचार, वृहत योजनाएं), पर्यटन विकास की नीति (पर्यटन

का विकास, निवेश और प्रोत्साहन, पारिस्थितिकी का संरक्षण और सांस्कृतिक सुरक्षा, अन्य उपाय, नीति का कार्यान्वयन।

दूसरों से सीखिए

सीटा उदय और इतिहास, विकास अध्ययन, संगठनात्मक ढांचा, कर्मचारियों की नियुक्ति और प्रशिक्षण, संचालन विधि, विपणन रणनीति, सीटा और पर्यटन का विकास, सीटा और चुनौतियाँ ।

एयर इण्डिया

संगठन, संचालन क्षेत्र, मार्ग जाल, उड़ानों की समय तालिका और संचालन, पूंजी, वित्त और लाभ, पूंजी, वित्त और लाभ, पर्यटन प्रोत्साहन, एयर इण्डिया की पुनर्रचना,

राजमार्ग सेवायें : हरियाणा पर्यटन

राजमार्ग सेवाएं : एक सिंहावलोकन, हरियाणा से गुजरते राजमार्ग, राजमार्ग पर सेवाएं, विविध कार्य।

विरासत होटल

विरासत होटलों का इतिहास, विरासत होटल संगठन, योजना का मूल्यांकन,

UGTS-03
पर्यटन मे प्रबन्धन

उद्यमिता की समझ और प्रबंध

प्रबंध : अवधारणा एवं कार्य – प्रबंधन की अवधारणा, प्रबंधन को समझना, प्रबंधक भूमिका, कार्य और दायित्व (प्रबंधकीय भूमिकाएं, कार्य, उत्तरदायित्व, कार्य का विन्यास), प्रबंध के कार्य।

उद्यमिता : संकल्पना एवं कार्य – उद्यम संबंधी गुण, प्रक्रिया, अवसर की पहचान करना, बाजार का मूल्यांकन, संसाधन जुटाना, अन्य विचार।

पर्यटन के निगमित रूप : – सेवा, बाजार एवं उद्योग, एकल स्वामित्व (विशेषताएं, लाभ नुकसान), भागीदारी (लाभ-नुकसान) कंपनी (विशेषताएं, प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी, पक्लिक लिमिटेड कम्पनी, नामाधिकार), संगठनां के अन्य रूप।

पर्यटन में प्रबंध के मुद्दे : – पर्यटन सेवाएं, कुछ प्रबंधकीय मुद्दे (मानव संसाधन : प्रशिक्षण एवं विकास, गंतव्य नियोजन एवं प्रबंध, बदलती अपेक्षाएं एवं रूचियाँ, संबंध, उत्पाद संवर्धन, प्रौद्योगिकी की भूमिका, बाजार को समझना, सामाजिक उत्तरदायित्व, संकट प्रबंध। ,

संगठनात्मक सिद्धान्त को समझना

संगठन को समझना : – संगठन (क्लासिकल, नव क्लासिकल, व्यवस्थाबद्ध दृष्टि), संगठनात्मक ढांचा (संगठनात्मक सारणी, औपचारिक अनौपचारिक ढांचा), संगठन ढांचा के घटक, संगठन ढांचों का वर्गीकरण, संगठनात्मक संस्कृति।

नियोजन और निर्णय निर्माण : – नियोजन : परिभाषा और विशेषताएं, योजनाओं के प्रकार, नियोजन के कौशल, नियोजन के चरण, निर्णय निर्माण, निर्णय निर्माण के चरण।

व्यवस्थापन : – व्यवस्थापन, काम का बॅटवारा, विभागीकरण, नियंत्रण क्षेत्र, अधिकार निर्धारण, संयोजन।

निरीक्षण और नियंत्रण : – नियंत्रण : परिभाषा और आवश्यकता, निंयंत्रण के प्रकार,

नियंत्रण प्रक्रिया के चरण, प्रभावशाली नियंत्रण की तकनीक, नियंत्रण का परिणाम।

संगठनात्मक व्यवहार

छोटे समूह का व्यवहार : – समूहों का वर्गीकरण, छोटे समूह की विशेषताएं, छोटे समूहों का निर्माण, व्यवहार छोटे समूह में नेतृत्व, समूह में अन्तर संवाद।

अन्तर वैयक्तिक व्यवहार : – आत्म जागरूकता का विश्लेषण, अहं की स्थितियाँ, जीवन के प्रति दृष्टिकोण, टकराव से निपटने के तरीके।

अन्तर समूह व्यवहार : – समूहों की प्रकृति, अन्तर समूह व्यवहार को समझना, संयोजन-अन्तर समूह कार्यान्वयन की कुंजी (परस्पर निर्भरता , कार्य अनिश्चितता, समय और लक्ष्य निर्धारण), अन्तर समूह संबंधों का प्रबंधन, समूह कार्यान्वयन।

पर्यवेक्षकीय व्यवहार : – प्रथम पंक्ति प्रबंधन का महत्त्व, प्रभावशाली पर्यवेक्षक के गुण, पर्यवेक्षकों की समस्यायें।

प्रबन्धन कार्य

मानव संसाधन प्रबंधन : – प्रबंधन में मानव संसाधन प्रबंधन उद्योग में विविधता, मानव संसाधन नियोजन (प्रबंधन क्रिया, नियुक्ति एवं चयन, परिचय एवं प्रशिक्षण, प्रेरणा, मूल्यांकन प्रणालियां।

वित्तीय प्रबंधन – वित्तीय प्रबंधन-नियोजन, धन उगाही (कार्य पूंजी का प्रबंधन, नगदी प्रबंधन), लागत प्रबंधन, बजट निर्माण।

कार्यात्मक प्रबंधन : – क्रियात्मक प्रबंधन : परिभाषा और प्रासंगिकता, क्रियात्मक प्रणाली का निर्माण (निर्माण, क्षमता, प्रक्रिया चयन, सुविधा स्थल, भौतिक सुविधाओं का नियोजन, खरीद), क्रियात्मक नियोजन और नियंत्रण निर्णय।

विपणन प्रबंधन : – विपणन प्रबंधन की परिभाषा, बाजार की पहचान, विपणन मिश्र और रणनीति, विपणन संगठन अनुसंधान।

सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंधन : – प्रबंधकीय भूमिकाए, पर्यटन में सूचना की भूमिका, सूचना प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन में संचार।

वित्तीय संचालन का प्रबंधन

लाभ हानि लेखा को समझना : – लाभ हानि लेखा का अर्थ, आय का मापन, लाभ हानि लेखा तथा बैलेंस शीट में संबंध, महत्त्वपूर्ण शब्दावली, लाभ हानि लेखा तैयार करना।

बैलेंस शीट को समझना : – बैलेंस शीट, मूलभूत अवधारणा, बैलेंस शीट के रूप, बैलेंस शीट की संरचना तथा विश्लेषण।

लाभ संभाव्यता विश्लेषण : – मूल्य मात्रा लाभ विश्लेषण (स्थायी, परिवर्तनीय, अर्धपरिवर्तनीय लागत तथा लागत मात्रा लाभ विश्लेषण की मान्यताएं) न लाभ न हानि बिन्दु, न लाभ न हानि तालिका, लाभ मात्रा अनुपात, सुरक्षा की सीमा, किसी बहुउत्पाद फर्म के लिये मूल्य मात्रा लाभ विश्लेषण, न लाभ न हानि बिन्दु विश्लेषण की उपयोगिता।

प्रोजेक्ट बनाना तथा उसका आकलन : – प्रोजक्ट की योजना की खोज, प्रोजेक्ट योजना की परिभाषा, प्रोजेक्ट योजना का परीक्षण, प्रोजेक्ट तैयार करना तथा रिपोर्ट बनाना, तकनीकी, विपणनीय, वित्तीय संभाव्यता, अर्थशास्त्री उपयोगिता, मूल्य निर्धारक की तकनीक।

पर्यटन में प्रबन्धकीय व्यवहार - 1

पर्यटक संचालक (टूर आपरेटर्स) : – पर्यटन संचालक, कम्पनी स्थापित करना, उत्पादन ज्ञान एवं उसका प्रस्तुतीकरण, पर्यटन पैकेज का मूल्य, निर्धारण रसीदें तैयार करना, पर्यटकों /ग्राहकों की देख रेख, व्यावसायिक पत्र व्यवहार, दिशा निर्देश (पर्यटन गाइड, वाहन चालकों को पर्यटन के बाद प्राप्त जानकारियाँ), पर्यटकों / यात्रियों/ ग्राहकों को एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, होटल, से एकत्रित करना, छोड़ना तथा होटल में ले जाना।

ट्रैवेल एजेन्सियाँ : – ट्रैवेल एजेन्सी, प्रबंधकीय कार्य, ट्रैवेल एजेन्सी स्थापित करना, भाषा, शब्दावली तथा संक्षिप्त नाम, संचालन प्रबंधन, वित्तीय व्यवस्था, विपणन।

होटल : – कुछ मूलभूत मुद्दे, आयोजन/नियोजन, संगठन, दिशा निर्देश एवं नियंत्रण,

वित्तीय व्यवस्था, विपणन, स्वागत पटल, तथा आरक्षण, ग्राहकों की सेवाएँ आवभगत, खान पान, होटल तथा पर्यटन।

जनसंपर्क : – जनसम्पर्क की भूमिका एवं कार्य, पर्यटन तथा प्रचार में जन संपर्क, अन्य विभागों से अन्तर्संबंध, सूचनात्मक आवश्यकता, भारतीय पर्यटन में जनसम्पर्क के लिए चुनौतियां।

पर्यटन में प्रबन्धकीय कार्यकलाप-2

खान पान सेवा : खाान पान सेवा उद्योग की रूपरेखा, बाधाएं एवं भ्रान्तियां, सफलता के लिए आवश्यकताएं, व्यंजन सूची, खाद्य एवं पेय पदार्थ की कीमतों पर नियंत्रण खानपान में सफाई का महत्त्व, खान-पान संचालन में कम्प्यूटर का योगदान, विपणन।

पर्यटक परिवहन : – योजना, संगठन/संस्था, विपणन, पूर्वानुमान, परिवहन प्रबंधन में मुख्य समस्याएं, परिवहन एवं पर्यावरण, उपभोक्ता संरक्षण।

एयरलाइन्स : – योजना, संगठन,वित्तीय संरचना, चालन एवं समय सारणी निर्धारण, विपणन तथा विक्रय, सामयिक चुनौतियाँ।

एयरपोर्ट : – एयरपोर्ट का कार्य तथा प्रबंधन में आने वाली समस्याएं, समस्यामूलक क्षेत्र, वित्तीय उपलब्धियों में वृद्धि, प्रदर्शन के प्रति सजगता, अन्य प्रमुख मुद्दे।

अधिवेशन प्रोत्साहन एवं प्रबंधन

अधिवेशन उद्योग : – व्यवसायी यात्री, कुछ परिभाषाएं, अधिवेशन व्यवसाय, अधिवेशन उद्योग के ग्राहक, अधिवेशन संबंधी विपणन।

अधिवेशनों की कार्य योजना : – आयोजकों की कार्य योजना, ओजकों द्वारा वित्तीय व्यवस्था, पूर्तिकर्ताओं की योजना, व्यापार मेले तथा व्यवसायिक प्रदर्शनी।

अधिवेशनों का प्रबंधन एवं कार्यान्वयन : – संचालन समिति एवं सचिवालयी कार्य, विभिन्न समितियों द्वारा अधिवेशन का प्रबंधन/आयोजन, सम्मेलन के बाद के कार्य, अधिवेशन समाप्ति के बाद के कार्य ।

UGTS - 04
भारतीय संस्कृति : पर्यटन परिदृष्टि

भारतीय संस्कृति : एक परिचय

भारतीय संस्कृति और विरासत : ऐतिहासिक संदर्भ-1 – संस्कृति और विरासत : परिभाषा की समस्याएं, संस्कृति और इसके निर्धारत तत्व, ऐतिहासिक विकासक्रम (हड़प्पा युग, वैदिक सभ्यता, बौद्ध काल, गुप्त काल, पूर्व मध्य काल)।

भारतीय संस्कृति और विरासत : ऐतिहासिक संदर्भ-॥ – ऐतिहासिक विकास (उत्तर मध्य, आधुनिक समकालीन युग), विज्ञान और प्रौद्योगिकी का ऐतिहासिक विकास, पर्यावरण और संस्कृति, भारतीय सांस्कृतिक विरासत की विशेषताएं।

संस्कृति का संरक्षण : – पर्यटन की संस्कृति बनाम संस्कृति का पर्यटन, संस्कृति का संरक्षण, ऐतिहासिक विरासत, पुरातात्विक स्थलों और स्मारकों का संरक्षण, कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और रखरखाव, सामाजिक-आर्थिक विरासत का संरक्षण।

पर्यटन और संस्कृति : कुछ विचार : – कुछ अन्तर्राष्ट्रीय उदाहरणों का अध्ययन, (स्पेन, इंडोनेशिया, ग्रीस, मैक्सिको, निष्कर्ष), कुछ भारतीय उदाहरण।

सामाजिक संरचना

सामाजिक ऐतिहासिक परिदृश्य-1: – वैदिक काल में भारतीय समाज (पूर्व वैदिक उत्तर वैदिक काल), वैदिक युग के बाद का समाज, गुप्तकाल और उसके बाद का समाज, मध्यकाल।

सामाजिक ऐतिहासिक परिदृश्य-॥ : – भारत में समाज : एक ऐतिहासिक परिदृश्य (औपनिवेशिक, उत्तर औपनिवेशिक तथा समकालीन भारत), भारत में जाति और वर्ग, भारत में परिवर्तन और निरंतरता।

रीति रिवाज, अनुष्ठान और पंथ : – रीति रिवाज और अनुष्ठान (भूमिका, कार्य, प्रकार, जीवन चक्र से संबंधित तथा अन्य रीति रिवाज, पंथ, सम्प्रदाय, हिन्दू,मुसलमान, सिक्ख, बौद्ध, जैन, ईसाई)।

मेले और त्योहार : – भारत के त्योहार ओर मेलेः कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं, पर्यटन तथा मेले और त्योहार।

ललित कलाएँ

नृत्य : – नृत्य : सिद्धान्त और तकनीक, नृत्यः ऐतिहासिक विकास, भारतीय शास्त्रीय नृत्य (भरत नाट्यम, कत्थक, कत्थककलि)।

संगीत : – भारतीय संगीत- शैलीगत वर्गीकरण (मार्ग और देशी संगीत, उत्तर भारतीय तथा कर्नाटक शैलियाँ, संगीत के अनिवार्य तत्त्व (स्वर,ताल, राग), संगीत : उदभव और विकास (प्राचीन, मध्ययुगीन, आधुनिक)।

चित्रकला : – सौन्दर्यशास्त्र (परिभाषा, भारतीय और यूरोपीय सौन्दर्यानुभूति), भारतीय चित्रकला (सन्दर्भ, रस का सिद्धान्त, सामान्य, विशेषताएं), काल विभाजन (प्रागैतिहासिक, शास्त्रीय, मध्यकाल), आधुनिक चित्रकला (भारत में यूरोपीय कलाकार, आधुनिक भारतीय चित्रकला।) संरक्षण।

लोकप्रिय संस्कृति

भारतीय रंगमंच : – भारत में रंगमंच परम्परा (संस्कृत, लोक तथाआधुनिक रंगमंच), भारत में नाटक परम्परा (संस्कृत, संस्कृतोत्तर, आधुनिकन नाटक), आधुनिक भारतीय रंगमंच (पारसी, अभिजात्य, जनोन्मुखी रंगमंच), विभिन्न नाट्य शैलियां (पाश्चात्य, संस्कृत, लोक नाट्य तथा अन्य नाट्य शैलियाँ)।

भारतीय सिनेमा : – भारतीय सिनेमा का परिचय (मूक फिल्मों, स्वतंत्रता से पूर्व की सवाक फिल्मों तथा स्वातन्त्र्योत्तर सवाक फिल्मों का युग) एक उद्योग के रूप में भारतीय सिनेमा, भारतीय सिनेमा : यथार्थ या फैंटेसी, भारतीय सिनेमा में राजनीतिक परिप्रेक्ष्य, नायक की छवि, नारी की छवि, संगीत, उपलब्धियाँ।

स्थापत्य

प्रमुख स्थापत्य शैलियाँ – हड़प्पा सभ्यता, प्राचीन भारत (आवासीय, धार्मिक), मध्यकालीन भारत (भारतीय-इस्लामी, मुगल), औपनिवेशिक काल।

क्षेत्रीय स्थापत्य : – प्राचीन काल (स्तूप, गुफा स्थापत्य, मंदिर), मध्यकाल (पूर्वी,पश्चिमी-मध्य-दक्खन भारत, विजयनगर), औपनिवेशिक काल (राजाओं के भवन, ब्रिटिशकाल स्थापत्य)।

स्थापत्य के उपयोग आधारित प्रकार : – आवासीय, धार्मिक, आनुष्ठानिक, सामरिक, सार्वजनिक उपयोग।

मूर्तिकला : – मूर्तिकला : आकार और प्रकार, आरंभिक काल (हड़प्पा सभ्यता, मौर्य शुंग कुषाण काल) गुप्त काल, मध्य काल, दक्षिण भारतीय धारा।

पुरातत्त्व और पुरावशेष

पुरातात्विक स्थल-1 : – (पूर्व हड़प्पा और हड़प्पा), पुरातात्विक स्थल से तात्पर्य, हड़प्पा सभ्यता की खोज ओर नामकरण, भौगोलिक विस्तार, हड़प्पा सभ्यता का काल, आरंभिक हड़प्पा बस्तियाँ, परिपक्व हड़प्पा स्थल (शीर्तुघइ, सुतका गेंदर, मोहनजोदड़ों, हड़प्पा,कालिबंगन, बनवाली, लोथल), कुछ सामान्य विशेषताएं ।

पुरातात्विक स्थल-2 (उत्तर हड़प्पा) : – गांगेय सभ्यता के पुरातत्व का महत्त्व, मिट्टी के बर्तनों का महत्त्व, गंगा घाटी में मिट्टी के बर्तन 3000 वर्ष पूर्व उत्तर भारतीय भोज्य पदार्थ, छटी शताब्दी ई. पूर्व में उत्तरभारत के कुछ प्रमुख शह, मध्य भारत, दक्षिण भारत।

संग्रहालय और पुरावशेष : – संग्रहालय- एक ऐतिहासिक लेखा जोखा (पश्चिमी दुनिया, भारत) विकास के चरण, संग्रहालयों के प्रकार, भूमिका उत्तरदायित्व, संगटन, संग्रहालय के लिए वस्तुएं कैसे प्राप्त की जाती है। पुरावशेष, संग्रहालय और पर्यटन

हस्तशिल्प : निरंतरता और परिवर्तन

हस्तशिल्पों का बाजारीकरण : – वस्तु और बाजारीकरण, भारतीय हस्तशिल्प का इतिहास, पर्यटन अैर हस्तशिल्प : दो केस अध्ययन (अमेरिका, थाइलैंड), भारतीय हस्तशिल्पों का विपणन, हस्तशिल्प क्षेत्र की कमजोरियां।

मिट्टी, पत्थर, लकड़ी और धातु शिल्प : – मिट्टी के शिल्प और बर्तन, पत्थर से बनी वस्तुएं, लकड़ी के सामान, धातु शिल्प, कारीगर और शिल्पी।

हाथी दाँत,रत्न और आभूषण : – हाथी दाँत, रत्नऔर बहुमूल्य पत्थर, सोने-चाँदी का काम, गहने और आभूषण, अन्य शिल्प।

वस्त्र और परिधान : – भारत में वस्त्र उद्योगका इतिहास, वस्त्र प्रौद्योगिकी, भारतीय परिधान, वस्त्र नीति और भविष्य की संभावनाएं, वस्त्र परिधान और पर्यटन।

जनजातीय संस्कृति

अस्मिता निर्माण : – जनजाति क्या है, अस्मिता क्या है, अस्मिता के प्रकार, जनजातीय

अस्मिता का निर्माण, पर्यटनके लिए अस्मिता को समझने की आवश्यकता।

ऐतिहासिक और भौगोलिक विस्तार : सांस्कृतिक आयाम, भौगोलिक विस्तारः जनजातीय क्षेत्र (उत्तर और उत्तर पूर्वी, मध्य भारत, दक्षिण पश्चिमी छुटपुट जानजातियां), इतिहास, भाषा और जातीयता।

सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था :– जनजातीय समाज (सामाजिक संगठन, वैवाहिक संस्था, पारिवारिक ढांचा, महिलाओं की स्थिति, ग्रामीण संरचना), जनजातीय धर्म, जनजातीय अर्थ व्यवस्था।

जनजातियाँ और विकास सम्बंधी नीतियाँ : – जनजातीय विकास की योजना और कार्यक्रम : ब्रिटिश भारत, जनजातीय विकास की योजना और कार्यक्रम : स्वातंत्र्योत्तर भारत, सरकारी नीतियाँ : एक समीक्षा, पर्यटन और जनजातीय क्षेत्र।

संस्कृति संबंधी नीतिगत मुद्दे

सरकार : – पर्यटन, संस्कृति और राज्य, सरकारः नीति और नियोजन, पर्यटन नीति : संरक्षण और प्रोत्साहन, पर्यटक नीति : एक नई दृष्टि की जरूरत ।

व्यापार : – पुरातात्विक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल, कला ओर हस्तशिल्प , मंचात्मक कलाएं।

जनसंचार : – जनसंचार और उसके प्रकार, प्रभाव, भूमिका, जनसंचार, संस्कृति और पर्यटन, अभिभावक की भूमिका में जनसंचार।

UGTS-05
पारिस्थितिकीय, पर्यावरण और पर्यटन

हमारा पर्यावरण – एक परिचय

हमारा पर्यावरण –

अजैविक पर्यावरण, समय के साथ पर्यावरण में परिवर्तन,

प्रकृति में संयोजन

पारिस्थितिक तंत्र, पारिस्थितिक तंत्र के घटक, आहार शृंखला, आहार जाल एवं पोषण स्तर, अन्तर्सम्बन्ध और अन्योन्याश्रय, संयोजन, पर्यटन उद्योग का प्रकृति से सम्बन्ध करने का प्रबन्ध।

विश्व के जीवोम

विश्व के स्थलीय जीवोम, जलीय जीवोम, भारत में जीवोम,

प्रकृति में समुदाय

समुदाय की विशिष्टताएं, समुदाय की जातियों में अन्योन्यक्रियाएं, समुदाय के संगठन, जैव विविधता,

पर्यावरण और संरक्षण कर्तव्य बोध

संरक्षण का इतिहास

संरक्षण : परिभाषा, आधुनिक समय में संरक्षण का इतिहास, भारतीय दार्शनिक विचार, वर्तमान समय में संरक्षण का महत्व,

पर्यावरणीय मापदण्ड और पर्यटन

पारिस्थितिकी पर्यटन, पर्यावरण पर पर्यटन का प्रभाव, समाधान।

भारतीय दर्शन और पर्यावरण

प्रकृति की संकल्पना, मौलिक परम्पराओं में पर्यावरण, दार्शनिक ग्रन्थों में पर्यावरण, पर्यावरण और शास्त्रीय कला, दर्शन और संस्कृति : पर्यावरणीय अनुकूलन।

पर्यावरणीय समस्याएं एवं पर्यटन विकास

पर्यावरण और विकास

पर्यावरण, विकास, समस्यात्मक संबंध,

विकास की धारणाएँ

विकास में पर्यटन के स्थान का निर्धारण, परिरक्षण और विकास, संरक्षण और विकास, सहभागिता और विकास, टिकाऊ विकास,

उत्तरदायी पर्यटन लाभ

उत्तरदायी / वैकल्पिक पर्यटन, लाभ, समस्याएं, क्या प्रबल किये जा रहे हैं।

पर्यावरण और पर्यटन

पहुँच, अधिसंरचनात्मक सुविधा एवं भूमि उपयोग : मूल मुद्दे

पर्यटन के लिए योजना का महत्व,पर्यटन नियोजन : व्यापक संदर्भ, पर्यटन मास्टर प्लान, भौतिक योजना : पहाड़ी पर्यटन, भौतिक विकास : तटीय रिसार्ट।

समुदाय और आंचलिक सम्पदा

समुदाय का अर्थ, आंचलिक सम्पदा, तनाव, समुदाय और टिकाऊ पर्यटन,

गुणक प्रभाव : लाभ और परिणाम

गुणक प्रभाव, सकारात्मक सामाजिक आर्थिक लाभ, नकारात्मक प्रभाव, पर्यावरण पर प्रभाव, निजी अर्थव्यवस्था पर प्रदर्शन प्रभाव, लागत मुनाफा विश्लेषण ।

पर्यटन : संरक्षण के साधन के रूप में

व्यवहार और संभावना

व्यवहार और संभावना, भंगुरता, बचाव के मार्ग,

पर्यटन स्थल और स्थलीय योजना

पर्यटन योजना का महत्व, पर्यटन योजना, पर्यटक स्थल एवं संरक्षण,

असमान क्षेत्रीय /राष्ट्रीय योजना

क्षेत्रीय असंतुलन के कारण, संतुलित पर्यटन योजना, संतुलित विकास के लिए दिशा निर्देश,

विकल्प

पर्यटन में संरक्षण, विकल्प : कुछ उपाय,

नीति और ढाँचागत सुविधाएँ

पर्यटन नीति एवं उसके प्रभाव

एक नीति की ओर, योजना परिप्रेक्ष्य 1988, राष्ट्रीय कार्य योजना 1992, वित्तीयएवं आर्थिक प्रभाव, आवास एवं परिवहन पर प्रभाव, पर्यटकों और पर्यटन पर प्रभाव, प्रबन्धन एवं विपणन पर प्रभाव, विदेशी सहयोग

ढाँचागत सुविधा

पर्यटन ढांचागत सुविधाएँ, विशेष पर्यटन उत्पाद : पर्यटन ढाँचागत सुविधाओं के लिए नए आयाम, सम्मेलन पर्यटन, संकेन्द्रित विकास के लिए सर्केट्स/गन्तव्य/स्थान, कर्नाटक पर्यटन विकास का केस अध्ययन, स्थानीय समुदाय का दृष्टिकोण उड़ीसा और केरल, विकास से सीख, विकास के वैकल्पिक माडल,

पर्यावरण अपकर्ष एवं पर्यटन

प्रतिरोध, पर्यटन के प्रभावों का विश्लेषण, पर्यटन क्यों? पारिस्थितिकीय पर्यटन क्या है? संरक्षण एवं विकास,

अधिनियम एवं कानून

रीति रिवाज एवं परम्पराएं, राज्य के कानूनी एवं न्यायिक अधिकार, निजी क्षेत्र की कार्यप्रणाली की चिंताएं, सामाजिक एवं पर्यावरणीय न्याय के संघर्षरत समूहों द्वारा उठाई गई आवाज, अधिकार क्षेत्र, कमी,

पर्यावरण की राजनीति

किसका पर्यावरण, पर्यावरण की राजनीति : विकास के संदर्भ में, पर्यावरण की राजनीति : भारतीय संदर्भ, पर्यावरण की राजनीति एवं पर्यटन।

दबाव और न्यूनतम सीमारेखाएं

दबावों को पहचानना और न्यूनतम सीमारेखाओं को समझना

पर्यावरण पर दबाव, न्यूनतम पर्यावरणीय सीमारेखाएं, कुछ हल।

मेजबान/स्थानीय जनसमुदाय

स्थानीय लोगों के लिए अवसर, स्थानीय लोगों की भागीदारी, मेजबानों/स्थानीय लोगों पर दबाव, पर्यटन और संस्कृति,

पर्यटक का व्यवहार

आगंतुक की परिभाषा, भारत : पर्यटन स्थल और पर्यटक, पर्यटक व्यवहार और पर्यावरण, असंतुलन की रोकथाम,

पर्यावरण पर प्रभाव

वनस्पति एवं वन्यजीवन

जीव भौगोलिक प्रदेश और वन्यजीव, वन्यजीवन का महत्व, वन्यजीवन पर पर्यटन का प्रभाव

पहाड़

पहाड़ों के बारे में अवधारणाएं, हिल स्टेशनों का विकास, पहाड़ों में राजनीतिक घटनाओं का ऐतिहासिक कालक्रम, स्थानीय समुदायों का विस्थापन आमोद प्रमोद एवं पर्यावरण, पर्यावरणीय प्रभाव।

पर्यावरणीय प्रभाव-2

नमभूमि

नमभूमि क्या है? नमभूमि क्षेत्र का महत्व, भारतीय नमभूमि क्षेत्र, पर्यटन का प्रभाव, अत्यधिक पर्यटन और नमभूमि क्षेत्र, नमभूमि क्षेत्रों का संरक्षण,

द्वीप एवं समुद्री तट

पर्यटन और पर्यावरण, द्वीपों तथा समुद्री तटों का महत्व, द्वीपों का वर्गीकरण तथा निर्माण प्रक्रिया, द्वीप : भौगोलिक वितरण, समुद्री तट एवं उनकी निर्माण प्रक्रिया, समुद्री तट एवं उनका भौगोलिक वितरण, पर्यावरण को खतरा, समस्या का निराकरण।

खेलकूद रोमांचकारी, गोल्फ, जेलक्रीड़ा जलक्रीड़ा

खेल, रोमांचक खेल, गोल्फ, जलक्रीड़ा, पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को रोकने के उपाय।

होटल तथा रिसॉर्ट

अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के रूप में होटल व रिसॉर्ट, पर्यावरण ह्रास, बचाव के उपाय,

UGTS-06
पर्यटन विपणन

पर्यटन बाजार को समझना

पर्यटन विपणन का परिचय – दृष्टिकोण, प्रासंगिकता एवं भूमिका- विपणन : परिभाषा एवं अवधारणाएं, पर्यटन विपणन की अवधारणाएं पर्यटन विपणर की विशेषताएं, विपणन संगठन एवं प्रबंधकगण, विपणन योजना।

बाजार प्रखण्डन – प्रखण्डन सिद्धान्त, विभिन्न दृष्टिकोण, मुख्य परिवर्तनशील कारक अन्य निर्धारक कारक आदि।

पर्यटन बाजार – अन्तर्राष्ट्रीय और घरेलू-

विदेशी पर्यटन बाजार, स्थिति अध्ययन (केस स्टडी), अन्तरक्षेत्रीय, घरेलू (देशीय) बाजार,

विपणन विश्लेषण

विपणन अनुसंधान – विपणन अनुसंधान, अनुसंधान के क्षेत्र, सूचना का स्रोत, विपणन अनुसंधान का रूपांकन, बाजार सर्वेक्षण, प्रश्नावलियाँ एवं प्रपत्र, साक्षात्कार हेतु व्यक्ति, अर्थ निरूपण आदि।

प्रतियोगिता विश्लेषण और रणनीतियॉ –

प्रतियोगिता विश्लेषण, प्रत्यक्ष बनाम अप्रत्यक्ष प्रतियोगिता, एकाधिकारी एवं अल्पाधिकारी प्रतियोगिता, परिमाणात्मक एवं गुणात्मक विश्लेषण, रणनीतिक चयन, रणनीतिक चयन एवं प्रतियोगी।

पर्यटन एवं उनके उत्पादो का पूर्वानुमान – पूर्वानुमान की पद्धतियां, पर्यटन मे अनुप्रयोग आदि ।

पर्यटन विपणन मे प्रौद्योगिकी की भूमिका –

प्रौद्योगिकी के निहितार्थ, आरक्षण, सूचनाएं, अनुभव, संप्रेषण।

विपणन की विकासात्मक भूमिका

सार्वजनिक संगठनो की भूमिका –

पर्यटन विपणन, विकासात्मक भूमिका, सार्वजनिक संगठनों की भूमिका, मूल्यांकन।

स्थानीय निकायो की भूमिका – गंतव्य योजना, विपणन, भूमिका आदि।

गैर सरकारी संगठनो (एन.जी.ओ.) की भूमिका –

राजकीय ढांचा, सामाजिक परिवर्तन एवं गैर सरकारी संगठन, पर्यटन में गैर सरकारी संगठनों का हस्तक्षेप, पर्यटन जागरूकता में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका, गंतव्य स्थलों पर गैर सरकारी संगठनों की भूमिका।

सामाजिक उत्तरदायी विपणन –

विपणन, सामाजिक उत्तरदायी विपणन, सामाजिक उत्तरदायी विपणन का एक प्रारूप, प्रोत्साहन मिश्रण का महत्व, सामाजिक उत्तरदायी विपणन के प्रति कुछ आलोचनात्मक धारणाएं, उत्तरदायी पर्यटन में सम्मिलित संस्थाएं,

सामाजिक विपणन

उत्तरदायी विपणन में विपणन उपकरण, पर्यावरण के अनुकूल विपणन रणनीतियाँ, संरक्षण, पुर्नस्थापना, सांस्कृतिक विरासत संबंधित पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन।

विपणन मित्र

उत्पाद प्रारूप निर्माण –

उत्पाद की व्याख्या, उत्पाद का विकास, पर्यटन में उत्पाद कल्पना, उत्पाद अवस्थिति, उत्पाद जीवन चक्र,

कीमत सम्बन्धी रणनीतियॉ – मूल्य बोध, लागत बोध, कीमत निर्धारण के उददेश्य, छूट की नीतियॉ आदि।

प्रोत्साहन मूलक रणनीतियॉ – संचार के माध्यम से प्रोत्साहन, विज्ञापन, जनसम्पर्क, विकय प्रोत्साहन आदि।

वितरण सम्बन्धी रणनीतियॉ – परिभाषा, रणनीति, प्रणाली, पर्यटन, उद्योग मे मध्यवर्ती, प्रणालियों एवं मध्यवर्तियों का चयन,

पंचम पी : जनता, प्रक्रिया और भौतिक प्रमाण – जनता, प्रकिया और भौतिक प्रमाण, पंचम पी का आवश्यकता, पर्यटन उद्योग एवं जनता, पर्यटन उद्योग मे प्रकम, भौतिक प्रमाण, कुछ 'सी', विपणन रणनीति निरूपित करने में पंचम पी का उपयोग,

विपणन मित्र : विशेष परिस्थितियॉ

परिचय यात्राएं – उद्देश्य, आमंत्रित अतिथि, भागीदार, आयोजक और संगठन।

मौसमवार विपणन – पर्यटन मे मौसमीयता

पर्यटन मेले और यात्रा बाजार –

व्यापार मेले और ट्रैवल मार्ट, कुछ महत्वपूर्ण आयोजन, आलोचना, उत्सव।

पर्यटन स्थल विपणन

क्षेत्र शहर और विज्ञान स्थल –

मुद्दे, आलोचना, विकल्प, सम्पर्क सूत्र,

उत्सव गतिविधियॉ, व्यक्ति –

विपणन दृष्टिकोण, विपणन मिश्र,विपणन के वैकल्पिक दृष्टिकोण, उत्पादक के रूप में व्यक्ति।

खरीददारी शिक्षा और संस्कृति –

खरीददारी, शिक्षा, संस्कृति, वैकल्पिक दृष्टिकोण,

स्थानीय आहार का विपणन – भारत के विभिन्न व्यंजन, भोजन के विभिन्न स्थल, भोजनोत्सव आदि।

आवास विपणन

स्टार श्रेणी के होटल –

आवासीय विपणन, मांग स्तर और विपणन कार्य, चुनौतियॉ और समस्याएँ।

वैकल्पिक आवासीय व्यवस्था –

वैकल्पिक आवासीय व्यवस्था क्या है, वैकल्पिक आवासीय व्यवस्था के प्रकार, वैकल्पिक आवासीय व्यवस्था की निर्वहन क्षमता, विपणन आधार

अनुपूरक आवासीय व्यवस्था –

मॉटेल, यूथ हास्टल, टूरिस्ट कैम्प, रिटायरिंग रूम, पेइंग गेस्ट।

व्यापार मे तरल मेल –

संघटक, परस्पर निर्भरता, व्यापार संबंध, संयुक्त प्रचार, संयुक्त प्रयास

परिवहन और यात्रा सेवा विपणन

एयर लाइन्स विपणन –

एयर लाइन्स बाजार को समझना, विपणन नियोजन, विपणन प्रभावशीलता, समय सारणी, मूल्य निर्धारण, उत्पादन का वितरण, प्रचार मिश्र

पर्यटक परिवहन विपणन –

पर्यटक परिवहन बाजार, लक्ष्य बाजार, उत्पाद : निर्माण और विकास, गुणवत्ता और संचालन नियंत्रण, सहलग्नता, संवर्धन और विक्रय।

ट्रैवेल एजेन्सी विपणन –

ट्रेवेल एजेंसी उत्पाद, कमीशन और छूट, संवर्धन और विक्रय, प्रौद्योगिकी की भूमिका,

टूर आपरेटर विपणन –

टूर आपरेटर- एक नजर, बाजार विशलेषण, निर्णय लेने से जुड़े मुद्दे, उत्पाद निर्माण से जुड़े मुद्दे। वितरण और संवर्धन, प्रचार पुस्तिकाओं की भूमिका।

UGTS-07

बौद्ध धर्म का परिचय एवं प्रमुख बौद्ध तीर्थ केन्द्रो का विवरण

बौद्ध धर्म एक परिचय

बौद्ध धर्म का प्रारम्भिक इतिहास –

बौद्ध धर्म का प्रारम्भिक इतिहास, संक्षेपण करें, प्रगति अभ्यास की जाँच के लिए उत्तर।

बुद्ध का जीवन –

बुद्ध जीवन, संक्षेपण करें,

सम्बोधी अवस्था –

सम्बोधि अवस्था, संक्षेपण करें

बौद्ध धर्म एवं दर्शन

बौद्ध धर्म का उदभव एवं विकास –

बौद्ध धर्म का उदभव एवं विकास, बौद्ध धर्म का विकास, बौद्ध संगीजियाँ, संक्षेपण करें।

बुद्ध की शिक्षाएं –

बुद्ध की शिक्षाएं, पञ्चस्कन्धों के सिद्धान्त, अष्टांगिक मार्ग, निर्वाण, कर्म सिद्धान्त, अहिंसा, दर्शन, संक्षेपण करें।

बुद्धत्व प्राप्ति के बौद्ध मार्ग –

बुद्धत्व प्राप्ति हेतु बोधिसत्व की अवस्थायें, अर्हत, बोधिसत्व, पारमितायें, छह अभिज्ञायें,भूमियाँ, संक्षेपण करें।

बौद्ध धर्म एवं समाधि भावना –

बौद्ध समाधि, ब्रह्मविहार, संक्षेपण करें।

बौद्ध धर्म : स्वरूप, सम्प्रदाय एवं साहित्य

बौद्ध धर्म के सामान्य सम्प्रदाय-

वज्रमान, सहजयान, कालचकयान, आदि

हीनयान एवं महायान –

हीनयान, महायान, संक्षेपण करें।

बौद्ध साहित्य –

धर्मग्रन्थ संग्रह, अवदान, थेरवाद त्रिपिटक, धम्मपद, जातक, महायान साहित्य,

बौद्ध धर्म का भारत और विदेशो मे प्रसार

मौर्य काल में बौद्ध धर्म–

मौर्यकाल में बौद्ध धर्म,

शुंग सातवाहन काल मे बौद्ध धर्म –

शुंग सातवाहन काल में बौद्ध धर्म।

कुषाण काल मे बौद्ध धर्म–

गुप्त काल मे बौद्ध धर्म–

हर्षकाल मे बौद्ध धर्म–

हर्षवर्धन के काल में बौद्ध धर्म,

विदेशों मे बौद्ध धर्म का विस्तार–

विदेशों में बौद्धधर्म का विस्तार,

बौद्ध कला

वास्तु-शास्त्र

स्तूप, विहार, चैत्य

मूर्तिकला –

प्रतीक, चित्रकला

रंगचित्र –

रंगचित्र, निर्माण विधि, उपसंहार।

बौद्ध पूजा पद्धति –

बुद्ध पूजा, उपसंहार।

शिक्षा एवं संस्कृति को बौद्ध धर्म का योगदान

भारत में बौद्ध शिक्षा के केन्द्र एवं साहित्यिक विद्वान –

बौद्ध शिक्षा केन्द्र एवं साहित्यिक विद्वान, संक्षेपण करें।

प्रारम्भिक बौद्ध विहार –

महत्वपूर्ण बौद्ध पारिभाषिक शब्द एवं शब्दावलियॉ –

भारत मे बौद्ध स्थल

भारत मे महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल –

उत्तर प्रदेश मे बौद्ध स्थल –

भारत मे बौद्ध धर्म की अवनति

बौद्ध धर्म के पतन के कारण –

भारत मे बौद्ध धर्म का पुनरूद्धार –

वर्तमान भारत मे बौद्ध धर्म का प्रसार –

UGTS-08

उत्तर प्रदेश के महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थल : परिचय महत्त्व और वर्णन

हिन्दू, बौद्ध तथा जैन धर्म के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल

हिन्दू धर्म तथा महत्वपूर्ण धार्मिक स्थान –

हिन्दू धर्म के अन्य महत्वपूर्ण स्थल –

बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल –

जैन धर्म से सम्बन्धित स्थल –

परियोजना कार्य

सिख, ईसाई, और इस्लाम धर्मो के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल और लेखन परियोजना।

UGTS-10

उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल : परिचय, महत्व और वर्णन

हिन्दू बौद्ध तथा जैन धर्म के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल

हिन्दू धर्म तथा महत्वपूर्ण धार्मिक स्थान –

उत्तर प्रदेश में हिन्दू धर्म, हिन्दू धर्म के प्रमुख स्थल

हिन्दू धर्म के अन्य महत्वपूर्ण स्थल

हिन्दू धर्म के अन्य महत्वपूर्ण स्थल,

बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल

बौद्ध धर्म के प्रमुख स्थल,

जैन धर्म से सम्बद्ध स्थल –

सिख, ईसाई एवं इस्लाम धर्म के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल

सिख धर्म एवं ईसाई धर्म के धार्मिक महत्व के स्थान

उत्तर प्रदेश में सिख धर्म स्थल, ईसाई धर्म का परिचय, उत्तर प्रदेश के प्रमुख गिरजाघर,

इस्लाम धर्म से जुड़े महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल

इस्लाम का परिचय, उत्तर प्रदेश की प्रमुख मस्जिदें, सूफीमत, उत्तर प्रदेश में सूफीमत से सम्बद्ध प्रमुख स्थल,

परियोजना कार्य

उत्तर प्रदेश के मुख्य धार्मिक स्थल परिचय, महत्व और वर्णन